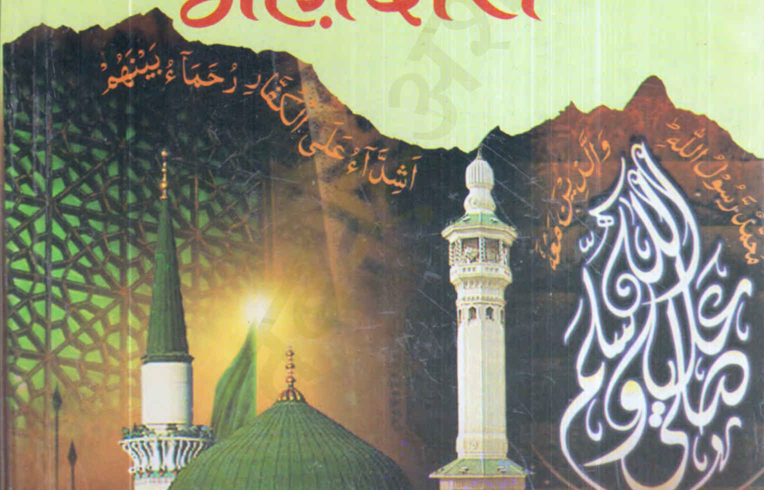
दावत व तब्लीग़ के छः सिफ़ात से मुतअ़ल्लिक़

मुन्तख़ब अहा़दीस



तालीफ़
हज़रत मौलाना युसूफ़ कान्धल्वी (रह0)
तर्तीब व तर्जुमा
हज़रत मौलाना सअ़द कान्धल्वी (रह0)

इस किताब में ग़लतियों को ठीक किया गया है और
कुछ जगहों पर ज़रूरी वज़ाहत की गई है।

मुन्तख़ब अहादीस

Muntakhab Ahadees

तालीफ़

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कान्धलवी (रह०)

तर्तीब व तर्जुमा

हज़रत मौलाना मुहम्मद सअ़द कान्धलवी

प्रकाशन : 2009 ई०

प्रकाशकः

ATEQAD PUBLISHING HOUSE Pvt. Ltd.
3095, Sir Syed Ahmed Road, Darya Ganj, New Delhi 2
Ph.: 011-42797863, 23266879 Fax: 23256661
Website : www.ateqad.com e-mail:info@ateqad.com

Printed by: **Classic Printers**

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

कलिमा तैयिबा

नमाज़

इल्म व ज़िक्र

ज़िक्र

इकरामे मुस्लिम

इख़्लासे नीयत यानी तस्हीह नीयत

दावत व तबलीग़

लायानी से बचना

मुक़द्दमा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَخَاتَمِ النَّبِیِّیْنَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ اَجْمَعِیْنَ وَمَنْ تَبِعَھُمْ بِاِحْسَانٍ وَّدَعَا بِدَعْوَتِھِمْ اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِ اَمَّا بَعْدُ !

यह एक हक़ीकत है जिस को बिला किसी तौरिया व तमल्लुक़ के कहा जाता है कि इस वक़्त आलमे इस्लाम की वसीतरीन, क़वीतरीन और मुफ़ीद तरीन दावत तबलीग़ी ज़माअत की दावत है, जिसका मर्कज़, मर्कज़े तबलीग़ निज़ामुद्दीन देहली है,[1] जिस का दायरा-ए-अमल व असर सिर्फ़ बर्रेसग़ीर नहीं और सिर्फ़ एशिया भी नहीं, मुतअद्दिद बर्रे आज़म और मुमालिके इस्लामिया व ग़ैरइस्लामिया हैं।

दावतों और तहरीकों और इन्क़लाबी व इस्लाही कोशिशों की तारीख़ बतलाती है कि जब किसी दावत व तहरीक पर कुछ ज़माना गुज़र जाता है, या उसका दायरा अमल वसीअ् से वसीअ्तर हो जाता है (और ख़ास तौर पर जब उसके ज़रीया नुफ़ूज़ व असर और क़यादत के मानाफ़ेअ् नज़र आने लगते हैं) तो उस दावत व तहरीक में बहुत-सी ऐसी ख़ामियाँ, ग़लत मक़ासिद और असल मक़सद से तग़ाफ़ुल शामिल हो जाता है, जो उस दावत की इफ़ादियत व तासीर को कम या बिल्कुल मअ्दूम कर देता है। लेकिन यह तबलीग़ी दावत अभी तक (जहाँ तक राक़िम के इल्म व मुशाहिदा का तअ़ल्लुक़ है) बड़े पैमाने पर इन आज़माइशों से महफ़ूज़ है। इस में ईसार व क़ुर्बानी का जज़्बा, रज़ा–ए–इलाही की तलब और हुसूले सवाब का शौक़, इस्लाम और मुसलमानों का इहतराम व एतराफ़, तवाज़ुअ् व इन्किसारे नफ़्स, फ़राइज़ की अदायगी का इहतिमाम और उस में तरक़्क़ी का शौक़, यादे इलाही और ज़िक्रे ख़ुदावन्दी की मशग़ूलियत, ग़ैरमुफ़ीद और ग़ैर ज़रूरी मशाग़िल व आमाल से इम्कानी हद तक एहतराज़ और हुसूले मक़सद व रज़ा–ए–इलाही के लिए तवील-से-तवील सफ़र अख़्तियार करना और मशक़्क़त बर्दाशत करना शमिल और मामूल बिहि है।

---

1. इस इज़्हार व इस्बात में दूसरी मुफ़ीद व ज़रूरी दावतों और तहरीकों, हक़ाइक़ और ज़रूरीयाते ज़माने से आगाही और वक़्त के फ़ित्नों से मुक़ाबले की सलाहियत पैदा करने वाली मसाई और तन्ज़ीमों की नफ़ी या तहक़ीर मक़सूद नहीं है। तबलीग़ी दावत व तहरीक की वुस्अत व इफ़ादियत का ईजाबी अन्दाज में इज़्हार व इक़रार है।

जमाअ़त की यह ख़ुसूसीयत और इम्तियाज़ दाई-ए अव्वल के इख़्लास इनाबत इलल्लाह, उस की दुआओं, जिद्द-व जुहद व क़ुर्बानी और सब से बढ़ कर अल्लाह तआ़ला की रज़ा व क़ुबूलियत के बाद उन उसूल व ज़वाबित का भी नतीजा है, जो शुरू से उसके दाई-ए-अव्वल (हज़रत मौलाना इलयास काँधलवी रहमतुल्लाह अ़लैह) ने इसके लिए ज़रूरी क़रार दिए और जिन की हमेशा तलक़ीन व तबलीग़ की गई वह कलिमा–ए–तैयिबा के मानी व ताक़ाज़ों पर ग़ौर, फ़राइज़ व इबादात के फ़ज़ाइल का इल्म, इल्म व ज़िक्र की फ़ज़ीलत का इस्तिहज़ार, ज़िक्रे ख़ुदावन्दी में मश्ग़ूलियत, इकरामे मुस्लिम और मुसलमान के हक़ की शनासाई व अदायगी, हर अ़मल में तस्हीहे नीयत व इख़्लास, तर्केमा लायानी अल्लाह के रास्ते में निकलने और सफ़र करने के फ़ज़ाइल व तर्ग़ीबात का इस्तिहज़ार और शौक़–यह वह अ़नासिर और ख़साइस थे, जिन्होंने इस दावत को एक सियासी, माद्दी तहरीक और इस्तिहसाले फ़वाइद, हुसूले जाह व मन्सब का ज़रिया बनने से महफ़ूज़ फ़रमा दिया और वह एक ख़ालिस दीनी दावत और हुसूले रज़ा–ए–इलाही का ज़रीया रही ।

यह उसूल व अ़नासिर जो इस दावत व जमाअ़त के लिए ज़रूरी क़रार दिये गये, किताब व सुन्नत से माख़ूज़ हैं, और वह रज़ा–ए–इलाही के हुसूल व दीन की हिफ़ाज़त के लिए एक पासबान व मुहाफ़िज़ का दर्जा रखते हैं, इन सब के मआख़ज़ किताबे इलाही और सुन्नत व अहादीसे नब्वी हैं।

ज़रूरत थी कि एक मुस्तक़िल व अ़लैहिदा किताब में इन आयात व अहादीस व मआख़ज़ को जमा कर दिया जाता, ख़ुदा का शुक्र है कि इस दावत इललख़ैर के दाई -ए-सानी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब (ख़ल्फ़े रशीद दाई-ए-अव्वल हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रहमतुल्लाह अ़लैह) ने जिन की नज़र कुतुबे हदीस पर बहुत वसीअ़ और गहरी थी इन उसूलों, ज़वाबित व इहतियातों के मआख़ज़ को एक किताब में जमा कर दिया, और इस में पूरे इस्तीआ़ब व इस्तिक़सा से काम लिया, यहाँ तक कि यह किताब उन उसूलों व ज़वाबित और हिदायात के मआख़ज़ का मजमूआ़ नहीं बल्कि मौसूअ़:[1] बन गई जिस में बिला इन्तिख़ाब व इख़्तिसार उन सब का अ़ला इख़्तिलाफ़िद्दरजात ज़िक्र कर दिया गया है, यह भी तक़दीर और

(1) जदीद अ़रबी में दायरतुलमआ़रिफ़ को मौसूअ़: भी कहते हैं जिस में हर चीज़ का तआ़रुफ़ और तशरीह होती है।

तौफ़ीक़े इलाही की बात है कि अब यह किताब उन के हफ़ीदे[1] सईद अ़ज़ीज़ुलक़द्र मौलवी सअ़्द साहब 'अतालल्लाहु बक़ाअहु व वफ़्फ़क़हु लिअकसर मिन ज़ालिक' की तवज्जुह व इहतिमाम से शाय हो रही है, और इस का इफ़ादा आ़म हो रहा है। अल्लाह तआ़ला इन के अ़मल व ख़िदमत को क़ुबूल फ़रमाए और ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए । وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ۔

अबुल हसन अ़ली नदवी
दाइरा शाह इलमुल्लाह
रायबरेली 20 ज़ीक़ादः 1418 हि०

(1) नबीरा यानी फ़रज़न्दे दुख़्तर

अ़र्ज़े मुतर्जिम

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है :

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ۔

[آل عمران : ١٦٤]

तर्जुमा :

हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों पर बड़ा एहसान फ़रमाया है जब कि उनही में से, उनमें एक ऐसा (अज़ीमुश्शान) रसूल भेजा कि (इन्सानों में से होने की वजह से उनके आ़ली सिफ़ात से लोग बेतकल्लुफ़ फ़ायदा उठाते हैं) वह रसूल उन को अल्लाह तआ़ला की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं (आयाते क़ुरआनिया के ज़रिये उनको दावत देते हैं, नसीहत करते हैं) उनके अख़लाक़ बनाते और सवाँरते हैं, और अल्लाह तआ़ला की किताब और अपनी सुन्नत और तरीक़े की तालीम देते हैं, बिलाशुबहा इन रसूल की तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल यह लोग खुली गुमराही में मुब्तला थे। (आले इमरान)

दर्जबाला आयत के ज़ैल में और इस मौज़ूअ़ पर हज़रत मौलाना सैयद सुलैमान नदवी रहमतुल्लाह अ़लैह ने "हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास रहमतुल्लाह अ़लैह और उनकी दीनी दावत" के मुक़द्दमे में तहरीर फ़रमाया है कि रसूले करीम अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीम को कारे नुबुव्वत के यह फ़राइज़ अ़ता हुए हैं, तिलावते क़ुरआने करीम और अहादीसे सहीहा के नुसूस से यह साबित है कि ख़ातिमुन्नबीयीन ﷺ की उम्मत अपने नबी के इत्तिबाअ़ में उममे आ़लम की तरफ़ मबऊस है। हक़ तआ़ला शानुहू का इर्शाद है :

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ۔

(آل عمران: ١١٠)

तर्जुमा :

"ऐ मुसलमानो! तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए ज़ाहिर की गई, अच्छे कामों को बताते हो और बुरे कामों से रोकते हो"।

उम्मते मुस्लिमा फ़राइज़े नुबुव्वत में से दावत ख़ैर और अम्र बिल्मारूफ़ और नही अनिलमुन्कर में नबी की जानशीन है। इसलिए रसूले करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम को कारे नुबुव्वत के जो फ़राइज़ अता हुए हैं, तिलावते आयात के ज़रीये दावत, तज़किय: और तालीमे किताब व हिकमत, यह आमाल उम्मते मुस्लिम: के भी ज़िम्मे आ गये, चुनाँचे रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी उम्मत को दावत, तालीम व तअल्लुम, ज़िक्र व इबादत पर जान व माल ख़र्च करने वाला बनाया। इन आमाल को दूसरे अशग़ाल पर तरजीह की गई और हर हाल में इन आमाल की मश्क़ कराई गई इन आमाल में इन्हिमाक के साथ तकालीफ़ और शदाइद पर सब्र सिखाया गया; दूसरों को नफ़ा पहुँचने के लिऐ अपना जान व माल लगाने वाला बनाया गया और "वजाहिदू फ़िल्लाहि हक़्-क जिहादिः" "और अल्लाह तआला के दीन के लिए मेहनत और कोशिश किया करो जैसा मेहनत करने का हक़ है", की तामील में नबियों वाले मिज़ाज पर रियाज़त व मुजाहिदा और क़ुर्बानी व ईसार के वह नक़्शे तैयार हुए जिन में उम्मत का आला तरीन मजमूअः वुजूद में आया, जिस दौर में नबी-ए-करीम ﷺ वाले यह आमाल मजमूई तौर पर उमूमे उम्मत में ज़िन्दा रहे उस दौर के लिये ख़ैरुलक़ुरून की शहादत दी गई।

फिर क़रनन बाद क़र्निन ख़वास ने यानी अकाबिरे उम्मत ने इन नब्वी फ़राइज़ की अदायगी में पूरी तवज्जुह और कोशिश मबज़ूल फ़रमाई और उन्हीं के मुजाहिदात का नूर है, जिससे काशाना-ए-इस्लाम में रौशनी है।

इस दौर में अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने हजरत मौलाना मुहम्मद इलयास रहमतुल्लाह अलैह के दिल में दीन के मिटने पर सोज़ व फ़िक्र व बेचैनी और उम्मत के लिए दर्द-कुढ़न और ग़म इस दर्जे में भर दिया था, जो उनके वक़्त के अकाबिर की नज़र में अपनी मिसाल आप था। वह हर वक़्त جَمِيْعَ مَا جَاءَ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ नबी-ए- करीम ﷺ जो तरीक़े अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से लाये हैं उन सब को सारे आलम में ज़िन्दा करने के लिए मुज़तरिब रहते थे और वह इस बात के पूरे जज़्म के साथ दाई थे कि इह्या-ए- दीन के लिए जिद्द व जुहद में रसूलुल्लाह ﷺ का तरीक़ा

ज़िन्दा हो। ऐसे दाई तैयार हों जो अपने इल्म व अ़मल, फ़िक्र व नज़र तरीक़े दावत और ज़ौक़ व हाल में अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम और ख़ुसूसन मुहम्मद ﷺ से ख़ास मुनास्बत रखते हों। सिहते ईमान और ज़ाहिरी अ़मले सालेह के साथ उन के बातिनी अहवाल भी मिनहाजे नुबुव्वत पर हों, मुहब्बते इलाही, ख़शिय्यते इलाही, तअ़ल्लुक़ मअ़ल्लाह की कैफ़ियत हो, अख़्लाक़ व आदात व शमाइल में इत्तिबाअ़् सुनने नब्वी का इहतमाम हो। हुब्बु लिल्लाह, बुग्ज़ु लिल्लाह, राफ़त व रहमत बिलमुस्लिमीन और शफ़क़त अ़लल्ख़ल्क़ उनकी दावत का मुहर्रिक हो, और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के बार-बार दुहराए हुए उसूल के मुताबिक़ सिवाए अज्र इलाही की तलब के कोई मक़सूद न हो, अल्लाह तआ़ला की राह में जान व माल बेक़ीमत करने का शौक़ उन्हें खींचे-खींचे लिये फिरता हो और जाह व मन्सब, माल व दौलत, इज़्ज़त व शुहरत नाम व नुमूद और ज़ाती आराम व आसाइश का कोइ ख़्याल राह में मोनअ़् न हो, उनका बैठना, उठना, बोलना, चालना ग़रज़ उन की जिन्दगी की हर जुंबिश व हरकत उसी एक सम्त में सिमट कर रह जाये।

जिह्द व जुह्द में रसूलुल्लाह ﷺ का तरीक़ा ज़िन्दा करने और ज़िन्दग़ी के तमाम शुअ़बों को अल्लाह जल्ल ल शानुहू के अवामिर और नबी-ए-करीम ﷺ के तरीक़े पर लाने और काम करने वालों में यह सिफ़ात पैदा करने के लिए छः नम्बर मुक़र्रर किये गए, उस वक़्त के अहले हक़ उ़लमा व मशाइख़ ने ताईद फ़रमाई, उन के फ़र्ज़न्दे रशीद हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रहमतुल्लाह अ़लैह ने अपनी दाईयाना व मुजाहिदाना जिन्दगी इस काम को इसी नहज पर बढ़ाने और इन सिफ़ात के हामिल मजमा को तैयार करने की कोशिश में खपा दी, इन आ़ली सिफ़ात के बारे में हदीस, सीरत और तारीख़ की मुअ़तबर कुतुब से रसूलुल्लाह ﷺ और सहाबा-ए-कराम ﷺ की ज़िन्दगी के वाक़िआत नमूने के तौर पर "हयातुस्सहाबा" की तीन जिल्दों में जमा किए। यह किताब उन की हयात ही में बहम्दुल्लिाह शाय हो गई।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रहमतुल्लाह अ़लैह ने इन सिफ़ात (छः नम्बरों) के बारे में मुन्तख़ब अहादीसे पाक का मजमूआ़ भी तैयार कर लिया था, लेकिन उनकी तर्तीब व तकमील के आख़िरी मराहिल से क़बल ही वह इस आ़लमे फ़ानी से आ़लमे जाविदानी की तरफ़ रिहलत फ़रमा गये। انا لله وانا اليه راجعون मुतअ़द्दिद ख़ुद्दाम व रूफ़क़ा से हज़रत रहमतुल्लाह ने इस मजमूए की तैयारी का ज़िक्र फ़रमाया और इस पर हज़रत रहमतुल्लाह अ़लैह, अल्लाह जल्ल ल शानुहू के शुक्र का और अपनी ख़ुशी

का इज़्हार फ़रमाते रहे। अल्लाह तआ़ला ही जानता है कि उन के दिल में क्या-क्या अज़ाइम थे और उस के हर-हर रंग को वह किस तरह उजागर कर के दिलनशीन करते, अल्लाह तआ़ला के यहाँ इसी तरह मुक़द्दर था, अब वह 'मुन्तख़ब अहादीस' का मजमूआ़ हिन्दी तर्जुमे के साथ पेश किया जा रहा है।

इस किताब के तर्जुमे में आसान, आम फ़हम ज़बान इख़्तियार करने की कोशिश की गई है। हदीस के मफ़हूम की वज़ाहत के लिए बाज़ मक़ामात पर क़ौसैन की इबारत और फ़ायदे को इख़्तिसार के साथ तहरीर करने की सई की गई है। चूँकि मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रहमतुल्लाह अ़लैह को अपनी किताब के मुसव्विदः पर नज़रे सानी का मौक़ा नहीं मिला था इसलिए इसमें काफ़ी मेहनत करनी पड़ी जिसमें मतने हदीस की दुरुस्तगी, रिवायते हदीस की जिरह व तअ़्दीले हदीस की तस्हीह व तहसीन, व तज़ईफ़, शरह ग़रीबुलहदीस वग़ैरह भी शामिल है।

इस तमाम काम में बक़द्रे इस्तिताअ़त एहतियात को मलहूज़ रख गया है और उलमा-ए-कराम की एक जमाअ़त ने इस काम में भरपूर इयानत फ़रमाई है। अल्लाह जल्ल ल शानुहू उनको बेहतरीन जज़ाये ख़ैर अ़ता फ़रमाये, बशरी लग़ज़िशें मुम्किन हैं हज़राते उलमा से दरख़्वास्त है कि जो चीज़ इस्लाह के लिए ज़रूरी ख़्याल फ़रमायें उससे मुत्तलअ़् फ़रमाएँ।

यह मजमूआ़ जिस मक़सद के लिए हज़रत जी रहमतुल्लाह अ़लैह ने मुरत्तब फ़रमाया था और उसकी अहमियत को जिस तरह हज़रत मौलाना सैय्यद अ़बुल हसन अ़ली नदवी रहमतुल्लाह ने वाज़ेह फ़रमाया उस का तक़ाज़ा यह है कि इसको हर क़िस्म की तर्मीम और इख़्तिसार से महफ़ूज़ रखा जाए।

हक़ तआ़ला जल्ल ल शानुहू ने जिन आ़ली उलूम की तबलीग़ व इशाअ़त के लिए हज़रात अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलातु वत्तस्लीम को ज़रिया बनाया उन उलूम से पूरा फ़ायदा उठाने के लिए ज़रूरी है कि उस इल्म के मुताबिक़ यक़ीन बनाया जाए। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के आ़ली फ़रमान को पढ़ते और सुनते वक़्त अपने आप को कुछ न जानने वाला समझा जाए। यानी इन्सानी मुशाहिदा पर से यक़ीन हटाया जाए और ग़ैब की ख़बरों पर यक़ीन लाया जाए। जो कुछ पढ़ा और सुना जाए उसे दिल से सच्चा माना जाए। जब क़ुरआने करीम पढ़ने या सुनने बैठा जाए तो यूँ समझा जाए अल्लाह तआ़ला मुझसे मुख़ातब हैं, और जब हदीस शरीफ़

पढ़ने या सुनने बैठ जाए तो यूँ समझा जाए कि रसूलुल्लाह ﷺ मुझसे मुख़ातब हैं, कलाम को पढ़ते और सुनते वक़्त साहिबे कलाम की अ़ज़मत जितनी तारी होगी और उस कलाम की तरफ़ जितनी तवज्जोह होगी उसी क़दर कलाम का असर ज़्यादा होगा। क़ुरआन करीम में अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह ﷺ से इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ﴾

तर्जुमा :

और जब यह लोग इस किताब को सुनते हैं जो रसूलुल्लाह ﷺ पर नाज़िल हुई है तो (क़ुरआन करीम के तअस्सुर से) आप उनकी आँखों को आँसूओं से बहता हुआ देखते हैं, इसकी वजह यह है कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया।

दूसरी जगह अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया :

﴿فَبَشِّرْ عِبَادِ ۝ الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝﴾ (الزمر : ١٧-١٨)

तर्जुमा :

आप मेरे उन बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए जो इस कलामे इलाही को कान लगा कर सुनते हैं फिर उसकी अच्छी बातों पर अ़मल करते हैं यही लोग हैं जिन को अल्लाह तआ़ला ने हिदायत दी है और यही अ़क़्ल वाले हैं। (ज़ुमर)

एक हदीस में रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : إِذَا قَضَى اللهُ الْأَمْرَ فِي السَّمَاءِ ضَرَبَتِ الْمَلَائِكَةُ بِأَجْنِحَتِهَا خُضْعَانًا لِقَوْلِهِ، كَأَنَّهُ سِلْسِلَةٌ عَلَى صَفْوَانٍ فَإِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ، قَالُوا: مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟ قَالُوا: الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ (رواه البخاري)

हज़रत अबूहुरैरा ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआ़ला आसमान में कोई हुक्म नाफ़िज़ फ़रमाते हैं तो फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला के इस हुक्म के रोअ़्ब व हैबत की वजह से काँप उठते हैं और अपने परों को हिलाने लगते हैं और फ़रिश्तों को अल्लाह तआ़ला का इर्शाद इस तरह सुनाई देता

है जैसे चिकने पत्थर पर ज़ंजीर मारने की आवाज़ होती है, फिर जब उनसे घबराहट दूर कर दी जाती है तो एक दूसरे से दरयाफ़्त करते हैं कि तुम्हारे परवर्दिगार ने क्या हुक्म दिया? वह कहते हैं कि हक़ बात का हुक्म फ़रमाया और वाक़ई वह आलीशान है, सब से बड़ा है (यूँ जब फ़रिश्तों पर हुक्म वाज़ेह हो जाता है तो वह उसकी तामील में लग जाते हैं।)

एक दूसरी हदीस में इर्शाद है :

عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ : اَنَّهُ كَانَ اِذَ تَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ اَعَادَهَا ثَلاثًا حَتّٰى تُفْهَمَ (رواه البخاری)

हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी-ए-अकरम ﷺ जब कोई अहम बात इर्शाद फ़रमाते तो उस को तीन मर्तबा दोहराते ताकि उसको समझ लिया जाए। इसलिए मुनासिब है कि हदीसे पाक को तीन मर्तबा पढ़ा जाए या सुनाया जाए। ध्यान, मुहब्बत और अदब के साथ पढ़ने और सुनने की मश्क़ हो। बातें न की जाएँ। बावुज़ू दो ज़ानू बैठने की कोशिश हो, सहारा न लगाया जाए। नफ़्स के मुजाहिदे के साथ उस इल्म में मशग़ूल हों। मक़सद यह है कि दिल क़ुरआन व हदीस से असर लेने लग जाए। अल्लाह तआला और उन के रसूल ﷺ के वादों का यक़ीन पैदा होकर दीन की ऐसी तलब पैदा हो कि हर अमल में रसूलुल्लाह ﷺ का तरीक़ा और मसायल उलमा हज़रात से मालूम कर के अमल करने वाले बनते चले जाएँ।

अब इस किताब की इब्तिदा उस ख़ुत्बे के इब्तिदाई हिस्से से की जाती है जो हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब "امانی الاحبار شرح معانی الآثار" के लिए तहरीर फ़रमाया था।

मुहम्मद सअ़्द कान्धलवी
मदरसा काशिफ़ुल उलूम
बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, नई दिल्ली

8/जमादियुलऊला 1421 हि०
मुताबिक़ 7/ सितम्बर 2000 ई०

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ الْاِنْسَانَ لِیُفِیْضَ عَلَیْهِ النِّعَمَ الَّتِیْ لَا یُفْنِیْهَا مُرُوْرُ الزَّمَانِ مِنْ خَزَائِنِهِ الَّتِیْ لَا تَنْقُصُهَا الْعَطَایَا وَلَا تَبْلُغُهَا الْاَذْهَانُ وَاَوْدَعَ فِیْهِ الْجَوَاهِرَ الْمَكْنُوْنَةَ الَّتِیْ بِاتِّصَافِهَا یَسْتَفِیْدُ مِنْ خَزَائِنِ الرَّحْمٰنِ وَیَفُوْزُبِهَا اَبَدَ الْآبَادِ فِیْ دَارِ الْجِنَانِ۔ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْاَنْبِیَاءِ وَالْمُرْسَلِیْنَ الَّذِیْ اُعْطِیَ بِشَفَاعَةِ الْمُذْنِبِیْنَ وَاُرْسِلَ رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ وَاصْطَفَاهُ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰی بِالسِّیَادَةِ وَالرِّسَالَةِ قَبْلَ خَلْقِ اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ وَاجْتَبَاهُ لِتَشْرِیْحِ مَا عِنْدَهُ مِنَ الْعَطَایَا وَالنِّعَمِ فِیْ خَزَائِنِهِ الَّتِیْ لَا تُعَدُّ وَلَا تُحْصٰی وَكَشَفَ مِنْ ذَاتِهِ الْعَلِیَّةِ عَلَیْهِ مَالَمْ یَكْشِفْ عَلٰی اَحَدٍ وَمِنْ صِفَاتِهِ الْجَلِیْلَةِ الَّتِیْ لَمْ یَطَّلِعْ عَلَیْهَا اَحَدٌ لَا مَلَكٌ مُقَرَّبٌ وَلَانَبِیٌّ مُرْسَلٌ وَشَرَحَ صَدْرَهُ الْمُبَارَكَ لِاِدْرَاكِ مَااُوْدِعَ فِی الْاِنْسَانِ مِنَ الْاِسْتِعْدَادَاتِ الَّتِیْ بِهَا یَتَقَرَّبُ الْعِبَادُ اِلَی اللّٰهِ تَعَالٰی حَقَّ التَّقَرُّبِ وَیَسْتَعِیْنُهُ فِیْ اُمُوْرِ دُنْیَاهُ وَآخِرَتِهٖ وَعَلَّمَهُ طُرُقَ تَصْحِیْحِ الْاَعْمَالِ الَّتِیْ تَصْدُرُ مِنَ الْاِنْسَانِ فِیْ كُلِّ حِیْنٍ وَآنٍ فَبِصِحَّتِهَا یَنَالُ الْفَوْزَ فِی الدَّارَیْنِ وَبِفَسَادِهَا الْحِرْمَانَ وَالْخُسْرَانَ وَرَضِیَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ عَنِ الصَّحَابَةِ الْكِرَامِ الَّذِیْنَ اَخَذُوْا عَنِ النَّبِیِّ الْاَطْهَرِ الْاَكْرَمِ ﷺ الْعُلُوْمَ الَّتِیْ صَدَرَتْ مِنْ مِشْكٰوةِ نُبُوَّتِهٖ فِیْ كُلِّ حِیْنٍ اَكْثَرَ مِنْ اَوْرَاقِ الْاَشْجَارِ وَعَدَدَ قَطْرِ الْاَمْطَارِ فَاَخَذُوا الْعُلُوْمَ بِاَسْرِهَا وَكَمَالِهَا فَوَعَوْهَا وَحَفِظُوْهَا حَقَّ الْوَعْیِ وَالْحِفْظِ وَصَحِبُوا النَّبِیَّ ﷺ فِی السَّفَرِ وَالْحَضَرِ وَشَهِدُوْا مَعَهُ الدَّعْوَةَ وَالْجِهَادَ وَالْعِبَادَاتِ وَالْمُعَامَلَاتِ وَالْمُعَاشَرَاتِ فَتَعَلَّمُوا الْاَعْمَالَ عَلٰی طَرِیْقَتِهٖ بِالْمُصَاحَبَةِ فَهَنِیْئًا لَهُمْ حَیْثُ اَخَذُوا الْعُلُوْمَ عَنْهُ بِالْمُشَافَهَةِ الْعَمَلِ بِهَا بِلَا وَاسِطَةٍ ثُمَّ لَمْ یَقْتَصِرُوْا عَلٰی نُفُوْسِهِمُ الْقُدْسِیَّةِ بَلْ قَامُوْا وَبَلَّغُوْا كُلَّ مَاوَعَوْهُ وَحَفِظُوْهُ مِنَ الْعُلُوْمِ وَالْاَعْمَالِ حَتّٰی مَلَاُوا الْعَالَمَ بِالْعُلُوْمِ الرَّبَّانِیَّةِ وَالْاَعْمَالِ الرُّوْحَانِیَّةِ الْمُصْطَفَوِیَّةِ فَصَارَ الْعَالَمُ دَارَالْعِلْمِ وَالْعُلَمَاءِ وَالْاِنْسَانُ مَنْبَعَ النُّوْرِ وَالْهِدَایَةِ وَمَصْدَرَ الْعِبَادَةِ وَالْخِلَافَةِ۔

तर्जुमा :

तमाम तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ाते आली के लिए हैं, जिसने इन्सान को पैदा किया ताकि इन्सान पर अपनी वह नेमतें जो ज़माने के गुजरने से ख़त्म नहीं होती; लुटाये। वह नेमतें ऐसे ख़ज़ानों में हैं। जो कि अता करने से घटते नहीं और जिन तक इन्सान के ज़ेहनों की रसाई नहीं। अल्लाह तआला ने इन्सान के अन्दर सलाहियतों के ऐसे जौहर छिपा रखे हैं जिन को बरूयेकार लाकर इन्सान, रहमान के ख़ज़ानों से फ़ायदा उठा सकता है। और वह उन्हीं सलाहियतों से हमेशा हमेशा की जन्नत में रहने की सआदत भी हासिल कर सकता है।

अल्लाह की रहमत व दुरूद व सलाम हो मुहम्मद ﷺ पर, जो तमाम नबियों और रसूलों के सरदार हैं, जिन को गुनाहगारों की शफ़ाअत करने का एजाज़ दिया गया है, जिनको तमाम जहाँ वालों के लिए रहमत बना कर भेजा गया; जिन को अल्लाह तआला ने लौहे महफ़ूज़ और क़लम बनाने से पहले तमाम नबियों और रसूलों की सरदारी और बन्दों तक अपना पैग़ाम पहुँचाने का शर्फ़ अता करने के लिए चुना और जिन का इन्तिख़ाब अल्लाह तआला ने इसलिए किया वह अल्लाह तआला के लामहदूद ख़ज़ानों में जो नेमतें हैं, उनकी तफ़सील ब्यान करें और उनको अपनी ज़ाते आली के वह उलूम व मआरिफ़ अता किये, जो अब तक किसी पर नहीं खोले थे और अपनी जलीलुलक़द्र सिफ़ात उन पर मुनकशिफ़ फ़रमाये जिनको कोई नहीं जानता था; न कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता न कोई नबी मुरसल, और उनके सीने मुबारक को उन सलाहियतों के इदराक के लिए खोल दिया जो अल्लाह तआला ने इन्सान में वदीअत फ़रमाई हैं जिन फ़ितरी सलाहियतों से बन्दे अल्लाह तआला का क़ुर्ब हासिल करते हैं उन सलाहियतों से बन्दे अपनी दुनिया व आख़िरत के उमूर में मदद हासिल करते हैं। और अल्लाह तआला ने आप ﷺ को इन्सान से हर लम्हे सादिर होने वाले आमाल की दुरस्तगी के तरीक़ों का इल्म दिया क्योंकि दुनिया व आख़िरत की कामयाबी का मदार आमाल की दुरस्तगी पर है। जैसे उनकी ख़राबी दोनों जहाँ में महरूमी व ख़सारा का बाइस हैं।

अल्लाह तआला सहाबा–ए–कराम ﷺ (अल्लाह उन से राज़ी हो) जिन्होंने नबी–ए–अतहर व अकरम से उन उलूम को पूरा और मुकम्मल दर्जे में हासिल किया जिन उ़लूम की तादाद दरख़्तों के पत्तों और बारिश के क़तरों से ज़्यादा है और जिन का ज़ुहूर चिराग़े नुबुव्वत से हर वक़्त होता था फिर उन्होंने उन उलूम को ऐसा

याद किया और महफ़ूज़ रखा जैसा कि याद करने और महफ़ूज़ रखने का हक़ है, वह सफ़र व हज़र में रसूलुल्लाह ﷺ की सोहबत में रहे और उनके साथ दावत व जिहाद और इबादात, मामलात, मुआ़शरत के मौक़े में शरीक रहे फिर उन आ़माल को रसूलुल्लाह ﷺ के तरीक़े पर आप के साथ रह कर सीखा।

सहाबा–ए–कराम ﵃ की जमाअ़त को मुबारक हो जिन्होंने बग़ैर किसी वास्ते के आप ﷺ से बिलमुशाफ़ा उलूम और उन पर अ़मल सीखा फिर उन्होनें उन उलूम को सिर्फ़ अपने नुफ़ूसे क़ुदसिया तक महदूद नहीं रखा बल्कि जो उलूम व मआ़रिफ़ उनके दिलों में महफ़ूज़ थे और जिन आ़माल को वह करने वाले थे और दूसरों तक पहुँचाने और सारे आ़लम को उलूमे रब्बानीया और आ़माले रूहानिया मुस्तफ़वीया से भर दिया। चुनाँचे उसके नतीजे में सारा आ़लम इल्म, और अह्ले इल्म का गहवारा बन गया और इन्सान नूर व हिदायत का सरचश्मा बन गये और इबादत व ख़िलाफ़त की बुनयाद पर आ गये।

بسم الله الرحمن الرحيم

कलिमा तैयिबा

ईमान

'ईमान' लुग़त में किसी की बात को किसी के एतिमाद पर यक़ीनी तौर से मान लेने का नाम है और दीन की ख़ास इस्तिलाह में रसूल की ख़बर को बग़ैर मुशाहदा के महज़ रसूल के एतिमाद पर यक़ीनी तौर से मान लेने का नाम *'ईमान'* है।

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالٰی: ﴿وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِیْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ﴾ [الانبياء:٢٥]

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : 'और हमने आपसे पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिसके पास हम ने यह वह्य न भेजी हो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, इसलिए मेरी ही इबादत करो।' (अम्बिया : 25)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰی رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ﴾ [الانفال:٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : 'ईमान वाले तो वही हैं कि जब अल्लाह तआला का नाम लिया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं और जब अल्लाह तआला की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे आयतें उनके ईमान

को क़वी तर कर देती हैं और ये अपने रब ही पर तवक्कुल करते हैं।'
(अन्फ़ाल : 2)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللهِ وَاعْتَصَمُوا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَّيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا﴾ [النساء: ١٧٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : 'जो लोग अल्लाह तआला पर ईमान लाए और अच्छी तरह अल्लाह तआला से ताल्लुक़ पैदा कर लिया, तो अल्लाह तआला अनक़रीब ऐसे लोगों को अपनी रहमत और फ़ज़्ल में दाख़िल करेंगे और उन्हें अपने तक पहुंचने का सीधा रास्ता दिखाएंगे (जहां उन्हें रहनुमाई की ज़रूरत पेश आएगी, उनकी दस्तगीरी फ़रमाएंगे)।' (निसा : 175)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ﴾ [المؤمن: ٥١]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : 'बेशक हम अपने रसूलों और ईमान वालों की दुनिया की ज़िन्दगी में भी मदद करते हैं और क़ियामत के दिन भी मदद करेंगे, जिस दिन आमाल लिखने वाले फ़रिश्ते गवाही देने खड़े होंगे।
(मोमिन : 51)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُونَ﴾ [الانعام: ٨٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : 'जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अपने ईमान में शिर्क की मिलावट नहीं की, अम्न इन्ही के लिए है और यही लोग हिदायत पर हैं।' (अन्आम : 82)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ﴾ [البقرة: ١٦٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है: 'और ईमान वालों को तो अल्लाह तआला ही से ज़्यादा मुहब्बत होती है।' (बक़र: 165)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ﴾ [الانعام: ١٦٢]

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप फ़रमा दीजिए कि बेशक मेरी नमाज़ और मेरी हर इबादत, मेरा जीना और मरना, सब कुछ अल्लाह तआला ही के लिए है जो सारे जहां के पालने वाले हैं।

(अन्आम : 162)

नबी करीम ﷺ की हदीसें

﴿ 1 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلْاِیْمَانُ بِضْعٌ وَسَبْعُوْنَ شُعْبَةً، فَاَفْضَلُهَا قَوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَدْنَاهَا اِمَاطَةُ الْاَذٰی عَنِ الطَّرِیْقِ، وَالْحَیَاءُ شُعْبَةٌ مِنَ الْاِیْمَانِ.

رواه مسلم، باب بيان عدد شعب الايمان.....، رقم: ١٥٢

1. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: ईमान की सत्तर से ज़्यादा शाखें हैं। उनमें सबसे अफ़ज़ल शाख़ *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* का कहना है और अदना शाख़ तकलीफ़ देने वाली चीज़ों का रास्ते से हटाना है और हया ईमान की एक (अहम) शाख़ है। (मुस्लिम)

﴿ 2 ﴾ عَنْ اَبِیْ بَکْرٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ قَبِلَ مِنِّیَ الْکَلِمَةَ الَّتِیْ عَرَضْتُ عَلٰی عَمِّیْ فَرَدَّهَا عَلَیَّ فَهِیَ لَهُ نَجَاةٌ.

رواه احمد ٦/١

2. हज़रत अबू बक्र ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स इस कलिमा को क़ुबूल कर ले जिस को मैंने अपने चचा (अबू तालिब) पर (उनके इन्तिक़ाल के वक़्त) पेश किया था और उन्होंने उसे रद्द कर दिया था, वह कलिमा उस शख़्स के लिए नजात (का ज़रिया) है। (मुस्नद अहमद)

﴿ 3 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: جَدِّدُوْا اِیْمَانَکُمْ قِیْلَ: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! وَکَیْفَ نُجَدِّدُ اِیْمَانَنَا؟ قَالَ: اَکْثِرُوْا مِنْ قَوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ.

رواه احمد والطبراني واسناد احمد حسن، الترغيب ٢/٤١٥

3. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: 'अपने ईमान को ताज़ा करते रहा करो।' अर्ज़ किया गया : ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ!

हम अपने ईमान को किस तरह ताज़ा करें? इर्शाद फ़रमायाः *ला इला-ह इल्लल्लाह* को कसरत से कहते रहा करो । (मुस्नद अहमद, तबरानी, तर्गीब)

﴿4﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَفْضَلُ الذِّكْرِ لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَاَفْضَلُ الدُّعَاءِ الْحَمْدُلِلّٰهِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء ان دعوة المسلم مستجابة، رقم: ٣٣٨٣

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : 'तमाम अज़्कार में सबसे अफ़ज़ल ज़िक्र *ला इला-ह इल्लल्लाह* है और तमाम दुआओं में सबसे अफ़ज़ल दुआ *अलहम्दु लिल्लाह* है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : *ला इला-ह इल्लल्लाह* सबसे अफ़ज़ल इसलिए है कि सारे दीन का दार-व-मदार ही इसी पर है। इसके बग़ैर न ईमान सही होता है और न कोई मुसलमान बनता है। *अल-हम्दु लिल्लाह* को अफ़ज़ल दुआ इसलिए फ़रमाया गया कि करीम की तारीफ़ का मतलब सवाल ही होता है और दुआ अल्लाह तआला से सवाल करने का नाम है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿5﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَاقَالَ عَبْدٌ: لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ قَطُّ مُخْلِصًا اِلَّا فُتِحَتْ لَهُ اَبْوَابُ السَّمَاءِ حَتّٰى تُفْضِيَ اِلَى الْعَرْشِ مَااجْتَنَبَ الْكَبَائِرَ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب دعاء ام سلمة رضي الله عنها، رقم: ٣٥٩٠

5. हज़रत अबू हुरैरह फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, (जब) कोई बन्दा दिल के इख़्लास के साथ *ला इला-ह इल्लल्लाह* कहता है, तो इस कलिमा के लिए यक़ीनी तौर पर आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, यहां तक कि यह कलिमा सीधा अर्श तक पहुंचता है, यानी फ़ौरन क़ुबूल होता है, बशर्तेकि वह कलिमा कहने वाला कबीरा गुनाहों से बचता हो।' (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : इख़्लास के साथ कहना यह है कि इसमें रिया और निफ़ाक़ न हो। कबीरा गुनाहों से बचने की शर्त जल्द क़ुबूल होने के लिए है और अगर कबीरा गुनाहों के साथ भी कहा जाए तो नफ़ा और सवाब से उस वक़्त भी ख़ाली नहीं। (मिरक़ात)

﴿ 6 ﴾ عَنْ يَعْلَى بْنِ شَدَّادٍ قَالَ: حَدَّثَنِيْ اَبِيْ شَدَّادٌ وَعُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا حَاضِرٌ يُصَدِّقُهُ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: هَلْ فِيْكُمْ غَرِيْبٌ يَعْنِيْ اَهْلَ الْكِتَابِ؟ قُلْنَا لَا يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَاَمَرَ بِغَلْقِ الْبَابِ وَقَالَ: اِرْفَعُوْا اَيْدِيَكُمْ وَقُوْلُوْا لَآاِلٰهَ اِلَّا اللهُ فَرَفَعْنَا اَيْدِيَنَا سَاعَةً، ثُمَّ وَضَعَ ﷺ يَدَهُ ثُمَّ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ بَعَثْتَنِيْ بِهٰذِهِ الْكَلِمَةِ وَاَمَرْتَنِيْ بِهَا وَوَعَدْتَنِيْ عَلَيْهَا الْجَنَّةَ وَاِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ، ثُمَّ قَالَ: اَلَا اَبْشِرُوْا فَاِنَّ اللهَ قَدْ غَفَرَ لَكُمْ. رواه احمد والطبراني والبزار ورجاله موثقون،مجمع الزوائد ١٦٤/١

6. हज़रत याला बिन शद्दाद ﷺ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद हज़रत शद्दाद ﷺ ने यह वाक़िया ब्यान फ़रमाया और हज़रत उबादा ﷺ जो कि उस वक़्त मौजूद थे, इस वाक़िया की तस्दीक़ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हम लोग नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : कोई अजनबी (ग़ैर मुस्लिम) तो मजमा में नहीं? हमने अर्ज़ किया, कोई नहीं। इर्शाद फ़रमाया : दरवाज़ा बन्द कर दो। उसके बाद इर्शाद फ़रमाया : हाथ उठाओ और कहो ला इला-ह इल्लल्लाह। हमने थोड़ी देर हाथ उठाये रखे (और कलिमा तैयिबा पढ़ा), फिर आप ﷺ ने अपना हाथ नीचे कर लिया। फिर फ़रमाया : *'अल-हम्दु लिल्लाह,* ऐ अल्लाह! आपने मुझे यह कलिमा देकर भेजा है और इस (कलिमा की तब्लीग़) का मुझे हुक्म फ़रमाया है और इस कलिमा पर जन्नत का वादा फ़रमाया है और आप वादा ख़िलाफ़ नहीं हैं। इसके बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने हम से फ़रमाया : ख़ुश हो जाओ, अल्लाह तआला ने तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमा दी। (मुस्नद अहमद, तबरानी, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 7 ﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَا مِنْ عَبْدٍ قَالَ لَآاِلٰهَ اِلَّا اللهُ ثُمَّ مَاتَ عَلٰى ذٰلِكَ اِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ، قُلْتُ: وَاِنْ زَنٰى وَاِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: وَاِنْ زَنٰى وَاِنْ سَرَقَ، قُلْتُ: وَاِنْ زَنٰى وَاِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: وَاِنْ زَنٰى وَاِنْ سَرَقَ، قُلْتُ: وَاِنْ زَنٰى وَاِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: وَاِنْ زَنٰى وَاِنْ سَرَقَ عَلٰى رَغْمِ اَنْفِ اَبِيْ ذَرٍّ. رواه البخاري باب الثياب البيض، رقم ٥٨٢٧

7. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो बन्दा ला इला-ह इल्लल्लाह कहे और फिर उसी पर उसकी मौत आ जाए तो वह जन्नत में ज़रूर जाएगा। मैंने अर्ज़ किया : अगरचे उसने ज़िना किया हो, अगरचे उसने चोरी की हो? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (हाँ) अगरचे उसने ज़िना किया हो, अगरचे उसने चोरी की हो। फ़िर मैंने अर्ज़ किया: अगरचे उसने ज़िना किया हो, अगरचे उसने चोरी की हो? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: अगरचे उस

हो, अगरचे उसने चोरी की हो। मैंने अ़र्ज़ किया : अगरचे उसने ज़िना किया हो अगरचे उसने चोरी की हो? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगरचे उसने ज़िना किया हो, अगरचे उसने चोरी की हो, अबूज़र के अलर्रग़्म वह जन्नत में ज़रूर जाएगा। (बुख़ारी)

फ़ायदा : अलर्रग़्म अ़रबी ज़ुबान का एक ख़ास मुहावरा है। उसका मतलब यह है कि अगर तुम्हें यह काम नागवार भी हो और तुम उसका न होना भी चाहते हो, तब भी यह हो कर रहेगा। हज़रत अबूज़र ؓ को हैरत थी कि इतने बड़े-बड़े गुनाहों के बावजूद जन्नत में कैसे दाख़िल होगा, जबकि अद्ल का तक़ाज़ा यही है कि गुनाहों पर सज़ा दी जाए, लिहाज़ा नबी करीम ﷺ ने उनकी हैरत दूर करने के लिए फ़रमाया, ख़्वाह अबूज़र को कितना ही नागवार गुज़रे, वह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा। अब अगर उसने गुनाह भी किए होंगे तो ईमान के तक़ाज़े से वह तौबा- इस्तग़फ़ार करके गुनाह माफ़ करा लेगा या अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से माफ़ फ़रमा कर बग़ैर किसी अ़ज़ाब के ही या गुनाहों की सज़ा देने के बाद बहरहाल जन्नत में ज़रूर दाख़िल फ़रमाएंगे ।

उलमा ने लिखा है कि इस हदीस शरीफ़ में कलिमा *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* कहने से मुराद पूरे दीन व तौहीद पर ईमान लाना है और उसको अख़्तियार करना है। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴿ 8 ﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَدْرُسُ الْإِسْلَامُ كَمَا يَدْرُسُ وَشْيُ الثَّوْبِ حَتّٰى لَا يُدْرٰى مَا صِيَامٌ وَلَا صَدَقَةٌ وَلَا نُسُكٌ وَيُسْرٰى عَلٰى كِتَابِ اللهِ فِيْ لَيْلَةٍ فَلَا يَبْقٰى فِى الْاَرْضِ مِنْهُ آيَةٌ وَيَبْقٰى طَوَائِفُ مِنَ النَّاسِ الشَّيْخُ الْكَبِيْرُ وَالْعَجُوْزُ الْكَبِيْرَةُ يَقُوْلُوْنَ اَدْرَكْنَا آبَاءَ نَا عَلٰى هٰذِهِ الْكَلِمَةِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ فَنَحْنُ نَقُوْلُهَا. قَالَ صِلَةُ بْنُ زُفَرَ لِحُذَيْفَةَ: فَمَا تُغْنِيْ عَنْهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَهُمْ لَا يَدْرُوْنَ مَا صِيَامٌ وَلَا صَدَقَةٌ وَلَا نُسُكٌ؟ فَاَعْرَضَ عَنْهُ حُذَيْفَةُ فَرَدَّدَهَا عَلَيْهِ ثَلَاثًا، كُلُّ ذٰلِكَ يُعْرِضُ عَنْهُ حُذَيْفَةُ ثُمَّ اَقْبَلَ عَلَيْهِ فِى الثَّالِثَةِ فَقَالَ: يَا صِلَةُ تُنَجِّيْهِمْ مِنَ النَّارِ. رواه الحاكم وقال هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ٤٧٣/٤

8. हज़रत हुज़ैफ़ा ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस तरह कपड़े के नक़्श व निगार घिस जाते हैं और मांद पड़ जाते हैं, उसी तरह इस्लाम भी एक ज़माने में मांद पड़ जाएगा, यहां तक कि किसी शख़्स को यह इल्म तक न

रहेगा कि रोज़ा क्या चीज़ है और सदक़ा व हज क्या चीज़? एक शब आएगी कि क़ुरआन सीनों से उठा लिया जाएगा और ज़मीन पर उसकी एक आयत भी बाक़ी न रहेगी। अलग-अलग तौर पर कुछ बूढ़े मर्द और कुछ बूढ़ी औरतें रह जाएंगी जो यह कहेंगी कि हमने अपने बुज़ुर्गों से यह कलिमा *ला इला-ह इल्लल्लाह* सुना था, इसलिए हम भी यह कलिमा पढ़ लेते हैं। हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ के शागिर्द सिला ने पूछा: जब उन्हें रोज़ा, सदक़ा और हज का भी इल्म न होगा तो भला सिर्फ़ यह कलिमा उन्हें क्या फ़ायदा देगा? हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ ने उसका कोई जवाब न दिया। उन्होंने तीन बार यही सवाल दुहराया, हर बार हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ एराज़ करते रहे, उनके तीसरी मर्तबा (इसरार) के बाद फ़रमाया : सिला! यह कलिमा ही उनको दोज़ख़ से नजात दिलाएगा। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 9 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ نَفَعَتْهُ يَوْمًا مِنْ دَهْرِهٖ يُصِيْبُهُ قَبْلَ ذٰلِكَ مَا أَصَابَهُ.

رواه البزار والطبراني ورواته رواة الصحيح، الترغيب ٢/٤١٤

9. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* कहा, उसको यह कलिमा एक-न-एक दिन ज़रूर फ़ायदा देगा, (नजात दिलाएगा), अगरचे उसको कुछ-न-कुछ सज़ा पहले भुगतना पड़े। (बज़्ज़ार, तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 10 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِوَصِيَّةِ نُوْحٍ ابْنَهُ؟ قَالُوْا: بَلٰى، قَالَ: أَوْصٰى نُوْحٌ ابْنَهُ فَقَالَ لِابْنِهٖ: يَا بُنَيَّ إِنِّيْ أُوْصِيْكَ بِاثْنَتَيْنِ وَأَنْهَاكَ عَنِ اثْنَتَيْنِ. أُوْصِيْكَ بِقَوْلِ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ، فَإِنَّهَا لَوْ وُضِعَتْ فِيْ كِفَّةِ الْمِيْزَانِ وَوُضِعَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْأَرْضُ فِيْ كِفَّةٍ لَرَجَحَتْ بِهِنَّ، وَلَوْ كَانَتْ حَلْقَةً لَقَصَمَتْهُنَّ حَتّٰى تَخْلُصَ إِلَى اللهِ، وَبِقَوْلِ، سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ، فَإِنَّهَا عِبَادَةُ الْخَلْقِ، وَبِهَا تُقْطَعُ أَرْزَاقُهُمْ، وَأَنْهَاكَ عَنِ اثْنَتَيْنِ، الشِّرْكِ وَالْكِبْرِ، فَإِنَّهُمَا يَحْجُبَانِ عَنِ اللهِ. (الحديث) رواه

البزار وفيه محمد بن اسحاق وهو مدلس وهو ثقة و رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١/٢٠٩

10. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें वह वसीयत न बताऊं जो (हज़रत) नूह ﷺ ने अपने बेटे को की थी? सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : ज़रूर बताइए। इर्शाद फ़रमाया : (हज़रत)

नूह ﷺ ने अपने बेटे को वसीयत में फ़रमायाः मेरे बेटे! तुम को दो काम करने की वसीयत करता हूं और दो कामों से रोकता हूं। एक तो मैं तुम्हें *ला इला-ह इल्लल्लाह* के कहने का हुक्म देता हूं, क्योंकि अगर यह कलिमा एक पलड़े में रख दिया जाए और तमाम आसमान व ज़मीन को एक पलड़े में रख दिया जाए तो कलिमा वाला पलड़ा झुक जाएगा और अगर तमाम आसमान व ज़मीन का एक घेरा हो जाए, तो भी यह कलिमा इस घेरे को तोड़ कर अल्लाह तआला तक पहुंच कर रहेगा। दूसरी चीज़ जिसका हुक्म देता हूं वह *'सुब्हानल्लाहिल अज़ीमि व बिहम्दिहि'* का पढ़ना है, क्योंकि यह तमाम मख़्लूक़ की इबादत है और इसी की बरकत से मख़लूक़ात को रोज़ी दी जाती है। और मैं तुम को दो बातों से रोकता हूं शिर्क से और तकब्बुर से, क्योंकि ये दोनों बुराइयां बन्दे को अल्लाह से दूर कर देती हैं।

(बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 11 ﴾ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنِّي لَأَعْلَمُ كَلِمَةً لَا يَقُولُهَا رَجُلٌ يَحْضُرُهُ الْمَوْتُ إِلَّا وَجَدَتْ رُوْحُهُ لَهَا رَوْحًا حَتَّى تَخْرُجَ مِنْ جَسَدِهِ وَكَانَتْ لَهُ نُورًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رواه ابو يعلى ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٦٧/٢

11. हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं एक ऐसा कलिमा जानता हूं, जिसे ऐसा शख़्स पढ़े जिसकी मौत का वक़्त क़रीब हो तो उसकी रूह जिस्म से निकलते वक़्त इस कलिमा की बदौलत ज़रूर राहत पाएगी और वह कलिमा उसके लिए क़ियामत के दिन नूर होगा। (वह कलिमा *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* है) (अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 12 ﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ (فِيْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ) أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: يَخْرُجُ مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَكَانَ فِيْ قَلْبِهٖ مِنَ الْخَيْرِ مَا يَزِنُ شَعِيْرَةً ثُمَّ يَخْرُجُ مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَكَانَ فِيْ قَلْبِهٖ مِنَ الْخَيْرِ مَا يَزِنُ بُرَّةً ثُمَّ يَخْرُجُ مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَكَانَ فِيْ قَلْبِهٖ مَا يَزِنُ مِنَ الْخَيْرِ ذَرَّةً.

(وهو جزء من الحديث) رواه البخاري، باب قول الله تعالى: لما خلقت بيدي، رقم: ٧٤١٠

12. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः हर वह शख़्स जहन्नम से निकलेगा जिसने *ला इला-ह इल्लल्लाह* कहा होगा और उसके दिल में एक जौ के वज़न के बराबर भी भलाई होगी यानी ईमान होगा, फिर वह शख़्स

जहन्नम से निकलेगा जिस ने *ला इला-ह इल्लल्लाह* कहा होगा और उसके दिल में गंदुम के दाने के बराबर भी ख़ैर होगी, यानी ईमान होगा, फिर हर वह शख़्स जहन्नम से निकलेगा जिसने *ला इला-ह इल्लल्लाह* कहा होगा और उसके दिल में ज़र्रा बराबर भी ख़ैर होगी। (बुख़ारी)

﴿ 13 ﴾ عَنِ الْمِقْدَادِ بْنِ الْاَسْوَدِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يَبْقَى عَلَى ظَهْرِ الْاَرْضِ بَيْتُ مَدَرٍ وَلَا وَبَرٍ اِلَّا اَدْخَلَهُ اللّٰهُ كَلِمَةَ الْاِسْلَامِ بِعِزِّ عَزِيْزٍ اَوْ ذُلِّ ذَلِيْلٍ اِمَّا يُعِزُّهُمُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ فَيَجْعَلُهُمْ مِنْ اَهْلِهَا اَوْيُذِلُّهُمْ فَيَدِيْنُوْنَ لَهَا۔ رواه احمد ٤/٦

13. हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ज़मीन की सतह पर किसी शहर, गांव, सेहरा का कोई घर या ख़ेमा ऐसा बाक़ी नहीं रहेगा, जहां अल्लाह तआला इस्लाम के कलिमा को दाख़िल न फ़रमा दें। मानने वाले को कलिमा वाला बना कर इज़्ज़त देंगे, न मानने वाले को ज़लील फ़रमाएंगे, फिर वे मुसलमानों के मातहत बनकर रहेंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿ 14 ﴾ عَنِ ابْنِ شِمَاسَةَ الْمَهْرِيِّ قَالَ: حَضَرْنَا عَمْرَوبْنَ الْعَاصِ وَهُوَ فِيْ سِيَاقَةِ الْمَوْتِ يَبْكِيْ طَوِيْلًا وَحَوَّلَ وَجْهَهُ اِلَى الْجِدَارِ، فَجَعَلَ ابْنُهُ يَقُوْلُ: يَا اَبَتَاهُ! اَمَا بَشَّرَكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ بِكَذَا؟ اَمَا بَشَّرَكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ بِكَذَا قَالَ فَاَقْبَلَ بِوَجْهِهِ وَقَالَ: اِنَّ اَفْضَلَ مَا نُعِدُّ شَهَادَةُ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللّٰهِ، اِنِّيْ قَدْ كُنْتُ عَلَى اَطْبَاقٍ ثَلَاثٍ، لَقَدْ رَاَيْتُنِيْ وَمَا اَحَدٌ اَشَدَّ بُغْضًا لِرَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ مِنِّيْ، وَلَا اَحَبَّ اِلَيَّ اَنْ اَكُوْنَ قَدِاسْتَمْكَنْتُ مِنْهُ فَقَتَلْتُهُ مِنْهُ، فَلَوْمُتُّ عَلَى تِلْكَ الْحَالِ لَكُنْتُ مِنْ اَهْلِ النَّارِ، فَلَمَّا جَعَلَ اللّٰهُ الْاِسْلَامَ فِيْ قَلْبِيْ اَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقُلْتُ: اُبْسُطْ يَمِيْنَكَ فَلَاُ بَايِعْكَ فَبَسَطَ يَمِيْنَهُ، قَالَ: فَقَبَضْتُ يَدِيْ قَالَ: مَالَكَ يَاعَمْرُو؟ قَالَ قُلْتُ: اَرَدْتُ اَنْ اَشْتَرِطَ قَالَ: تَشْتَرِطُ بِمَاذَا؟ قُلْتُ: اَنْ يُغْفَرَلِيْ قَالَ: اَمَا عَلِمْتَ يَا عَمْرُو اَنَّ الْاِسْلَامَ يَهْدِمُ مَا كَانَ قَبْلَهُ؟ وَاَنَّ الْهِجْرَةَ تَهْدِمُ مَا كَانَ قَبْلَهَا؟ وَاَنَّ الْحَجَّ يَهْدِمُ مَا كَانَ قَبْلَهُ؟ وَمَا كَانَ اَحَدٌ اَحَبَّ اِلَيَّ مِنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ وَلَا اَجَلَّ فِيْ عَيْنِيَّ مِنْهُ، وَمَا كُنْتُ اُطِيْقُ اَنْ اَمْلَاَ عَيْنَيَّ مِنْهُ اِجْلَالًا لَهُ وَلَوْ سُئِلْتُ اَنْ اَصِفَهُ مَا اَطَقْتُ لِاَنِّيْ لَمْ اَكُنْ اَمْلَاُ عَيْنَيَّ مِنْهُ وَلَوْ مُتُّ عَلَى تِلْكَ الْحَالِ لَرَجَوْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ ثُمَّ وَلِيْنَا اَشْيَاءَ مَا اَدْرِيْ مَا حَالِيْ فِيْهَا فَاِذَا اَنَا مُتُّ فَلَا تَصْحَبْنِيْ نَائِحَةٌ وَلَا نَارٌ فَاِذَا دَفَنْتُمُوْنِيْ فَشُنُّوْا عَلَيَّ التُّرَابَ شَنًّا ثُمَّ اَقِيْمُوْا حَوْلَ قَبْرِيْ

قَدْرَ مَا تُنْحَرُ جَزُوْرٌ وَيُقْسَمُ لَحْمُهَا حَتّٰى اَسْتَاْنِسَ بِكُمْ، وَاَنْظُرَ مَاذَا اُرَاجِعُ بِهٖ رُسُلَ رَبِّيْ۔

رواه مسلم باب كون الإسلام يهدم ما قبله ... رقم ٣٢١

14. हज़रत इब्ने शिमासा महरी रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत है कि हम हज़रत अम्र बिन आस ﷺ के पास उनके आख़िरी वक़्त में मौजूद थे। वह ज़ार-व-क़तार रो रहे थे और दीवार की तरफ़ अपना रुख़ किए हुए थे। उनके साहिबज़ादे उनको तसल्ली देने के लिए कहने लगे, अब्बा जान! क्या नबी करीम ﷺ ने आप को फ़्लां बशारत नहीं दी थी? क्या रसूलुल्लाह ﷺ ने आप को फ़्लां बशारत नहीं दी थी? यानी आपको तो नबी करीम ﷺ ने बड़ी-बड़ी बशारतें दी हैं। यह सुनकर उन्होंने (दीवार की तरफ़ से) अपना रुख़ बदला और फ़रमाया, सबसे अफ़ज़ल चीज़ जो हम ने (आख़िरत के लिए) तैयार की है वह इस बात की शहादत है कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। मेरी ज़िन्दगी के तीन दौर गुज़रे हैं। एक दौर तो वह था जबकि रसूलुल्लाह ﷺ से बुग्ज़ रखने वाला मुझसे ज़्यादा कोई और शख़्स न था और जबकि मेरी सबसे बड़ी तमन्ना यह थी कि किसी तरह आप पर मेरा क़ाबू चल जाए तो मैं आप को मार डालूं। यह तो मेरी ज़िन्दगी का सबसे बदतर दौर था, (ख़ुदा न ख़्वास्ता) मैं इस हाल पर मर जाता तो यक़ीनन दोज़ख़ी होता। इसके बाद जब अल्लाह तआला ने मेरे दिल में इस्लाम का हक़ होना डाल दिया तो मैं आप के पास आया और मैंने अर्ज़ किया, अपना मुबारक हाथ बढ़ाइए ताकि मैं आप से बैअ़त करूं। आप ﷺ ने अपना हाथ मुबारक बढ़ा दिया। मैंने अपना हाथ पीछे खींच लिया। आपने फ़रमाया, अम्र यह क्या? मैंने अर्ज़ किया, मैं कुछ शर्त लगाना चाहता हूं। फ़रमाया : क्या शर्त लगाना चाहते हो? मैंने कहा, यह कि मेरे सब गुनाह माफ़ हो जाएं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अम्र! क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि इस्लाम तो कुफ़्र की ज़िन्दगी के गुनाहों का तमाम क़िस्सा ही पाक कर देता है; और हिजरत भी पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर देती है; और हज भी पिछले सब गुनाह ख़त्म कर देता है। यह दौर वह था जबकि आपसे ज़्यादा प्यारा, आपसे ज़्यादा बुज़ुर्ग व बरतर मेरी नज़र में कोई और न था। आपकी अ़ज़मत की वजह से मेरी यह ताब न थी कि कभी आप को नज़र भर कर देख सकता, अगर मुझसे आपकी सूरत मुबारक पूछी जाए तो मैं कुछ नहीं बता सकता, क्योंकि मैंने कभी पूरी तरह आपको देखा ही नहीं। काश! अगर मैं इस हाल पर मर जाता तो उम्मीद है कि जन्नती होता। फिर हम कुछ चीज़ों के मुतवल्ली और ज़िम्मेदार बने और नहीं कह सकते कि हमारा हाल उन चीज़ों में क्या रहा (यह मेरी ज़िन्दगी का तीसरा दौर था)। [illegible]

मेरी वफ़ात हो जाए तो मेरे (जनाज़े के) साथ कोई वावेला और शोर व शग़ब करने वाली औरत न जाने पाए, न (ज़माना जाहिलियत की तरह) आग मेरे जनाज़े के साथ हो। जब मुझे दफ़न कर चुको तो मेरी क़ब्र पर अच्छी तरह मिट्टी डालना और जब (फ़ारिग़ हो जाओ) तो मेरी क़ब्र के पास इतनी देर ठहरना जितनी देर में ऊंट ज़बह करके उसका गोश्त तक़सीम किया जाता है, ताकि तुम्हारी वजह से मेरा दिल लगा रहे और मुझे मालूम हो जाए कि मैं अपने रब के भेजे हुए फ़रिश्तों के सवालात के जवाबात क्या देता हूं। (मुस्लिम)

﴿ 15 ﴾ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: يَا ابْنَ الْخَطَّابِ! اِذْهَبْ فَنَادِ فِي النَّاسِ إِنَّهُ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ إِلَّا الْمُؤْمِنُوْنَ. رواه مسلم، باب غلظ تحريم الغلول ..... رقم: ٣٠٩

15. हज़रत उमर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ख़त्ताब के बेटे! जाओ, लोगों में यह एलान कर दो कि जन्नत में सिर्फ़ ईमान वाले ही दाख़िल होंगे। (मुस्लिम)

﴿ 16 ﴾ عَنْ أَبِيْ لَيْلَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: وَيْحَكَ يَا أَبَا سُفْيَانَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَأَسْلِمُوْا تَسْلَمُوْا. (وهو بعض الحديث) رواه الطبراني وفيه حرب بن الحسن الطحان وهو ضعيف وقد وثق، مجمع الزوائد ٦/٢٥٠

16. हज़रत अबू लैला ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने (अबू सुफ़यान से) इर्शाद फ़रमाया : अबू सुफ़यान! तुम्हारी हालत पर अफ़सोस है। मैं तो तुम्हारे पास दुनिया व आख़िरत (की भलाई) ले कर आया हूं। तुम इस्लाम क़ुबूल कर लो, सलामती में आ जाओगे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 17 ﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ شُفِّعْتُ، فَقُلْتُ: يَا رَبِّ! أَدْخِلِ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهِ خَرْدَلَةٌ فَيَدْخُلُوْنَ، ثُمَّ أَقُوْلُ أَدْخِلِ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهِ أَدْنَى شَيْءٍ.

رواه البخاري، باب كلام الرب تعالى يوم القيامة ..... رقم: ٧٥٠٩

17. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब क़ियामत का दिन होगा तो मुझे शफ़ाअ़त की इजाज़त दी जाएगी मैं अ़र्ज़ करूंगा: ऐ मेरे रब! जन्नत में हर उस शख़्स को दाख़िल फ़रमा दीजिए, जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी (ईमान) हो, (अल्लाह तआ़ला मेरी इस

शफ़ाअ़त को क़ुबूल फ़रमा लेंगे) और ये लोग जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। फिर मैं अ़र्ज़ करूंगा, जन्नत में हर उस शख़्स को दाख़िल फ़रमा दीजिए, जिसके दिल में ज़रा-सा भी (ईमान) हो। (बुख़ारी)

﴿ 18 ﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: یَدْخُلُ اَھْلُ الْجَنَّۃِ الْجَنَّۃَ وَاَھْلُ النَّارِ النَّارَ ثُمَّ یَقُوْلُ اللّٰہُ تَعَالٰی: اَخْرِجُوْا مَنْ کَانَ فِیْ قَلْبِہٖ مِثْقَالُ حَبَّۃٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ اِیْمَانٍ فَیُخْرَجُوْنَ مِنْھَا قَدِ اسْوَدُّوْا، فَیُلْقَوْنَ فِیْ نَھْرِ الْحَیَاۃِ فَیَنْبُتُوْنَ کَمَا تَنْبُتُ الْحِبَّۃُ فِیْ جَانِبِ السَّیْلِ، اَلَمْ تَرَ اَنَّھَا تَخْرُجُ صَفْرَاءَ مُلْتَوِیَۃً؟

رواہ البخاری، باب تفاضل اھل الایمان فی الاعمال، رقم: ۲۲

18. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷛ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब जन्नती जन्नत में और दोज़ख़ी दोज़ख़ में दाख़िल हो चुके होंगे, तो अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाएंगे : जिसके दिल में राई के दाना के बराबर भी ईमान हो, उसे भी दोज़ख़ से निकाल लो, चुनांचे उन लोगों को भी निकाल लिया जएगा। उनकी हालत यह होगी कि वह जल कर स्याह फ़ाम हो गए होंगे। उसके बाद उनको नहरे हयात में डाला जाएगा तो वह उस तरह (फ़ौरी तौर पर तर व ताज़ा होकर) निकल आएंगे जैसे दाना सैलाब के कूड़े में (पानी और खाद मिलने की वजह से फ़ौरी) उग आता है। कभी तुम ने ग़ौर किया है कि वह कैसा ज़र्द बल खाया हुआ निकलता है? (बुख़ारी)

﴿ 19 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ سَاَلَہٗ رَجُلٌ فَقَالَ: یَارَسُوْلَ اللّٰہِ! مَا الْاِیْمَانُ؟ قَالَ: اِذَا سَرَّتْکَ حَسَنَتُکَ وَسَاءَتْکَ سَیِّئَتُکَ فَاَنْتَ مُؤْمِنٌ.

(الحدیث) رواہ الحاکم وصححہ ووافقہ الذھبی ۱/۱۳، ۱۴

19. हज़रत अबू उमामा ﷛ से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया कि ईमान क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम को अपने अच्छे अ़मल से ख़ुशी हो और अपने बुरे काम पर रंज हो, तो तुम मोमिन हो। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 20 ﴾ عَنِ الْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّہٗ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: ذَاقَ طَعْمَ الْاِیْمَانِ مَنْ رَضِیَ بِاللّٰہِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ ﷺ رَسُوْلًا.

رواہ مسلم، باب الدلیل علی ان من رضی باللّٰہ ربا ... رقم: ۱۵۱

20. हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ईमान का मज़ा उसने चखा (और ईमान की लज़्ज़त उसे मिली) जो अल्लाह तआला को रब, इस्लाम को दीन और मुहम्मद ﷺ को रसूल मानने पर राज़ी हो जाए। (मुस्लिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि अल्लाह तआला की बन्दगी और इस्लाम के मुताबिक़ अमल और हज़रत मुहम्मद ﷺ की इताअत, अल्लाह तआला और उनके रसूल ﷺ और इस्लाम की मुहब्बत के साथ हो जिसको यह बात नसीब हो गई, यक़ीनन ईमानी लज़्ज़त में भी उसका हिस्सा हो गया।

﴿ 21 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ثَلٰثٌ مَنْ كُنَّ فِيْهِ وَجَدَ حَلَاوَةَ الْاِيْمَانِ: اَنْ يَكُوْنَ اللهُ وَرَسُوْلُهُ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا، وَاَنْ يُحِبَّ الْمَرْءَ لَا يُحِبُّهُ اِلَّا لِلّٰهِ، وَاَنْ يَكْرَهَ اَنْ يَعُوْدَ فِي الْكُفْرِ كَمَا يَكْرَهُ اَنْ يُقْذَفَ فِي النَّارِ.

رواه البخاري، باب حلاوة الإيمان، رقم: ١٦

21. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान की हलावत उसी को नसीब होगी, जिसमें तीन बातें पाई जाएंगी। एक यह कि अल्लाह तआला और उसके रसूल की मुहब्बत उसके दिल में सबसे ज़्यादा हो। दूसरे यह कि जिस शख़्स से भी मुहब्बत हो सिर्फ़ अल्लाह तआला ही के लिए हो। तीसरे यह कि ईमान के बाद कुफ़्र की तरफ़ पलटने से उसको इतनी नफ़रत और ऐसी अज़ीयत हो, जैसी कि आग में डाले जाने से होती है। (बुख़ारी)

﴿ 22 ﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَنْ اَحَبَّ لِلّٰهِ، وَاَبْغَضَ لِلّٰهِ، وَاَعْطٰى لِلّٰهِ، وَمَنَعَ لِلّٰهِ فَقَدِ اسْتَكْمَلَ الْاِيْمَانَ.

رواه ابو داؤد، باب الدليل على زيادة الايمان ونقصانه، رقم: ٤٦٨١

22. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने अल्लाह तआला ही के लिए किसी से मुहब्बत की और उसी के लिए दुश्मनी की और (जिसको दिया) अल्लाह तआला ही के लिए दिया और (जिसको नहीं दिया) अल्लाह तआला ही के लिए नहीं दिया तो उसने ईमान की तकमील कर ली।

﴿ 23 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ لِأَبِي ذَرٍّ: يَا أَبَا ذَرٍّ! أَيُّ عُرَى الْإِيْمَانِ أَوْثَقُ؟ قَالَ: اللهُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: الْمُوَالَاةُ فِي اللهِ وَالْحُبُّ فِي اللهِ وَالْبُغْضُ فِي اللهِ. رواه البيهقي في شعب الإيمان ٧٠/٧

23. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अबूज़र ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : बताओ ईमान की कौन-सी कड़ी ज़्यादा मज़बूत है? हज़रत अबूज़र ﷺ ने अ़र्ज़ किया : अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है (लिहाज़ा आप ﷺ ही इर्शाद फ़रमाएं) आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के लिए बाहमी तअ़ल्लुक़ व तआ़वुन हो और अल्लाह तआ़ला के लिए किसी से मुहब्बत हो और अल्लाह तआ़ला ही के लिए किसी से बुग्ज़ व अदावत हो। (बैहक़ी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि ईमानी शोबों में सबसे ज़्यादा जानदार और पायदार शोबा यह है कि बन्दे का दुनिया में जिस के साथ जो बर्ताव हो, ख़्वाह तअ़ल्लुक़ क़ायम करने का हो या तअ़ल्लुक़ तोड़ने का, मुहब्बत का हो या अ़दावत का, वह अपने नफ़्स के तक़ाज़े से न हो, बल्कि सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिए हो और उन्हीं के हुक्म के मातहत हो।

﴿ 24 ﴾ عَنْ أَنَسِ ابْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: طُوْبٰى لِمَنْ آمَنَ بِيْ وَرَآنِيْ مَرَّةً وَطُوْبٰى لِمَنْ آمَنَ بِيْ وَلَمْ يَرَنِيْ سَبْعَ مِرَارٍ. رواه احمد ١٥٥/٣

24. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने मुझे देखा और मुझ पर ईमान लाया, उसको तो एक बार मुबारकबाद और जिसने मुझे नहीं देखा और फिर मुझ पर ईमान लाया, उसको सातबार मुबारकबाद। (मुस्नद अहमद)

﴿ 25 ﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ يَزِيْدَ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: ذَكَرُوْا عِنْدَ عَبْدِاللهِ أَصْحَابَ مُحَمَّدٍ ﷺ وَإِيْمَانَهُمْ قَالَ: فَقَالَ عَبْدُاللهِ إِنَّ أَمْرَ مُحَمَّدٍ ﷺ كَانَ بَيِّنًا لِمَنْ رَآهُ وَالَّذِيْ لَآ إِلٰهَ غَيْرُهُ مَا آمَنَ مُؤْمِنٌ أَفْضَلَ مِنْ إِيْمَانٍ بِغَيْبٍ ثُمَّ قَرَأَ: "الٓمٓ ۝ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ إِلٰى قَوْلِهٖ تَعَالٰى يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ". رواه الحاكم وقال هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٢٦٠/٢

25. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन यज़ीद रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते

अ़ब्दुल्लाह ؓ के सामने कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा और उनके ईमान का तज़किरा छेड़ दिया। उस पर हज़रत अ़ब्दुल्लाह ؓ ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह ﷺ की सदाक़त, हर उस शख़्स के सामने, जिसने आप को देखा था बिल्कुल साफ़ और वाज़ेह थी। उस ज़ात की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं कि सबसे अफ़ज़ल ईमान उस शख़्स का है जिसका ईमान बिन देखे हो। फिर उसके सुबूत में उन्होंने ये आयत पढ़ीः الٓمّٓ ۚ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ से يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ तक। तर्जुमा : 'यह किताब है इसमें कोई शक व शुबहा नहीं, मुत्तक़ियों के लिए हिदायत है जो ग़ैब पर ईमान रखते हैं।' (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 26 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَدِدْتُ اَنِّي لَقِيْتُ اِخْوَانِيْ، قَالَ فَقَالَ اَصْحَابُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَوَ لَيْسَ نَحْنُ اِخْوَانَكَ قَالَ اَنْتُمْ اَصْحَابِيْ وَلٰكِنْ اِخْوَانِيَ الَّذِيْنَ آمَنُوْا بِيْ وَلَمْ يَرَوْنِيْ. رواه احمد ١٥٥/٣

26. हज़रत अनस बिन मालिक ؓ ब्यान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे तमन्ना है कि मैं अपने भाइयों से मिलता। सहाबा ؓ ने अ़र्ज़ किया: क्या हम आप के भाई नहीं हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम तो मेरे सहाबा हो और मेरे भाई वे लोग हैं, जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाएंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿ 27 ﴾ عَنْ اَبِيْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اِذْ طَلَعَ رَاكِبَانِ، فَلَمَّا رَآهُمَا قَالَ: كِنْدِيَّانِ مَذْحِجِيَّانِ حَتّٰى اَتَيَاهُ، فَاِذَا رِجَالٌ مِنْ مَذْحِجٍ، قَالَ فَدَنَا اِلَيْهِ اَحَدُهُمَا لِيُبَايِعَهُ، قَالَ فَلَمَّا اَخَذَ بِيَدِهِ قَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَرَاَيْتَ مَنْ رَآكَ فَآمَنَ بِكَ وَصَدَّقَكَ وَاتَّبَعَكَ مَاذَا لَهُ؟ قَالَ: طُوْبٰى لَهُ، قَالَ فَمَسَحَ عَلٰى يَدِهِ فَانْصَرَفَ، ثُمَّ اَقْبَلَ الْآخَرُ حَتّٰى اَخَذَ بِيَدِهِ لِيُبَايِعَهُ قَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَرَاَيْتَ مَنْ آمَنَ بِكَ وَصَدَّقَكَ وَاتَّبَعَكَ وَلَمْ يَرَكَ قَالَ: طُوْبٰى لَهُ ثُمَّ طُوْبٰى لَهُ ثُمَّ طُوْبٰى لَهُ، قَالَ فَمَسَحَ عَلٰى يَدِهِ فَانْصَرَفَ.

رواه احمد ١٥٢/٤

27. हज़रत अबू अ़ब्दुर्रहमान जुहनी ؓ रिवायत करते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के पास बैठे थे कि दो सवार (सामने से आते) नज़र आए। जब आप ﷺ ने इन्हें देखा तो फ़रमाया : ये दोनों क़बीला किन्दा और क़बीला मज़हिज के लोग मालूम होते हैं। यहां तक कि जब वे रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में पहुंचे तो उनके साथ उनके क़बीला के और आदमी भी थे। रावी कहते हैं कि उनमें एक शख़्स बैअ़त के लिए आप ﷺ के क़रीब आए। जब उन्होंने आप का दस्ते मुबारक हाथ में लिया तो अ़र्ज़

किया : या रसूलुल्लाह! जिसने आप की ज़ियारत की, आप पर ईमान लाया और आपकी तस्दीक़ की और आपका इत्तेबाअ् भी किया, फ़रमाइए उसको क्या मिलेगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसको मुबारकबाद हो। यह सुनकर (बरकत लेने के लिए) उन्होंने आप के दस्ते मुबारक पर हाथ फेरा और बैअ्त करके चले गए। फिर दूसरे शख़्स आगे बढ़े, उन्होंने ने भी बैअ्त के लिए आपका दस्ते मुबारक अपने हाथ में लिया और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! जो आप को देखे बग़ैर ईमान लाए, आप की तस्दीक़ करे और आपका इत्तबाअ् करे, फ़रमाइये उसको क्या मिलेगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसको मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। उन्होंने भी आप के दस्ते मुबारक पर हाथ फेरा और बैअ्त करके चले गए। (मुस्नद अहमद)

﴿ 28 ﴾ عَنْ اَبِيْ مُوْسٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : ثَلَاثَةٌ لَهُمْ اَجْرَانِ: رَجُلٌ مِنْ اَهْلِ الْكِتَابِ آمَنَ بِنَبِيِّهٖ وَآمَنَ بِمُحَمَّدٍ ﷺ، وَالْعَبْدُ الْمَمْلُوْكُ اِذَا اَدّٰى حَقَّ اللهِ تَعَالٰى وَحَقَّ مَوَالِيْهِ، وَرَجُلٌ كَانَتْ عِنْدَهٗ اَمَةٌ فَاَدَّبَهَا فَاَحْسَنَ تَاْدِيْبَهَا وَعَلَّمَهَا فَاَحْسَنَ تَعْلِيْمَهَا ثُمَّ اَعْتَقَهَا فَتَزَوَّجَهَا فَلَهٗ اَجْرَانِ. رواه البخاري، باب تعليم الرجل امته واهله، رقم: ٩٧

28. हज़रत अबू मूसा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन शख़्स ऐसे हैं जिनके लिए दोहरा सवाब है, एक वह शख़्स, जो अहले किताब में से हो (यहूदी हो या ईसाई) अपने नबी पर ईमान लाए फिर (मुहम्मद ﷺ) पर भी ईमान लाए। दूसरा, वह गुलाम जो अल्लाह तआ़ला के हुक़ूक़ भी अदा करे और अपने आक़ाओं के हुक़ूक़ भी अदा करे। तीसरा, वह शख़्स जिसकी कोई बांदी हो और उसने उसकी ख़ूब अच्छी तरबियत की हो और उसे ख़ूब अच्छी तालीम दी हो, फिर उसे आज़ाद करके उससे शादी कर ली हो, तो उसके लिए दोहरा अज्र है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मकसद यह है कि उन लोगों के आ़मालनामे में हर अ़मल का सवाब दूसरों के अ़मल के मुक़ाबले में दोहरा लिखा जाएगा। मसलन, अगर कोई दूसरा शख़्स नमाज़ पढ़े, तो उसे दस गुना सवाब मिलेगा और यही अ़मल उन तीनों में से कोई करे तो उसे बीस गुना सवाब मिलेगा। (मज़ाहिरे हक़)

﴿ 29 ﴾ عَنْ اَوْسَطَ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: خَطَبَنَا اَبُوْ بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَقَالَ: قَامَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَقَامِيْ هٰذَا عَامَ الْاَوَّلِ، وَبَكٰى اَبُوْ بَكْرٍ، فَقَالَ اَبُوْ بَكْرٍ: سَلُوا اللهَ الْمُعَافَاةَ اَوْ قَالَ الْعَافِيَةَ فَلَمْ يُؤْتَ اَحَدٌ قَطُّ بَعْدَ الْيَقِيْنِ اَفْضَلَ مِنَ الْعَافِيَةِ اَوِ الْمُعَافَاةِ. رواه احمد ١/٥

29. हज़रत औसत रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र ﷺ ने हमारे सामने ब्यान करते हुए फ़रमाया : एक साल पहले रसूलुल्लाह ﷺ मेरे खड़े होने की इसी जगह (ख़ुत्बा के लिए) खड़े हुए थे। यह कहकर हज़रत अबूबक्र ﷺ रो पड़े। फिर फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला से (अपने लिए) आ़फ़ियत मांगा करो, क्योंकि ईमान व यक़ीन के बाद आ़फ़ियत से बढ़कर किसी को कोई नेमत नहीं दी गई।

(मुस्नद अहमद)

﴿ 30 ﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: أَوَّلُ صَلَاحِ هٰذِهِ الْأُمَّةِ بِالْيَقِيْنِ وَالزُّهْدِ وَأَوَّلُ فَسَادِهَا بِالْبُخْلِ وَالْأَمَلِ. رواه البيهقي ٤٢٧/٧

30. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन शुऐब अपने बाप-दादा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस उम्मत की इस्लाह की इब्तिदा यक़ीन और दुनिया से बे-रग़बती की वजह से हुई है और इसकी बरबादी की इब्तिदा बुख़्ल और लम्बी उम्मीदों की वजह से होगी। (बैहक़ी)

﴿ 31 ﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَوَكَّلُوْنَ عَلَى اللهِ حَقَّ تَوَكُّلِهِ لَرُزِقْتُمْ كَمَا تُرْزَقُ الطَّيْرُ تَغْدُوْ خِمَاصًا وَتَرُوْحُ بِطَانًا.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب في التوكل على الله، رقم: ٢٣٤٤

31. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम अल्लाह तआ़ला पर इस तरह तवक्कुल करने लगो जैसा कि तवक्कुल का हक़ है, तो तुम्हें इस तरह रोज़ी दी जाए, जिस तरह परिन्दों को रोज़ी दी जाती है। वह सुबह ख़ाली पेट निकलते हैं और शाम भरे पेट वापस आते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 32 ﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّهُ غَزَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قِبَلَ نَجْدٍ، فَلَمَّا قَفَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ قَفَلَ مَعَهُ فَأَدْرَكَتْهُمُ الْقَائِلَةُ فِيْ وَادٍ كَثِيْرِ الْعِضَاهِ، فَنَزَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَتَفَرَّقَ النَّاسُ يَسْتَظِلُّوْنَ بِالشَّجَرِ، فَنَزَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ تَحْتَ شَجَرَةٍ وَعَلَّقَ بِهَا سَيْفَهُ، وَنِمْنَا نَوْمَةً فَإِذَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَدْعُوْنَا وَإِذَا عِنْدَهُ أَعْرَابِيٌّ، فَقَالَ إِنَّ هٰذَا اخْتَرَطَ عَلَيَّ سَيْفِيْ وَأَنَا نَائِمٌ، فَاسْتَيْقَظْتُ وَهُوَ فِيْ يَدِهِ صَلْتًا، فَقَالَ: مَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّيْ؟ فَقُلْتُ: اللهُ ثَلَاثًا، وَلَمْ يُعَاقِبْهُ وَجَلَسَ. رواه البخاري، باب من علق سيفه بالشجر...، رقم: ٢٩١٠

32. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह ﷺ के साथ उस ग़ज़्वा में शरीक थे, जो नज्द की तरफ़ हुआ था। जब रसूलुल्लाह ﷺ ग़ज़्वा से वापस हुए, तो यह भी आप के साथ वापस हुए, (वापसी में यह वाक़िआ पेश आया कि) सहाबा किराम ﷺ दोपहर के वक़्त एक ऐसे जंगल में पहुंचे जहां कीकर के दरख़्त ज़्यादा थे। रसूलुल्लाह ﷺ वहां आराम करने के लिए ठहर गए। सहाबा दरख़्तों के साए की तलाश में इधर-उधर फैल गए। रसूलुल्लाह ﷺ ने भी कीकर के दरख़्त के नीचे आराम फ़रमाने के लिए क़ियाम किया और दरख़्त पर अपनी तलवार लटका दी और हम भी थोड़ी देर के लिए (दरख़्तों के साए में) सो गए। अचानक (हमने सुना कि) रसूलुल्लाह ﷺ हमें आवाज़ दे रहे हैं। (जब हम वहां पहुंचे) तो आपके पास एक देहाती काफ़िर मौजूद था। आप ﷺ ने फ़रमाया : मैं सो रहा था, इसने मेरी तलवार मुझ पर सौंत ली। फिर मेरी आंख खुल गई तो मैंने देखा कि मेरी नंगी तलवार उसके हाथ में है। उसने मुझसे कहा : तुझको मुझसे कौन बचाएगा? मैंने तीन मर्तबा कहा : अल्लाह। आप ﷺ ने उस देहाती को कोई सज़ा नहीं दी और उठकर बैठ गए। (बुख़ारी)

﴿ 33 ﴾ عَنْ صَالِحِ بْنِ مِسْمَارٍ وَجَعْفَرِ بْنِ بُرْقَانَ رَحِمَهُمَا اللهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِلْحَارِثِ بْنِ مَالِكٍ: مَاأَنْتَ يَا حَارِثُ بْنَ مَالِكٍ؟ قَالَ: مُؤْمِنٌ يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَالَ: مُؤْمِنٌ حَقًّا؟ قَالَ: مُؤْمِنٌ حَقًّا. قَالَ فَإِنَّ لِكُلِّ حَقٍّ حَقِيْقَةً، فَمَاحَقِيْقَةُ ذٰلِكَ؟ قَالَ: عَزَفْتُ نَفْسِي مِنَ الدُّنْيَا، وَاَسْهَرْتُ لَيْلِيْ، وَاَظْمَأْتُ نَهَارِيْ، وَكَاَنِّيْ اَنْظُرُ إِلٰى عَرْشِ رَبِّيْ حِيْنَ يُجَاءُ بِهٖ وَكَاَنِّيْ اَنْظُرُ إِلٰى اَهْلِ الْجَنَّةِ يَتَزَاوَرُوْنَ فِيْهَا، وَكَاَنِّيْ اَسْمَعُ عُوَاءَ اَهْلِ النَّارِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مُؤْمِنٌ نُوِّرَ قَلْبُهُ. رواه عبد الرزاق في مصنفه، باب الايمان والاسلام ١١/١٢٩

33. हज़रत सालिह बिन मिस्मार और हज़रत जाफ़र बिन बुरक़ान रह० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत हारिस बिन मालिक ﷺ से पूछा : हारिस! तुम किस हाल में हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया : (अल्लाह के फ़ज़्ल से) मैं ईमान की हालत में हूं। आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या सच्चे मोमिन हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया, सच्चा मोमिन हूं। आपने फ़रमाया (सोच कर कहो!) हर चीज़ की एक हक़ीक़त होती है, तुम्हारे ईमान की क्या हक़ीक़त है? यानी तुमने किस बात की वजह से यह तय कर लिया कि मैं सच्चा मोमिन हूं। अ़र्ज़ किया : (मेरी बात की हक़ीक़त यह है) कि मैंने अपना दिल दुनिया से हटा लिया है, रात को जागता हूं, दिन को प्यासा रहता हूं यानी रोज़ा रखता हूं और जिस वक़्त मेरे रब का अ़र्श लाया जाएगा, उस मंज़र को गोया मैं देख

हा हूं। जन्नत वालों की आपस की मुलाक़ातों का मंज़र मेरी आंखों के सामने रहता है और गोया कि (मैं अपने कानों से) दोज़खियों की चीख़ व पुकार को सुन रहा हूं, यानी जन्नत और दोज़ख़ का तसव्वुर हर वक़्त रहता है। आप ﷺ ने (उनकी इस गुफ़्तगू को सुनकर) इर्शाद फ़रमायाः (हारिस) ऐसे मोमिन हैं जिनका दिल ईमान के नूर से रौशन हो चुका है। (मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

﴿ 34 ﴾ عَنْ مَاعِزٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ سُئِلَ أَيُّ الْأَعْمَالِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: إِيْمَانٌ بِاللهِ وَحْدَهُ، ثُمَّ الْجِهَادُ، ثُمَّ حَجَّةٌ بَرَّةٌ، تَفْضُلُ سَائِرَ الْعَمَلِ كَمَا بَيْنَ مَطْلَعِ الشَّمْسِ إِلَى مَغْرِبِهَا. رواه احمد ٣٤٢/٤

34. हज़रत माइज़ ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया गया कि आमाल में से कौनसा अमल सबसे अफ़ज़ल है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः (आमाल में सबसे अफ़ज़ल अमल) अल्लाह तआला पर ईमान लाना है, जो अकेले हैं, फिर जिहाद करना, फिर मक़बूल हज। इन आमाल और बाक़ी आमाल में फ़ज़ीलत का इतना फ़र्क़ है जितना कि मश्रिक़ व मग़रिब के दर्मियान फ़ासले का फ़र्क़ है। (मुस्नद अहमद)

﴿ 35 ﴾ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ذَكَرَ أَصْحَابُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ يَوْمًا عِنْدَهُ الدُّنْيَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَلَا تَسْمَعُوْنَ؟ إِنَّ الْبَذَاذَةَ مِنَ الْإِيْمَانِ، إِنَّ الْبَذَاذَةَ مِنَ الْإِيْمَانِ يَعْنِي: التَّقَحُّلَ. رواه ابو داؤد باب النهي عن كثير من الارفاه رقم: ٤١٦١

35. हज़रत अबू उमामा ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा ने एक दिन आप के सामने दुनिया का ज़िक्र किया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ग़ौर से सुनो, ध्यान दो। यक़ीनन सादगी ईमान का हिस्सा है, यक़ीनन सादगी ईमान का हिस्सा है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : इससे मुराद तकल्लुफ़ात और ज़ेब व ज़ीनत की चीज़ों को छोड़ना है।

﴿ 36 ﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ عَبَسَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: فَأَيُّ الْإِيْمَانِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: الْهِجْرَةُ، قَالَ: فَمَا الْهِجْرَةُ؟ قَالَ: تَهْجُرُ السُّوْءَ. (وهو بعض الحديث) رواه احمد ١١٤/٤

36. हज़रत अम्र बिन अ-ब-सा ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया : कौन-सा ईमान अफ़ज़ल है? इर्शाद फ़रमाया : वह ईमान जिसके

साथ हिजरत हो। उन्होंने दरयाफ़्त किया : हिजरत किया है? इर्शाद फ़रमाया, हिजरत यह है कि तुम बुराई को छोड़ दो। (मुस्नद अहमद)

﴿ 37 ﴾ عَنْ سُفْيَانَ بْنِ عَبْدِ اللهِ الثَّقَفِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! قُلْ لِي فِي الْإِسْلَامِ قَوْلًا لَا أَسْأَلُ عَنْهُ أَحَدًا بَعْدَكَ، وَفِي حَدِيْثِ أَبِي أُسَامَةَ: غَيْرَكَ، قَالَ: قُلْ آمَنْتُ بِاللهِ ثُمَّ اسْتَقِمْ. رواه مسلم، باب جامع اوصاف الاسلام، رقم: ١٥٩

37. हज़रत सुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह सक़फ़ी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझको इस्लाम की कोई ऐसी (जामेअ़) बात बता दीजिए कि आपके बताने के बाद फिर इस सिलसिले में मुझे किसी दूसरे से पूछने की ज़रूरत बाक़ी न रहे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम यह कहो कि मैं अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाया, फिर इस बात पर क़ायम रहो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : यानी अव्वल तो दिल से अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़तों पर ईमान लाओ, फिर अल्लाह तआ़ला और उनके रसूल ﷺ के हुक्मों पर अ़मल करो और यह ईमान व अ़मल वक़्ती न हो, बल्कि पुख़्तगी के साथ उस पर क़ायम रहो। (मज़ाहिरे हक़)

﴿ 38 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الْإِيْمَانَ لَيَخْلَقُ فِي جَوْفِ أَحَدِكُمْ كَمَا يَخْلَقُ الثَّوْبُ الْخَلِقُ فَاسْأَلُوا اللهَ أَنْ يُجَدِّدَ الْإِيْمَانَ فِي قُلُوْبِكُمْ. رواه الحاكم وقال هذا حديث لم يخرج في الصحيحين ورواته مصريون ثقات، وقد احتج مسلم في الصحيح، ووافقه الذهبي ٤/١

38. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान तुम्हारे दिलों में उसी तरह पुराना (और कमज़ोर) हो जाता है, जिस तरह कपड़ा पुराना हो जाता है। लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला से दुआ़ किया करो कि वह तुम्हारे दिलों में ईमान को ताज़ा रखें। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 39 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّ اللهَ تَجَاوَزَ لِي عَنْ أُمَّتِي مَا وَسْوَسَتْ بِهِ صُدُوْرُهَا مَا لَمْ تَعْمَلْ أَوْ تَكَلَّمْ. رواه البخاري، باب الخطاء والنسيان في العتاقة، رقم: ٢٥٢٨

39. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत के (उन) वस्वसों को माफ़ फ़रमा दिया है (जो ईमान

और यक़ीन के ख़िलाफ़ या गुनाह के बारे में उनके दिल में बग़ैर अख़्तियार के आयें) जब तक कि वह उन वस्वसों के मुताबिक़ अमल न कर लें या उनको ज़ुबान पर न लाएं। (बुख़ारी)

﴿ 40 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ نَاسٌ مِنْ اَصْحَابِ النَّبِیِّ ﷺ فَسَأَلُوْهُ: اِنَّا نَجِدُ فِیْ اَنْفُسِنَا مَا يَتَعَاظَمُ اَحَدُنَا اَنْ يَتَكَلَّمَ بِهٖ قَالَ: اَوَقَدْ وَجَدْتُمُوْهُ؟ قَالُوا: نَعَمْ، قَالَ: ذٰلِكَ صَرِيْحُ الْاِيْمَانِ. رواه مسلم، باب بيان الوسوسة في الايمان ..... رقم: ٣٤٠

40. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं, चन्द सहाबा ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : हमारे दिलों में बाज़ ऐसे ख़्यालात आते हैं कि उनको ज़ुबान पर लाना हम बहुत बुरा समझते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या वाक़ई तुम उन ख़्यालात को ज़ुबान पर लाना बुरा समझते हो? अर्ज़ किया : जी हां! आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यही तो ईमान है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : यानी जब ये वस्वसे व ख़्यालात तुम्हें इतने परेशान करते हैं कि उन पर यक़ीन रखना तो दूर की बात, उनको ज़ुबान पर लाना भी तुम्हें गवारा नहीं, तो यही तो ईमानी कमाल की निशानी है। (नववी)

﴿ 41 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَكْثِرُوا مِنْ شَهَادَةِ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ قَبْلَ اَنْ يُحَالَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهَا. رواه ابو يعلى باسناد جيد قوى، الترغيب ٢/٤١٦

41. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि *'ला इला-ह इल्लाह'* की गवाही कसरत से देते रहा करो, इससे पहले कि ऐसा वक़्त आए कि तुम इस कलिमा को (मौत या बीमारी वग़ैरह की वजह से) न कह सको।
(अबू याला, तर्ग़ीब)

﴿ 42 ﴾ عَنْ عُثْمَانَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَعْلَمُ اَنَّهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ. رواه مسلم، باب الدليل على ان من مات ..... ، رقم: ١٣٦

42. हज़रत उस्मान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स की मौत इस हाल में आए कि वह यक़ीन के साथ जानता हो कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह जन्नत में दाख़िल होगा। (मुस्लिम)

﴿ 43 ﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَعْلَمُ اَنَّ اللهَ حَقٌّ دَخَلَ الْجَنَّةَ. رواه ابو يعلى في مسنده ١/١٥٩

43. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसकी मौत इस हाल में आए कि वह इस बात का यक़ीन करता हो कि अल्लाह तआला (का वुजूद) हक़ है, वह जन्नत में जाएगा। (अबू याला)

﴿ 44 ﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : قَالَ اللهُ تَعَالٰى : إِنِّيْ أَنَا اللهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنَا مَنْ أَقَرَّ لِيْ بِالتَّوْحِيْدِ دَخَلَ حِصْنِيْ وَمَنْ دَخَلَ حِصْنِيْ أَمِنَ مِنْ عَذَابِيْ.

رواه الشيرازي وهو حديث صحيح، الجامع الصغير ٢/٢٤٣

44. हज़रत अली ﷺ से नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल किया गया है कि अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं ही अल्लाह हूं, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं जिसने मेरी तौहीद का इक़रार किया, वह मेरे क़िले में दाख़िल हुआ, और जो मेरे क़िले में दाख़िल हुआ, वह मेरे अज़ाब से महफ़ूज़ हुआ। (शीराज़ी, जामेअ् सग़ीर)

﴿ 45 ﴾ عَنْ مَكْحُوْلٍ رَحِمَهُ اللهُ يُحَدِّثُ قَالَ : جَاءَ شَيْخٌ كَبِيْرٌ هَرِمٌ قَدْ سَقَطَ حَاجِبَاهُ عَلٰى عَيْنَيْهِ فَقَالَ : يَا رَسُوْلَ اللهِ ! رَجُلٌ غَدَرَ وَفَجَرَ وَلَمْ يَدَعْ حَاجَةً وَلَا دَاجَةً إِلَّا اقْتَطَفَهَا بِيَمِيْنِهِ، لَوْ قُسِمَتْ خَطِيْئَتُهُ بَيْنَ أَهْلِ الْأَرْضِ لَأَوْبَقَتْهُمْ، فَهَلْ لَهُ مِنْ تَوْبَةٍ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : أَأَسْلَمْتَ؟ فَقَالَ : أَمَّا أَنَا فَأَشْهَدُ أَنْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : فَإِنَّ اللهَ غَافِرٌ لَكَ مَا كُنْتَ كَذٰلِكَ وَمُبَدِّلٌ سَيِّئَاتِكَ حَسَنَاتٍ فَقَالَ : يَا رَسُوْلَ اللهِ ! وَغَدَرَاتِيْ وَفَجَرَاتِيْ؟ فَقَالَ : وَغَدَرَاتُكَ وَفَجَرَاتُكَ، فَوَلّٰى الرَّجُلُ يُكَبِّرُ وَيُهَلِّلُ.

التفسير لابن كثير ٣/٣٤٠

45. हज़रत मकहूल रह० फ़रमाते हैं कि एक बहुत बूढ़ा शख़्स जिसकी दोनों भवें उसकी आखों पर आ पड़ी थीं, उसने आकर अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! एक ऐसा आदमी जिसने बहुत बदअ़हदी, बदकारी की और अपनी जायज़-नाजायज़ हर ख़्वाहिश पूरी की और उसके गुनाह इतने ज़्यादा हैं कि अगर तमाम ज़मीन वालों में तकसीम कर दिए जाएं तो वे सबको हलाक कर दें तो क्या उसके लिए तौबा की गुंजाइश है रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम मुसलमान हो चुके हो? उसने अ़र्ज़ किया, जी हां! मैं कलिमा शहादत—

'अश्हदु अल्लाह-इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अन्न-न मुम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू' का इक़रार करता हूं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तक तुम इस कलिमा के इक़रार पर रहोगे अल्लाह तआला

तुम्हारी तमाम बदअ़्हिदयां और बदकारियां माफ़ फ़रमाते रहेंगे और तुम्हारी बुराइयों को नेकियों से बदलते रहेंगे। उस बूढ़े ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! मेरी तमाम बदकारियां और बदअ़्हिदयां माफ़? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां, तुम्हारी तमाम बदअ़्हिदयां और बदकारियां माफ़ हैं। यह सुनकर वह बड़े मियां *अल्लाहु अकबर,* ला इला-ह इल्लल्लाह कहते हुए पीठ फेर कर (ख़ुशी-ख़ुशी) वापस चले गए। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

﴿ 46 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ اللهَ سَيُخَلِّصُ رَجُلاً مِنْ أُمَّتِيْ عَلَى رُؤُوْسِ الْخَلَائِقِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَنْشُرُ عَلَيْهِ تِسْعَةً وَتِسْعِيْنَ سِجِلاًّ، كُلُّ سِجِلٍّ مِثْلُ مَدِّ الْبَصَرِ ثُمَّ يَقُوْلُ: أَتُنْكِرُ مِنْ هٰذَا شَيْئًا؟ أَظَلَمَكَ كَتَبَتِي الْحَافِظُوْنَ؟ يَقُوْلُ: لَا يَارَبِّ! فَيَقُوْلُ: أَفَلَكَ عُذْرٌ؟ فَيَقُوْلُ: لَا يَارَبِّ! فَيَقُوْلُ: بَلٰى، إِنَّ لَكَ عِنْدَنَا حَسَنَةً فَإِنَّهُ لَا ظُلْمَ عَلَيْكَ الْيَوْمَ، فَيُخْرَجُ بِطَاقَةٌ فِيْهَا أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، فَيَقُوْلُ: أُحْضُرْ وَزْنَكَ، فَيَقُوْلُ: يَارَبِّ! مَا هٰذِهِ الْبِطَاقَةُ مَعَ هٰذِهِ السِّجِلَّاتِ؟ فَقَالَ: فَإِنَّكَ لَا تُظْلَمُ قَالَ: فَتُوْضَعُ السِّجِلَّاتُ فِيْ كِفَّةٍ وَالْبِطَاقَةُ فِيْ كِفَّةٍ فَطَاشَتِ السِّجِلَّاتُ وَثَقُلَتِ الْبِطَاقَةُ، وَلَا يَثْقُلُ مَعَ اسْمِ اللهِ شَيْءٌ

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء فيمن يموت...... رقم: ٢٦٣٩

46. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आस رضي الله عنه से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला मेरी उम्मत में से एक शख़्स को मुंतख़ब फ़रमा कर सारी मख़्लूक़ को रू-ब-रू बुलाएंगे और उसके सामने आमाल के निन्यान्वे दफ़्तर खोलेंगे। हर दफ़्तर हद्दे निगाह तक फैला हुआ होगा। इसके बाद उससे सवाल किया जाएगा कि इन आमालनामों में से तू किसी चीज़ का इंकार करता है? क्या मेरे उन फ़रिश्तों ने, जो आमाल लिखने पर तैनात थे, तुझ पर कुछ ज़ुल्म किया है (कि कोई गुनाह बग़ैर किए हुए लिख लिया हो या करने से ज़्यादा लिख दिया हो)? वह अ़र्ज़ करेगा : नहीं (न इंकार की गुंजाइश है, न फ़रिश्तों ने ज़ुल्म किया) फिर इर्शाद होगा : तेरे पास इन बदआमालियों का कोई उ़ज़्र है? वह अ़र्ज़ करेगा: कोई उ़ज़्र भी नहीं। इर्शाद होगा : अच्छा तेरी एक नेकी हमारे पास है, आज तुझ पर कोई ज़ुल्म नहीं। फिर काग़ज़ का एक पुरज़ा निकाला जाएगा जिसमें *'अश्हदुअल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न-न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू'* लिखा हुआ होगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : जा, उसको

अ़र्ज़ करेगा : इतने दफ़्तरों के मुक़ाबले में यह पुरज़ा क्या काम देगा? इर्शाद होगा : तुझ पर ज़ुल्म नहीं होगा। फिर उन सब दफ़्तरों को एक पलड़े में रख दिया जाएगा और काग़ज़ का यह पुरज़ा दूसरे पलड़े में, तो इस पुरज़े के वज़न के मुक़ाबले में दफ़्तरों वाला पलड़ा उड़ने लगेगा। (सच्ची बात यह है कि) अल्लाह तआ़ला के नाम के मुक़ाबले में कोई चीज़ वज़न ही नहीं रखती। (तिर्मिज़ी)

﴾ 47 ﴿ عَنْ اَبِیْ عَمْرَةَ الْاَنْصَارِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِیُّ ﷺ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَا یَلْقَی اللّٰهَ عَبْدٌ مُؤْمِنٌ بِهِمَا اِلَّا حَجَبَتْهُ عَنِ النَّارِ یَوْمَ الْقِیَامَةِ، وَفِیْ رِوَایَةٍ: لَا یَلْقَی اللّٰهَ بِهِمَا اَحَدٌ یَوْمَ الْقِیَامَةِ اِلَّا اُدْخِلَ الْجَنَّةَ عَلٰی مَا کَانَ فِیْهِ.

رواه احمد و الطبرانی فی الکبیر و الاوسط ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ١/١٦٥

47. हज़रत अबू अ़मरा अन्सारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो बन्दा यह गवाही दे कि "अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह तआ़ला का रसूल हूं" को लेकर अल्लाह तआ़ला से (क़ियामत के दिन) इस हाल में मिले कि वह उस पर (दिल से) यक़ीन रखता हो, तो यह कलिमा-ए- शहादत ज़रूर उसके लिए दोज़ख़ की आग से आड़ बन जाएगा। एक रिवायत में है कि जो शख़्स इन दोनों बातों (अल्लाह तआ़ला की वहदानियत और रसूलुल्लाह ﷺ की रिसालत) का इक़रार लेकर अल्लाह तआ़ला से क़ियामत के दिन मिलेगा वह जन्नत में दाख़िल किया जाएगा, ख़्वाह उसके (आमालनामा में) कितने ही गुनाह हों। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : शारेहीने हदीस व दीगर अहादीसे मुबारका की रौशनी में इस हदीस और इस-जैसी अहादीस का मतलब यह बतलाते हैं कि जो शहादतैन यानी अल्लाह तआ़ला की वहदानियत और रसूलुल्लाह ﷺ की रिसालत का इक़रार ले कर अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पहुंचेगा और उसके आमालनामा में गुनाह हुए तो भी अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत में ज़रूर दाख़िल फ़रमा देंगे। या तो अपने फ़ज़्ल से माफ़ फ़रमा कर या गुनाहों की सज़ा देकर। (मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴾ 48 ﴿ عَنْ عِتْبَانَ بْنِ مَالِكٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: لَا یَشْهَدُ اَحَدٌ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ فَیَدْخُلَ النَّارَ، اَوْ تَطْعَمَهُ.

(وهو بعض الحديث) رواه مسلم، باب الدليل على ان من مات ......رقم: ١٤٩

48. हज़रत इतबान बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐसा नहीं हो सकता कि कोई शख़्स इस बात की गवाही दे कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं (मुहम्मद ﷺ) अल्लाह तआ़ला का रसूल हूं, फिर वह जहन्नम में दाख़िल हो या दोज़ख़ की आग उसको खाए) (मुस्लिम)

﴿ 49 ﴾ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ شَهِدَ أَنْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ فَذَلَّ بِهَا لِسَانُهُ وَاطْمَأَنَّ بِهَا قَلْبُهُ لَمْ تَطْعَمْهُ النَّارُ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٤١/١

49. हज़रत अबू क़तादा ﷺ अपने वालिद से नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं : जिस शख़्स ने इस बात की गवाही दी कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं (मुहम्मद ﷺ) अल्लाह तआ़ला का रसूल हूं और उसकी ज़बान इस कलिमा (तैयिबा को कसरत) से (कहने की वजह से) मानूस हो गई हो और दिल को इस कलिमा (के कहने) से इत्मीनान मिलता हो, तो ऐसे शख़्स को जहन्नम की आग नहीं खाएगी। (बैहक़ी)

﴿ 50 ﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ نَفْسٍ تَمُوْتُ وَهِيَ تَشْهَدُ أَنْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَنِّي رَسُوْلُ اللهِ يَرْجِعُ ذٰلِكَ إِلٰى قَلْبِ مُوْقِنٍ إِلَّا غَفَرَ اللهُ لَهَا.

رواه احمد ٢٢٩/٥

50. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स की भी इस हाल में मौत आए कि वह पक्के दिल से गवाही देता हो कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह तआ़ला का रसूल हूं, अल्लाह तआ़ला उसकी ज़रूर मग़्फ़िरत फ़रमा देंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿ 51 ﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَمُعَاذٌ رَدِيْفُهُ عَلَى الرَّحْلِ قَالَ: يَا مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ! قَالَ: لَبَّيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ وَسَعْدَيْكَ، قَالَ يَا مُعَاذُ! قَالَ: لَبَّيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ وَسَعْدَيْكَ ثَلَاثًا قَالَ: مَا مِنْ أَحَدٍ يَشْهَدُ أَنْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ صِدْقًا مِنْ قَلْبِهِ إِلَّا حَرَّمَهُ اللهُ عَلَى النَّارِ. قَالَ يَا رَسُوْلَ اللهِ أَفَلَا أُخْبِرُ بِهِ النَّاسَ فَيَسْتَبْشِرُوْا؟ قَالَ: إِذًا يَتَّكِلُوْا، وَأَخْبَرَ بِهَا مُعَاذٌ عِنْدَ مَوْتِهِ تَأَثُّمًا.

رواه البخاري، باب من خص بالعلم قوما..... رقم: ١٢٨

51. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत मुआज़ (रज़ि0) से, जबकि वह आप के साथ एक ही कजावे पर सवार थे, फ़रमायाः मुआज़ बिन जबल! उन्होंने अ़र्ज़ किया :- (अल्लाह के रसूल मैं हाज़िर हूं)। रसूलुल्लाह ﷺ ने फिर फ़रमाया, मुआज़, उन्होंने अ़र्ज़ कियाः------------------ (अल्लाह के रसूल मैं हाज़िर हूं) रसूलुल्लाह ﷺ ने फिर फ़रमाया, मुआज़! उन्होंने अ़र्ज़ किया------------------ (अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं हाज़िर हूं)। तीन बार ऐसा हुआ। फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सच्चे दिल से शहादत दे कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं, तो अल्लाह तआ़ला ने दोज़ख़ पर ऐसे शख़्स को हराम कर दिया है। हज़रत मुआ़ज़ ﷺ ने (यह ख़ुशख़बरी सुनकर) अ़र्ज़ किया : क्या मैं लोगों को इसकी ख़बर न कर दूं ताकि वे ख़ुश हो जाएं? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फिर वे उसी पर भरोसा करके बैठ जाएंगे (अ़मल करना छोड़ देंगे)। हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं : हज़रत मुआ़ज़ ﷺ ने आख़िरकार इस ख़ौफ़ से कि (हदीस छुपाने का) गुनाह न हो अपने आख़िरी वक़्त में हदीस लोगों से ब्यान कर दी। (बुख़ारी)

फ़ायदा : जिन हदीसों में सिर्फ़------------------*'ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'* के इक़रार पर दोज़ख़ की आग का हराम होना मज़्कूर है। शारिहीन ने उन-जैसी अहादीस के दो मतलब ब्यान किए हैं। एक तो यह कि दोज़ख़ के अबदी अ़ज़ाब से नजात मुराद है, यानी कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन की तरह हमेशा उनको दोज़ख़ में नहीं रखा जाएगा, गो बुरे आमाल की सज़ा के लिए कुछ वक़्त दोज़ख़ में डाला जाए। दूसरा मतलब यह है कि *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* की शहादत पूरे इस्लाम को अपने अन्दर समेटे हुए है, जिसने सच्चे दिल से और सोच-समझ कर यह शहादत दी, उसकी ज़िन्दगी मुकम्मल तौर पर दीने इस्लाम के मुताबिक़ होगी। (मज़ाहिरे हक़)

﴿ 52 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِیُّ ﷺ: اَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِیْ یَوْمَ الْقِیَامَةِ مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ خَالِصًا مِنْ قِبَلِ نَفْسِهٖ.

(وهو بعض الحديث) رواه البخاري، باب صفة الجنة والنار، رقم: ٦٥٧٠

52. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः मेरी शफ़ाअ़त का सबसे ज़्यादा नफ़ा उठाने वाला वह शख़्स होगा जो अपने दिल के

खुलूस के साथ --------*'ला इला-ह इल्लल्लाह'* कहे। (बुख़ारी)

﴿ 53 ﴾ عَنْ رِفَاعَةَ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : اَشْهَدُ عِنْدَ اللهِ لَا يَمُوْتُ عَبْدٌ يَشْهَدُ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَاَنِّيْ رَسُوْلُ اللهِ صِدْقًا مِّنْ قَلْبِهٖ، ثُمَّ يُسَدِّدُ اِلَّا سَلَكَ فِي الْجَنَّةِ. (الحديث) رواه احمد ٤/١٦

53. हज़रत रिफ़ाअ: जुहनी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अल्लाह तआला के यहां इस बात की गवाही देता हूं कि जिस शख़्स की मौत इस हाल में आए कि वह सच्चे दिल से शहादत देता हो कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं (यानी हज़रत मुहम्मद ﷺ) अल्लाह तआला का रसूल हूं, फिर अपने आमाल को दुरुस्त रखता हो, वह ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा।

(मुस्नद अहमद)

﴿ 54 ﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ : اِنِّيْ لَاَعْلَمُ كَلِمَةً لَا يَقُوْلُهَا عَبْدٌ حَقًّا مِنْ قَلْبِهٖ فَيَمُوْتُ عَلٰى ذٰلِكَ اِلَّا حَرَّمَهُ اللهُ عَلَى النَّارِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٧٢

54. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मैं एक ऐसा कलिमा जानता हूं जिसे कोई बन्दा भी दिल से हक़ समझ कर कहे और इसी हालत पर उसकी मौत आए तो अल्लाह तआला उस पर ज़रूर जहन्नम की आग हराम फ़रमा देंगे, वह कलिमा *ला इला-ह इल्लल्लाह* है।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 55 ﴾ عَنْ عَيَاضٍ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ رَفَعَهُ قَالَ: اِنَّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ كَلِمَةٌ، عَلَى اللهِ كَرِيْمَةٌ، لَهَا عِنْدَ اللهِ مَكَانٌ، وَهِيَ كَلِمَةٌ مَنْ قَالَهَا صَادِقًا اَدْخَلَهُ اللهُ بِهَا الْجَنَّةَ وَمَنْ قَالَهَا كَاذِبًا حَقَنَتْ دَمَهُ وَاَحْرَزَتْ مَالَهُ وَلَقِيَ اللهَ غَدًا فَحَاسَبَهُ.

رواه البزار ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ١/١٧٤

55. हज़रत अयाज़ अन्सारी ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कलिमा *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* अल्लाह तआला के यहां बड़ी इज़्ज़त वाला क़ीमती कलिमा है। इसे अल्लाह तआला के यहां बड़ा रुत्बा व मक़ाम हासिल है। जो शख़्स इसे सच्चे दिल से कहेगा अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देंगे और जो इसे झूठे दिल से कहेगा, तो यह कलिमा (दुनिया में तो) उसकी जान

व माल की हिफ़ाज़त का ज़रिया बन जाएगा, लेकिन कल क़ियामत के दिन अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह तआला उससे बाज़पुर्स फ़रमाएंगे।

(बज़्ज़ार, मजमउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : झूठे दिल से कलिमा कहने पर जान व माल की हिफ़ाज़त होगी, क्योंकि यह शख़्स ज़ाहिरी तौर पर मुसलमान है, लिहाज़ा मुक़ाबला करने वाले काफ़िर की तरह न उसे क़त्ल किया जाएगा और न ही उसका माल लिया जाएगा।

﴿ 56 ﴾ عَنْ اَبِیْ بَکْرِ الصِّدِّیْقِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ النَّبِیُّ ﷺ : مَنْ شَھِدَ اَنْ لَآ اِلٰہَ اِلاَّ اللّٰہُ یُصَدِّقُ قَلْبُہٗ لِسَانَہٗ دَخَلَ مِنْ اَیِّ اَبْوَابِ الْجَنَّۃِ شَاءَ.

رواہ ابو یعلی ۱/۶۸

56. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* की गवाही इस तरह दी कि उसका दिल उसकी ज़बान की तस्दीक़ करता हो, तो वह जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए।

(मुस्नद अबू याला)

﴿ 57 ﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ النَّبِیُّ ﷺ : اَبْشِرُوْا وَبَشِّرُوْا مَنْ وَّرَاءَکُمْ اَنَّہٗ مَنْ شَھِدَ اَنْ لَآ اِلٰہَ اِلاَّ اللّٰہُ صَادِقًا بِھَا دَخَلَ الْجَنَّۃَ.

رواہ احمد والطبرانی فی الکبیر ورجالہ ثقات، مجمع الزوائد ۱/۴۰۱

57. हज़रत अबू मूसा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: ख़ुशख़बरी लो और दूसरों को भी ख़ुशख़बरी दे दो कि जो सच्चे दिल से *ला इला-ह इल्लल्लाह* का इक़रार करे, वह जन्नत में दाख़िल होगा।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मजमउज़्ज़वाइद)

﴿ 58 ﴾ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ : مَنْ شَھِدَ اَنْ لَآ اِلٰہَ اِلاَّ اللّٰہُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ مُخْلِصًا دَخَلَ الْجَنَّۃَ.

مجمع البحرین فی زوائد المعجمین ۱/۶۰ قال المحقق: صحیح لجمیع طرقہ

58. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: जो शख़्स इख़्लास के साथ इस बात की गवाही दे कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और उसके रसूल हैं, वह जन्नत में दाख़िल होगा।

﴾ 59 ﴿ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: دَخَلْتُ الْجَنَّةَ فَرَأَيْتُ فِيْ عَارِضَتَيِ الْجَنَّةِ مَكْتُوْبًا ثَلَاثَةَ أَسْطُرٍ بِالذَّهَبِ: السَّطْرُ الْأَوَّلُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ، وَالسَّطْرُ الثَّانِيْ مَا قَدَّمْنَا وَجَدْنَا وَمَا أَكَلْنَا رَبِحْنَا وَمَا خَلَّفْنَا خَسِرْنَا، وَالسَّطْرُ الثَّالِثُ أُمَّةٌ مُذْنِبَةٌ وَرَبٌّ غَفُوْرٌ. رواه الرافعي وابن النجار وهو حديث صحيح، الجامع الصغير ٤٥٢١

59. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो मैंने जन्नत के दोनों तरफ़ तीन सतरें सोने के पानी से लिखी हुई देखीं। पहली सतर ---------------*'ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'*। दूसरी सतर ''जो हमने आगे भेज दिया यानी सदक़ा वग़ैरह कर दिया, उसका सवाब हमें मिल गया और जो दुनिया में हमने खा पी लिया उसका हमने नफ़ा उठा लिया और जो कुछ हम छोड़ आए, उसमें हमें नुक़सान हुआ''। तीसरी सतर ''उम्मत गुनहगार है और रब बख़्शने वाला है।'' (राफ़ई, इब्नुन्नज्जार)

﴾ 60 ﴿ عَنْ عِتْبَانَ بْنِ مَالِكٍ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَنْ يُوَافِيَ عَبْدٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَقُوْلُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ يَبْتَغِيْ بِهَا وَجْهَ اللهِ إِلَّا حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِ النَّارَ.

رواه البخاري، باب العمل الذي يبتغى به وجه الله تعالى، رقم ٦٤٢٣

60. हज़रत इतबान बिन मालिक अन्सारी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स क़ियामत के दिन *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* को इस तरह से कहता हुआ आए कि इस कलिमा के ज़रिए अल्लाह तआला ही की रज़ामन्दी चाहता हो अल्लाह तआला उस पर दोज़ख़ की आग को ज़रूर हराम फ़रमा देंगे। (बुख़ारी)

﴾ 61 ﴿ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ فَارَقَ الدُّنْيَا عَلَى الْإِخْلَاصِ لِلّٰهِ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيْتَاءِ الزَّكَاةِ، فَارَقَهَا وَاللهُ عَنْهُ رَاضٍ. رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٢/٣٣٢

61. हज़रत अनस ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं : जो शख़्स दुनिया से इस हाल में रुख़सत हुआ कि वह अल्लाह तआला के लिए मुख़लिस था, जो अकेले हैं, जिनका कोई शरीक नहीं है और (अपनी ज़िन्दगी में) नमाज़ क़ायम करता रहा, (और अगर साहिबे माल था, तो) ज़कात देता रहा, तो वह शख़्स इस हाल में रुख़सत हुआ कि अल्लाह तआला उससे राज़ी थे। (मुस्तदरक हाकिम)

फ़ायदा : अल्लाह तआला के लिए मुख़लिस होने से मुराद यह है कि दिल से फ़रमांबरदारी अख़्तियार की हो ।

﴾ 62 ﴿ عَنْ أَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: قَدْ أَفْلَحَ مَنْ أَخْلَصَ قَلْبَهُ لِلْإِيْمَانِ وَجَعَلَ قَلْبَهُ سَلِيْمًا وَلِسَانَهُ صَادِقًا وَنَفْسَهُ مُطْمَئِنَّةً وَخَلِيْقَتَهُ مُسْتَقِيْمَةً وَجَعَلَ أُذُنَهُ مُسْتَمِعَةً وَعَيْنَهُ نَاظِرَةً. (الحديث) رواه احمد ١٤٧/٥

62. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: यक़ीनन वह शख़्स कामयाब हो गया जिसने अपने दिल को ईमान के लिए ख़ालिस कर लिया और अपने दिल को (कुफ़्र व शिर्क) से पाक कर लिया, अपनी ज़ुबान को सच्चा रखा, अपने नफ़्स को मुतमइन बनाया (कि उसको अल्लाह की याद से और उसकी मरज़ीयात पर चलने से इत्मीनान मिलता हो), अपनी तबीयत को दुरुस्त रखा (कि वह बुराई की तरफ़ न चलती हो), अपने कान को हक़ सुनने वाला बनाया और अपनी आंख को (ईमान की निगाह से) देखने वाला बनाया। (मुस्नद अहमद)

﴾ 63 ﴿ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ لَقِيَ اللهَ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَمَنْ لَقِيَهُ يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا دَخَلَ النَّارَ.

رواه مسلم، باب الدليل على من مات ......رقم: ٢٧٠

63. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अल्लाह तआला से इस हाल में मिले कि उसके साथ किसी को शरीक न ठहराता हो, वह जन्नत में दाख़िल होगा और जो शख़्स अल्लाह तआला से इस हाल में मिले कि वह उसके साथ किसी को शरीक ठहराता हो, वह दोज़ख़ में दाख़िल होगा। (मुस्लिम)

﴾ 64 ﴿ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ مَاتَ لَا يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا فَقَدْ حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِ النَّارَ. عمل اليوم والليلة للنسائي، رقم: ١١٢٩

64. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स की मौत इस हाल में आई कि वह अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो, तो यक़ीनन अल्लाह तआला ने उस पर दोज़ख़ की आग हराम कर दी। (अ-म-लुल यौम वल्लैल:)

﴿ 65 ﴾ عَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ مَاتَ وَهُوَ لَا يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا فَقَدْ حَلَّتْ لَهُ مَغْفِرَتُهُ.

رواه الطبراني في الكبير واسناده لا بأس به، مجمع الزوائد ١٦٤/١

65. हज़रत नव्वास बिन समआन ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिसकी मौत इस हाल में आई कि उसने अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराया हो, तो यक़ीनन उसके लिए मग़फ़िरत ज़रूरी हो गई। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 66 ﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَا مُعَاذُ! هَلْ سَمِعْتَ مُنْذُ اللَّيْلَةِ حِسًّا؟ قُلْتُ: لَا، قَالَ: إِنَّهُ أَتَانِيْ آتٍ مِنْ رَبِّيْ، فَبَشَّرَنِيْ أَنَّهُ مَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِيْ لَا يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ، قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَفَلَا أَخْرُجُ إِلَى النَّاسِ فَأُبَشِّرُهُمْ، قَالَ: دَعْهُمْ فَلْيَسْتَبِقُوا الصِّرَاطَ. رواه الطبراني في الكبير ٥٩/٢٠

66. हज़रत मुआज़ ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुमने रात कोई आहट सुनी? मैंने अर्ज़ किया : नहीं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे पास मेरे रब की तरफ़ से एक फ़रिश्ता आया। उसने मुझे यह ख़ुशख़बरी दी कि मेरी उम्मत में से जिस शख़्स की मौत इस हाल में आए कि वह अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो, वह जन्नत में दाख़िल होगा। मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या मैं लोगों के पास जाकर यह ख़ुशख़बरी न सुना दूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उन्हें अपने हाल पर रहने दो, ताकि (आमाल के) रास्ते में एक दूसरे से आगे बढ़ते रहें। (तबरानी)

﴿ 67 ﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَا مُعَاذُ! أَتَدْرِيْ مَا حَقُّ اللهِ عَلَى الْعِبَادِ وَمَا حَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللهِ؟ قَالَ قُلْتُ: اللهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ قَالَ: فَإِنَّ حَقَّ اللهِ عَلَى الْعِبَادِ أَنْ يَّعْبُدُوا اللهَ وَلَا يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، وَحَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ أَنْ لَا يُعَذِّبَ مَنْ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا. (الحديث) رواه مسلم، باب الدليل على ان من مات ...... رقم: ١٤٤

67. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुआज़! तुम जानते हो कि बन्दों पर अल्लाह तआला का क्या हक़ है? और अल्लाह तआला पर बन्दों का क्या हक़ है? मैंने अर्ज़ किया : अल्लाह तआला और उनके रसूल ज़्यादा जानते हैं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दों पर अल्लाह

तआ़ला का हक़ यह है कि उसकी इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक न करें और अल्लाह तआ़ला पर बन्दों का हक़ यह है कि जो बन्दा उसके साथ किसी को शरीक न करे, उसे अ़ज़ाब न दे। (मुस्लिम)

﴿ 68 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ لَقِيَ اللهَ لاَ يُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا وَلَا يَقْتُلُ نَفْسًا لَقِيَ اللهَ وَهُوَ خَفِيْفُ الظَّهْرِ.

رواه الطبراني في الكبير وفي اسناده ابن لهيعة، مجمع الزوائد ١٦٧/١

68. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिले कि उसने अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न ठहराया हो और न किसी को क़त्ल किया हो तो वह अल्लाह तआ़ला के दरबार में (इन दो गुनाहों का बोझ न होने की वजह से) हलका- फुल्का हाज़िर होगा। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 69 ﴾ عَنْ جَرِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ مَاتَ لَا يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا وَلَمْ يَتَنَدَّ بِدَمٍ حَرَامٍ اُدْخِلَ مِنْ اَيِّ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ شَاءَ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ١٦٥/١

69. हज़रत जरीर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स की मौत इस हाल में आए कि वह अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो और किसी के नाहक़ ख़ून में हाथ न रंगे हों, तो वह जन्नत के दरवाज़ों में से जिस दरवाज़े से चाहेगा दाख़िल कर दिया जाएगा। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

بسم الله الرحمن الرحيم

ग़ैब की बातों पर ईमान

अल्लाह तआला पर और तमाम ग़ैबी उमूर पर ईमान लाना और हज़रत मुहम्मद ﷺ की हर ख़बर को मुशाहदा के बग़ैर महज़ उनके एतिमाद पर यक़ीनी तौर पर मान लेना और उनकी ख़बर के मुक़ाबले में फ़ानी लज़्ज़तों, इन्सानी मुशाहदों और माद्दी तजुर्बों को छोड़ देना।

अल्लाह तआला, उसकी सिफ़ाते आलिया, उसके रसूल और तक़दीर पर ईमान

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ﴾

[البقرة: ١٧٧]

(जब यहूद व नसारा ने कहा कि हमारा और मुसलमानों का क़िबला एक है तो हम अज़ाब के मुस्तहिक़ कैसे हो सकते हैं? तो इस ख़्याल की तरदीद में

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया) कोई यही नेकी (व कमाल) नहीं कि तुम अपने मुंह मश्रिक़ की तरफ़ करो या मग़रिब की तरफ़, बल्कि नेकी तो यह है कि कोई शख़्स अल्लाह तआला (की ज़ात व सिफ़ात) पर यक़ीन रखे और (इसी तरह) आख़िरत के दिन पर, फ़रिश्तों पर, तमाम आसमानी किताबों और नबियों पर यक़ीन रखे और माल की मुहब्बत और अपनी हाजत के बावजूद, रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों, मुसाफ़िरों, सवाल करने वालों और गुलामों को आज़ाद कराने में माल दे और नमाज़ की पाबन्दी करे और ज़कात भी अदा करे और इन अक़ीदों और आमाल के साथ, उनके ये अख़्लाक़ भी हों कि जब ये किसी जायज़ काम का अ़हद कर लें तो इस अ़हद को पूरा करें। और वे तंगदस्ती में, बीमारी में और लड़ाई के सख़्त वक़्त में मुस्तक़िल मिज़ाज रहने वाले हों। यही वे लोग हैं जो सच्चे हैं; और यही वे लोग हैं जिनको मुत्तक़ी कहा जा सकता है। (बक़र: 177)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ط هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ
يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ﴾ (فاطر: ٣)

अल्लाह तआला का इर्शाद है : लोगो! अल्लाह तआला के उन एहसानात को याद करो जो अल्लाह तआला ने तुम पर किए हैं। ज़रा सोचो तो सही, अल्लाह तआला के अलावा भी कोई ख़ालिक़ है जो तुम को आसमान व ज़मीन से रोज़ी पहुंचाता हो, उसके सिवा कोई हक़ीक़ी माबूद नहीं। फिर अल्लाह तआला को छोड़ कर तुम कहां चले जा रहे हो? (फ़ातिर : 3)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ط
وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ج وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ﴾ [الانعام: ١٠١]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : वह आसमानों और ज़मीन को बग़ैर नमूने के पैदा करने वाले हैं, उनकी कोई औलाद कहां हो सकती है, जबकि उनकी कोई बीवी ही नहीं और अल्लाह तआला ही ने हर चीज़ को पैदा किया है और वही हर चीज़ को जानते हैं। (अन्आम : 101)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗ اَمْ نَحْنُ الْخَالِقُوْنَ﴾

[الواقعة: ٥٨، ٥٩]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : अच्छा यह तो बताओ कि जो मनी तुम औरतों के रिहम में पहुंचाते हो, क्या तुम उससे इंसान बनाते हो या हम बनाने वाले हैं? (वाक़िअः 58-59)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ○ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴾

[الواقعة: ٦٣، ٦٤]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : अच्छा फिर यह तो बताओ कि ज़मीन में जो बीज तुम डालते हो उसे तुम उगाते हो, या हम उसके उगाने वाले हैं? (वाक़िअः 63-64)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿ اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِیْ تَشْرَبُوْنَ ○ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ○ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْ لَا تَشْكُرُوْنَ ○ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِیْ تُوْرُوْنَ ○ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُوْنَ ﴾ [الواقعة: ٦٨-٧٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : अच्छा फिर यह तो बताओ कि जो पानी तुम पीते हो, उसको बादलों से तुम ने बरसाया, या हम उसके बरसाने वाले हैं। अगर हम चाहें तो उस पानी को कड़वा कर दें। तुम क्यों शुक्र नहीं करते? अच्छा फिर यह तो बताओ कि जिस आग को तुम सुलगाते हो, उसके ख़ास दरख़्त को (और इसी तरह जिन ज़रियों से यह आग पैदा होती है, उनको) तुमने पैदा किया या हम उसके पैदा करने वाले हैं। (वाक़िअः 68-72)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿ اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰی ط يُخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَیِّ ط ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰی تُؤْفَكُوْنَ ○ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ج وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ط ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ○ وَهُوَ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِیْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ط قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ○ وَهُوَ الَّذِیْ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ط قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ○ وَهُوَ الَّذِیْ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ج فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَیْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ج وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ لا وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ط اُنْظُرُوْٓا اِلٰی ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ط اِنَّ فِیْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴾ [الانعام: ٩٥-٩٩]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : बेशक अल्लाह तआला बीज और गुठली को फाड़ने वाले हैं। वही जानदार को बेजान से निकालते हैं और वही बेजान को जानदार से निकालते हैं। वही तो अल्लाह हैं, जिनकी ऐसी क़ुदरत है, फिर तुम अल्लाह तआला को छोड़कर कहां उसके ग़ैर की तरफ़ चले जा रहे हो? वही अल्लाह सुबह को रात से निकालने वाले हैं और उसने रात को आराम के लिए बनाया और उसने सूरज और चांद की रफ़्तार को हिसाब से रखा, और उनकी रफ़्तार का हिसाब ऐसी ज़ात की तरफ़ से मुक़र्रर है जो बड़ी क़ुदरत और बड़े इल्म वाले हैं और उसने तुम्हारे फ़ायदे के लिए सितारे बनाए हैं, ताकि तुम उनके ज़रिए से रात के अंधेरों में, ख़ुश्की और दरिया में रास्ता मालूम कर सको और हमने ये निशानियां ख़ूब खोल-खोल कर ब्यान कर दीं उन लोगों के लिए, जो भले और बुरे की समझ रखते हैं।

और अल्लाह तआला वही हैं जिन्होंने तुम को अस्ल के एतिबार से एक ही इंसान से पैदा किया, फिर कुछ अर्सा के लिए तुम्हारा ठिकाना ज़मीन है, फिर तुम्हें क़ब्र के हवाले कर दिया जाता है। बेशक हमने ये दलीलें भी खोल कर ब्यान कर दीं उन लोगों के लिए जो सूझ-बूझ रखते हैं।

और वही अल्लाह तआला हैं जिन्होंने आसमान से पानी उतारा और एक ही पानी से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के नबातात को ज़मीन से निकाला। फिर हमने उससे सब्ज़ खेती निकाली, फिर उस खेती से हम ऐसे दाने निकालते हैं जो ऊपर तले होते हैं और खजूर की शाख़ों में से ऐसे गुच्छे निकालते हैं जो फल के बोझ की वजह से झुके हुए होते हैं और फिर उसी एक पानी से अंगूर के बाग़ और ज़ैतून और अनार के दरख़्त पैदा किए, जिनके फल रंग, सूरत, ज़ाइक़ा में एक दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं और बाज़ एक दूसरे से नहीं भी मिलते। ज़रा हर एक फल में ग़ौर तो करो, जब वह फल लाता है कि बिल्कुल कच्चा और बदमज़ा और फिर उसके पकने में भी ग़ौर करो कि उस वक़्त तमाम सिफ़ात में कामिल होता है। बेशक यक़ीन वालों के लिए उन चीज़ों में बड़ी निशानियां हैं। (अन्आम : 95-99)

وَقَالَ تَعَالٰى : ﴿فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ﴾ [الجاثية:٣٦،٣٧]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : तमाम ख़ूबियां अल्लाह तआला ही के लिए

हैं जो आसमानों के रब हैं और ज़मीनों के भी रब हैं और तमाम जहानों के रब हैं। और आसमानों और ज़मीन में हर क़िस्म की बड़ाई उन्हीं के लिए है। वही ज़बरदस्त और हिकमत वाले हैं। (जासियः 36-37)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۡ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۡ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾ [آل عمران:٢٦/٢٧]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप यूं कहा कीजिए कि ऐ अल्लाह, ऐ तमाम सलतनत के मालिक, आप मुल्क का जितना हिस्सा जिसको देना चाहें दे देते हैं और जिससे चाहें छीन लेते हैं और आप जिसको चाहें इज़्ज़त अता करें और जिसको चाहें ज़लील कर दें, हर क़िस्म की भलाई आप ही के एख़्तियार में है। बेशक आप हर चीज़ पर पूरी तरह क़ादिर हैं। आप रात को दिन में दाख़िल करते हैं और आप ही दिन को रात में दाख़िल करते हैं, यानी आप बाज़ मौसमों में रात के कुछ हिस्से को दिन में दाख़िल कर देते हैं, जिससे दिन बड़ा होने लगता है और बाज़ मौसमों में दिन के हिस्से को रात में दाख़िल कर देते हैं जिससे रात बड़ी हो जाती है और आप जानदार चीज़ को बेजान से निकालते हैं और बेजान चीज़ को जानदार से निकालते हैं और आप जिसको चाहें बेशुमार रिज़्क़ अता फ़रमाते हैं।

(आले इमरान : 26.27)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ط وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ط وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ○ وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ع ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ﴾

[الانعام: ٥٩، ٦٠]

अल्लाह का इर्शाद है : और ग़ैब के तमाम ख़ज़ाने अल्लाह तआला ही के पास हैं, उन ख़ज़ानों को अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता, और वह

ख़ुश्की और तरी की तमाम चीज़ों को जानते हैं, और दरख़्त से कोई पत्ता गिरने वाला ऐसा नहीं जिसको वह न जानते हों, और ज़मीन की तारीकियों में जो कोई बीज भी पड़ता है, वह उसको जानते हैं और हर तर और ख़ुश्क चीज़ पहले से अल्लाह तआला के यहां लौहे महफ़ूज़ में लिखी जा चुकी है और वह अल्लाह तआला ही हैं जो रात में तुमको सुला देते हैं और जो कुछ तुम दिन में कर चुके हो उसको जानते हैं फिर (अल्लाह तआला ही) तुमको नींद से जगा देते हैं, ताकि ज़िन्दगी की मुक़र्ररः मुद्दत पूरी की जाए। आख़िरकार तुम सबको उन्हीं की तरफ़ वापस जाना है, वह तुम को उन आमाल की हक़ीक़त से आगाह कर देंगे जो तुम किया करते थे।

(अन्आम : 59-60)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ﴾ [الانعام: ١٤]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप उनसे कहिए, क्या मैं अल्लाह तआला के सिवा किसी और को अपना मददगार बना लूं जो आसमानों और ज़मीन के ख़ालिक़ हैं, और वही सबको खिलाते हैं और उन्हें कोई नहीं खिलाता (कि वह ज़ात उन हाजतों से पाक है)। (अन्आमः 14)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ﴾ [الحجر: ٢١]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : हमारे पास हर चीज़ के ख़ज़ाने के ख़ज़ाने भरे पड़े हैं, मगर फिर हम हिकमत से हर चीज़ को एक मुऐयन मिक़दार से उतारते रहते हैं। (हजर : 21)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا﴾ [النساء: ١٣٩]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : क्या ये लोग काफ़िरों के पास इज़्ज़त तलाश करते हैं, तो याद रखें कि इज़्ज़त तो सारी की सारी अल्लाह तआला के क़ब्ज़े में है। (निसा : 139)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ﴾ [العنكبوت: ٦٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और कितने ही जानवर ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी जमा करके नहीं रखते। अल्लाह तआला ही उनको भी उनके मिक़दार की रोज़ी पहुंचाते हैं और तुम्हें भी, और वही सबकी सुनते हैं और सबको जानते हैं। (अंकबूत : 60)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ط اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ﴾

[الانعام: ٤٦]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इर्शाद फ़रमाया : आप उनसे फ़रमाइये कि ज़रा यह तो बताओ, अगर तुम्हारी बदअमली पर अल्लाह तआला तुम्हारे सुनने और देखने की सलाहियत तुम से छीन लें और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दें (कि फिर किसी बात को समझ न सको) तो क्या अल्लाह तआला के सिवा कोई और ज़ात इस कायनात में है जो तुम को ये चीज़ें दोबारा लौटा दे। आप देखिए तो हम किस तरह मुख़्तलिफ़ पहलुओं से निशानियां ब्यान करते हैं, फिर भी ये लोग बे-रुख़ी करते हैं।

(अन्आम : 46)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ط اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ○ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ط اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ﴾

[القصص: ٧١، ٧٢]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप उनसे पूछिए, भला यह तो बताओ कि अगर अल्लाह तआला तुम पर हमेशा क़ियामत के दिन तक रात ही रहने दें, तो अल्लाह तआला के सिवा वह कौन-सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रौशनी ले आए, क्या तुम सुनते नहीं? आप उनसे यह भी पूछिए कि यह तो बताओ, अगर अल्लाह तआला तुम पर हमेशा क़ियामत के दिन तक दिन ही रहने दें तो अल्लाह तआला के सिवा वह कौन-सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रात ले आए, ताकि तुम उसमें आराम करो। क्या तुम देखते नहीं? (क़सस : 71-72)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۝ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ﴾ [الشورى: ٣٢-٣٤]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और उसकी क़ुदरत की निशानियों में से समुन्दर में पहाड़-जैसे जहाज़ हैं, अगर वे चाहें तो हवा को ठहरा दें और वे जहाज़ समुन्दर की सतह पर खड़े के खड़े रह जाएं। बेशक इसमें क़ुदरत पर दलालत के लिए हर साबिर व शाकिर मोमिन के लिए निशानियां हैं। या अगर वे चाहें तो हवा चलाकर उन जहाज़ों के सवारों को उनके बुरे आमाल की वजह से तबाह कर दें और बहुत-सों से तो दरगुज़र ही फ़रमा देते हैं। (शूरा : 32-34)

رَقَالَ تَعَالٰى : ﴿وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ۭ يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ﴾ [سبا: ١٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और हमने दाऊद ﷺ को अपनी तरफ़ से बड़ी नेमत दी थी। चुनांचे हमने पहाड़ों को हुक्म दिया था कि दाऊद ﷺ के साथ मिल कर तस्बीह किया करो। और यही हुक्म परिंदों को दिया था। और हमने उनके लिए लोहे को मोम की तरह नर्म कर दिया था। (सबा :10)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۣ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۤ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ﴾ [القصص: ٨١]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : हमने क़ारून की शरारतों की वजह से उसको अपने महल समेत ज़मीन में धंसा दिया। फिर उसकी मदद के लिए कोई जमाअत भी खड़ी नहीं हुई जो अल्लाह तआला के अज़ाब से उसको बचा लेती और न वह अपने आप को ख़ुद ही बचा सका। (क़सस : 81)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۭ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ﴾ [الشعراء: ٦٣]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : फिर हमने मूसा को हुक्म दि या कि अपनी लाठी को दरिया पर मारें। चुनांचे लकड़ी मारते ही दरीया फट गया (और वह

फट कर कई हिस्से हो गया गोया कई सड़कें खुल गई) और हर हिस्सा इतना बड़ा था जैसे बड़ा पहाड़।

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ﴾ [القمر: ٥٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और हमारा हुक्म तो बस एक मर्तबा कह देने से पलक झपकने की तरह पूरा हो जाता है। (क़मर : 50)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ﴾ [الأعراف: ٥٤]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : उसी का काम है पैदा करना और उसी का हुक्म चलता है। (आराफ़ : 54)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهُ﴾ [الأعراف: ٥٩]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (हर नबी ने आकर अपनी क़ौम को एक ही पैग़ाम दिया कि अल्लाह तआला ही की इबादत करो) उनके सिवा कोई ज़ात भी इबादत के लायक़ नहीं। (आराफ़ : 59)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللهِ ط إِنَّ اللهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ﴾ [لقمان: ٢٧]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (उस ज़ात पाक की ख़ूबियां इस कसरत से हैं कि) अगर जितने दरख़्त ज़मीन भर में हैं उनसे क़लम तैयार किए जाएं और ये जो समुन्दर हैं उनको और इनके अलावा मज़ीद सात समुन्दरों को उन क़लमों के लिए बतौर स्याही के इस्तेमाल किया जाए और फिर उन क़लमों और स्याही से अल्लाह तआला के कमालात लिखने शुरू किए जाएं, तो सब क़लम और स्याही ख़त्म हो जाएं लेकिन अल्लाह तआला के कमालों का ब्यान पूरा न होगा। बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त और हिकमत वाले हैं। (लुक़मान : 27)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ لَّنْ يُّصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللهُ لَنَا ج هُوَ مَوْلٰنَا ج وَعَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ﴾ [التوبة: ٥١]

अल्लाह तआला ने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप फ़रमा दीजिए कि हमें जो चीज़ भी पेश आएगी वह अल्लाह तआला के हुक्म से ही पेश

आएगी। वही हमारे आक़ा और मौला हैं (लिहाज़ा इस मुसीबत में भी हमारे लिए कोई बेहतरी होगी) और मुसलमानों को चाहिए कि सिर्फ़ अल्लाह तआला पर भरोसा करें। (तौबा : 51)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۚ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهِ ۚ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ﴾

[يونس: ١٠٧]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और अगर अल्लाह तआला तुमको कोई तकलीफ़ पहुंचाएं तो उनके सिवा उसको दूर करने वाला कोई नहीं है और अगर वह तुम को कोई राहत पहुंचाना चाहें तो उनके फ़ज़्ल को कोई फेरने वाला नहीं, बल्कि वह अपना फ़ज़्ल अपने बन्दों में से जिसको चाहते हैं पहुंचाते हैं। वह बड़ी मग़्फ़िरत करने वाले और निहायत मेहरबान हैं। (यूनुस : 107)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 70 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا أَنَّ جِبْرِيلَ قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: حَدِّثْنِي مَا الْإِيْمَانُ؟ قَالَ: الْإِيْمَانُ أَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّيْنَ وَتُؤْمِنَ بِالْمَوْتِ وَبِالْحَيَاةِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَتُؤْمِنَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّارِ وَالْحِسَابِ وَالْمِيْزَانِ وَتُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ كُلِّهِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ قَالَ: فَإِذَا فَعَلْتُ ذٰلِكَ فَقَدْ آمَنْتُ؟ قَالَ: إِذَا فَعَلْتَ ذٰلِكَ فَقَدْ آمَنْتَ

(وهو قطعة من حديث طويل)، رواه احمد ٣١٩/١

70. हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया, मुझे बताइए ईमान क्या है? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान (की तफ़्सील) यह है कि तुम अल्लाह तआला, आख़िरत के दिन, फ़रिश्तों, अल्लाह तआला की किताबों और नबियों पर ईमान लाओ। मरने और मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने पर ईमान लाओ। जन्नत, दोज़ख़, हिसाब और आमाल के तराज़ू पर ईमान लाओ। अच्छी और बुरी तक़दीर पर ईमान लाओ। हज़रत जिबरील عليه السلام ने अर्ज़ किया : जब मैं इन तमाम बातों पर ईमान ले आया तो (क्या) मैं ईमान वाला हो गया? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम इन चीज़ों पर ईमान

ले आए तो तुम ईमान वाले बन गए। (मुस्नद अहमद)

﴿ 71 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اَلْاِیْمَانُ اَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰهِ وَمَلاَئِکَتِهٖ، وَبِلِقَائِهٖ، وَرُسُلِهٖ، وَتُؤْمِنَ بِالْبَعْثِ.

(الحدیث) رواہ البخاری، باب سؤال جبریل علیہ السلام النبی ﷺ ..... رقم: ٥٠

71. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमया : ईमान यह है कि तुम अल्लाह तआला को, उसके फ़रिश्तों को और (आख़िरत में) अल्लाह तआला से मिलने को और उसके रसूलों को हक़ जानो और हक़ मानो (और मरने के बाद दोबारा) उठाए जाने को हक़ जानो, हक़ मानो। (बुख़ारी)

﴿ 72 ﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِیَّ ﷺ یَقُوْلُ: مَنْ مَاتَ یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ، قِیْلَ لَهُ اُدْخُلْ مِنْ اَیِّ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ الثَّمَانِیَةِ شِئْتَ.

رواہ احمد وفی اسنادہ شہر بن حوشب وقد وثق مجمع الزوائد ١/١٨٢

72. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स की मौत इस हाल में आए कि वह अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता हो, उससे कहा जाएगा कि तुम जन्नत के आठ दरवाज़ों में से जिससे चाहो, दाख़िल हो जाओ। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 73 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ لِلشَّیْطَانِ لَمَّةً بِابْنِ آدَمَ وَلِلْمَلَکِ لَمَّةً، فَاَمَّا لَمَّةُ الشَّیْطَانِ فَاِیْعَادٌ بِالشَّرِّ وَتَکْذِیْبٌ بِالْحَقِّ، وَاَمَّا لَمَّةُ الْمَلَکِ فَاِیْعَادٌ بِالْخَیْرِ وَتَصْدِیْقٌ بِالْحَقِّ، فَمَنْ وَجَدَ ذٰلِکَ فَلْیَعْلَمْ اَنَّهُ مِنَ اللّٰهِ فَلْیَحْمَدِ اللّٰهَ، وَمَنْ وَجَدَ الْاُخْرٰی فَلْیَتَعَوَّذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ ثُمَّ قَرَاَ: ﴿ اَلشَّیْطٰنُ یَعِدُکُمُ الْفَقْرَ وَیَاْمُرُکُمْ بِالْفَحْشَآءِ ﴾ الْآیَةَ.

رواہ الترمذی وقال: ھذا حدیث حسن صحیح غریب، باب ومن سورة البقرة، رقم: ٢٩٨٨

73. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इंसान के दिल में एक ख़्याल तो शैतान की तरफ़ से आता है और एक ख़्याल फ़रिश्ते की तरफ़ से आता है। शैतान की तरफ़ से आने वाला ख़्याल यह होता है कि वह बुराई पर और हक़ को झुठलाने पर उभारता है। फ़रिश्ते की तरफ़ से आने वाला ख़्याल यह होता है कि वह नेकी और हक़ की तस्दीक़ पर उभारता है।

लिहाज़ा जो शख़्स अपने अन्दर नेकी और हक़ की तस्दीक़ का ख़्याल पाए, उसको समझना चाहिए कि यह अल्लाह तआला की तरफ़ से (हिदायत) है और उस पर उसको शुक्र करना चाहिए और जो शख़्स अपने अन्दर दूसरी कैफ़ियत (शैतानी ख़्याल) पाए तो उसको चाहिए कि शैतान मरदूद से अल्लाह तआला की पनाह मांगे। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने क़ुरआन करीम की आयत तिलावत फ़रमाई जिस का तर्जुमा यह है *"शैतान तुम्हें फ़क्र से डराता है और गुनाह के लिए उकसाता है"*।(तिर्मिज़ी)

﴿ 74 ﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَجِلُّوا اللهَ يَغْفِرْ لَكُمْ.

رواه احمد ١٩٩/٥

74. हज़रत अबुद्दर्दा رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला की अज़्मत दिल में बैठाओ, वह तुम्हें बख़्श देंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿ 75 ﴾ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِيْمَا رَوَى عَنِ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَنَّهُ قَالَ: يَا عِبَادِيْ! إِنِّي حَرَّمْتُ الظُّلْمَ عَلَى نَفْسِيْ، وَجَعَلْتُهُ بَيْنَكُمْ مُحَرَّمًا، فَلَا تَظَالَمُوْا، يَا عِبَادِيْ! كُلُّكُمْ ضَالٌّ إِلَّا مَنْ هَدَيْتُهُ، فَاسْتَهْدُوْنِيْ أَهْدِكُمْ، يَا عِبَادِيْ! كُلُّكُمْ جَائِعٌ إِلَّا مَنْ أَطْعَمْتُهُ، فَاسْتَطْعِمُوْنِيْ أُطْعِمْكُمْ، يَا عِبَادِيْ! كُلُّكُمْ عَارٍ إِلَّا مَنْ كَسَوْتُهُ، فَاسْتَكْسُوْنِيْ أَكْسُكُمْ، يَا عِبَادِيْ إِنَّكُمْ تُخْطِئُوْنَ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ، وَأَنَا أَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا، فَاسْتَغْفِرُوْنِيْ أَغْفِرْ لَكُمْ، يَا عِبَادِيْ! إِنَّكُمْ لَنْ تَبْلُغُوْا ضَرِّيْ فَتَضُرُّوْنِيْ، وَلَنْ تَبْلُغُوْا نَفْعِيْ فَتَنْفَعُوْنِيْ، يَا عِبَادِيْ! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ، كَانُوْا عَلَى أَتْقَى قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مِنْكُمْ، مَا زَادَ ذٰلِكَ فِيْ مُلْكِيْ شَيْئًا، يَا عِبَادِيْ! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ، كَانُوْا عَلَى أَفْجَرِ قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مِنْكُمْ مَا نَقَصَ ذٰلِكَ مِنْ مُلْكِيْ شَيْئًا، يَا عِبَادِيْ! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ، قَامُوْا فِيْ صَعِيْدٍ وَاحِدٍ فَسَأَلُوْنِيْ، فَأَعْطَيْتُ كُلَّ إِنْسَانٍ مَسْأَلَتَهُ، مَا نَقَصَ ذٰلِكَ مِمَّا عِنْدِيْ إِلَّا كَمَا يَنْقُصُ الْمِخْيَطُ إِذَا أُدْخِلَ الْبَحْرَ، يَا عِبَادِيْ! إِنَّمَا هِيَ أَعْمَالُكُمْ أُحْصِيْهَا لَكُمْ، ثُمَّ أُوَفِّيْكُمْ إِيَّاهَا، فَمَنْ وَجَدَ خَيْرًا فَلْيَحْمَدِ اللهَ، وَمَنْ وَجَدَ غَيْرَ ذٰلِكَ فَلَا يَلُوْمَنَّ إِلَّا نَفْسَهُ.

رواه مسلم، باب تحريم الظلم، رقم: ٦٥٧٢

75. हज़रत अबूज़र رضي الله عنه नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे बन्दो! मैंने अपने पर ज़ुल्म हराम क़रार दिया है और इसे तुम्हारे दर्मियान भी हराम किया है, लिहाज़ा तुम एक दूसरे पर ज़ुल्म मत करो।

मेरे बन्दो! तुम सब गुमराह हो, सिवाए उसके जिसे मैं हिदायत दूं, लिहाज़ा मुझसे हिदायत मांगो, मैं तुम्हें हिदायत दूंगा। मेरे बन्दो! तुम सब भूखे हो सिवाए उसके कि जिसको मैं खिलाऊं, लिहाज़ा तुम मुझसे खाना मांगो, मैं तुम्हें खिलाऊंगा। मेरे बन्दो! तुम सब बरहना हो सिवाए उसके जिसको मैं पहनाऊं, लिहाज़ा तुम मुझसे लिबास मांगो, मैं तुम्हें पहनाऊंगा। मेरे बन्दो! तुम रात दिन गुनाह करते हो और मैं तमाम गुनाहों को माफ़ करता हूं लिहाज़ा मुझ से बख़्शिश तलब करो, मैं तुम्हें बख़्श दूंगा। मेरे बन्दो! तुम मुझे नुक़सान पहुंचाना चाहो तो हरगिज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकते और तुम मुझे नफ़ा पहुंचाना चाहो तो हरगिज़ नफ़ा नहीं पहुंचा सकते। मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे अगले पिछले, इंसान और जिन्नात, सब उस शख़्स की तरह हो जाएं जिसके दिल में तुममें से सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला का डर है, तो यह बात मेरी बादशाहत में कोई इज़ाफ़ा नहीं कर सकती। मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे अगले पिछले, इंसान और जिन्नात, सब उस शख़्स की तरह हो जाएं, जो तुममें से सबसे ज़्यादा फ़ाजिर व फ़ासिक़ है, तो यह चीज़ मेरी बादशाहत में कोई कमी नहीं कर सकती। मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे अगले पिछले, इंसान और जिन्नात, सब एक खुले मैदान में जमा होकर मुझ से सवाल करें, और मैं हर एक को उसके सवाल के मुताबिक़ अता कर दूं तो उससे मेरे ख़ज़ानों में इतनी ही कमी होगी जितनी कमी सूई को समुन्दर में डाल कर निकालने से समुन्दर के पानी में होती है, (और यह कमी कोई कमी नहीं। इसी तरह अल्लाह तआला के ख़ज़ानों में भी सब को देने से कुछ कमी नहीं आती) मेरे बन्दो! तुम्हारे आमाल ही हैं जिनको मैं तुम्हारे लिए महफ़ूज़ कर रहा हूं, फिर तुम्हें उनका पूरा-पूरा बदला दूंगा। लिहाज़ा जो शख़्स (अल्लाह की तौफ़ीक़ से) नेक अमल करे, तो उसे चाहिए कि वह अल्लाह तआला की तारीफ़ करे, और जिस शख़्स से कोई गुनाह सरज़द हो जाए वह अपने ही नफ़्स को मलामत करे (क्योंकि इससे गुनाह का सरज़द होना नफ़्स ही के तक़ाज़े से हुआ)। (मुस्लिम)

﴿ 76 ﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَامَ فِیْنَا رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ بِخَمْسِ کَلِمَاتٍ فَقَالَ: اِنَّ اللّٰہَ عَزَّوَجَلَّ لَا یَنَامُ وَلَا یَنْبَغِیْ لَہٗ اَنْ یَنَامَ، یَخْفِضُ الْقِسْطَ وَیَرْفَعُہٗ، یُرْفَعُ اِلَیْہِ عَمَلُ اللَّیْلِ قَبْلَ عَمَلِ النَّھَارِ، وَعَمَلُ النَّھَارِ قَبْلَ عَمَلِ اللَّیْلِ، حِجَابُہُ النُّوْرُلَوْ کَشَفَہٗ لَاَحْرَقَتْ سُبُحَاتُ وَجْھِہٖ مَا انْتَھٰی اِلَیْہِ بَصَرُہٗ مِنْ خَلْقِہٖ

رواہ مسلم، باب فی قولہ علیہ السلام: ان اللّٰہ لاینام ۔۔۔ ، رقم: ٤٤٥

76. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने एक मौक़े पर हमें पांच बातें इर्शाद फ़रमाईं : 1. अल्लाह तआ़ला न सोते हैं और सोना उनकी शान के मुनासिब है। 2. रोज़ी को कम और कुशादा फ़रमाते हैं, 3. उनके पास रात के आ़माल दिन से पहले, 4. और दिन के आ़माल रात से पहले पहुंच जाते हैं, 5. (उनके और मख़्लूक़ के दर्मियान) परदा उनका नूर है। अगर वे यह पर्दा उठा दें तो जहां तक मख़्लूक़ की नज़र जाए उनकी ज़ात के अनवार सबको जला डालें।

(मुस्लिम)

﴿ 77 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ خَلَقَ إِسْرَافِيْلَ مُنْذُ يَوْمَ خَلَقَهُ صَافًّا قَدَمَيْهِ لَا يَرْفَعُ بَصَرَهُ، بَيْنَهُ وَبَيْنَ الرَّبِّ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى سَبْعُوْنَ نُوْرًا، مَا مِنْهَا مِنْ نُوْرٍ يَدْنُوْمِنْهُ إِلَّا احْتَرَقَ. مصابيح السنة للبغوى وعده من الحسان ٤/٣١

77. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने जब से इसराफ़ील ﷺ को पैदा फ़रमाया है वह दोनों पांव बराबर किए खड़े हैं नज़र ऊपर नहीं उठाते। उनके और परवरदिगार के दर्मियान नूर के सत्तर पर्दे हैं, हर पर्दा ऐसा है कि अगर इसराफ़ील उसके क़रीब भी जाएं तो जलकर राख हो जाएं। (मसाबीहुस्सुन्न : 31/4)

﴿ 78 ﴾ عَنْ زُرَارَةَ بْنِ اَوْفٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لِجِبْرِيْلَ: هَلْ رَاَيْتَ رَبَّكَ؟ فَانْتَفَضَ جِبْرِيْلُ وَقَالَ: يَامُحَمَّدُ! إِنَّ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُ سَبْعِيْنَ حِجَابًا مِنْ نُوْرٍ لَوْ دَنَوْتُ مِنْ بَعْضِهَا لَاحْتَرَقْتُ. مصابيح السنة للبغوى وعده من الحسان ٤/٣٠

78. हज़रत ज़ुरारह बिन औफ़ा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत जिबरील ﷺ से पूछा : क्या तुमने अपने रब को देखा है? यह सुनकर जिबरील कांप उठे और अ़र्ज़ किया : ऐ मुहम्मद ﷺ! मेरे और उनके दर्मियान तो नूर के सत्तर पर्दे हैं, अगर मैं किसी एक के नज़दीक भी पहुंच जाऊं तो जल जाऊं।

(मसाबीहुस्सुन्न:)

﴿ 79 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: اَنْفِقْ اُنْفِقْ عَلَيْكَ، وَقَالَ: يَدُ اللهِ مَلْاٰى لَا يَغِيْضُهَا نَفَقَةٌ سَحَّاءُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَقَالَ: اَرَاَيْتُمْ مَا اَنْفَقَ مُنْذُ خَلَقَ السَّمَاءَ وَالْاَرْضَ فَإِنَّهُ لَمْ يَغِضْ مَا فِيْ يَدِهٖ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ، وَبِيَدِهِ الْمِيْزَانُ يَخْفِضُ وَ يَرْفَعُ. رواه البخارى، باب قوله وكان عرشه على الماء، رقم: ٤٦٨٤

79. हज़रत अबू हुरैरह ﷛ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : तुम खर्च करो, मैं तुम्हें दूंगा। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : अल्लाह तआ़ला का हाथ यानी उसका ख़ज़ाना भरा हुआ है। रात और दिन का मुसलसल ख़र्च इस ख़ज़ाने को कम नहीं करता। क्या तुम नहीं देखते कि जब से अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया और (इससे भी पहले जबकि) उनका अ़र्श पानी पर था कितना ख़र्च किया है (इसके बावजूद) उनके ख़ज़ाने में कुछ कमी नहीं हुई, तक़दीर के अच्छे बुरे फ़ैसलों का तराज़ू उन्हीं के हाथ में है। (बुख़ारी)

﴿ 80 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَقْبِضُ اللهُ الْأَرْضَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَيَطْوِي السَّمَاءَ بِيَمِينِهِ ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا الْمَلِكُ، أَيْنَ مُلُوكُ الْأَرْضِ؟

رواه البخاري، باب قول الله تعالى ملك الناس، رقم: ٧٣٨٢

80. हज़रत अबू हुरैरह ﷛ नबी करीम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन ज़मीन को अपने क़ब्ज़े में लेंगे और आसमान को अपने दाहिने हाथ में लपेटेंगे, फिर फ़रमाएंगे कि मैं ही बादशाह हूं , कहां हैं ज़मीन के बादशाह? (बुख़ारी)

﴿ 81 ﴾ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: إِنِّي أَرَى مَا لَا تَرَوْنَ وَأَسْمَعُ مَا لَا تَسْمَعُونَ، أَطَّتِ السَّمَاءُ وَحُقَّ لَهَا أَنْ تَئِطَّ مَا فِيهَا مَوْضِعُ أَرْبَعِ أَصَابِعَ إِلَّا وَمَلَكٌ وَاضِعٌ جَبْهَتَهُ لِلّٰهِ سَاجِدًا، وَاللهِ لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلًا وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا، وَمَا تَلَذَّذْتُمْ بِالنِّسَاءِ عَلَى الْفُرُشِ، وَلَخَرَجْتُمْ إِلَى الصُّعُدَاتِ تَجْأَرُونَ إِلَى اللهِ، لَوَدِدْتُ أَنِّي كُنْتُ شَجَرَةً تُعْضَدُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في قول النبي ﷺ لو تعلمون ......، رقم: ٢٣١٢

81. हज़रत अबूज़र ﷛ रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं वे चीज़ें देखता हूं, जो तुम नहीं देखते और वे बातें सुनता हूं जो तुम नहीं सुनते। आसमान (अ़ज़मते इलाही के बोझ से) चरचराता है (जैसे कि चारपाई वग़ैरह वज़न से बोलने लगती है) और आसमान का हक़ है कि वह बोले (कि अ़ज़मत का बोझ बहुत होता है) इसमें चार उंगलियों के बराबर भी कोई जगह खाली नहीं है, जहां कोई-न-कोई फ़रिश्ता अपनी पेशानी सज्दा में अल्लाह तआ़ला के सामने न रखे हुए हो। अल्लाह की क़सम! अगर तुम वह बातें जानते जो मैं जानता हूं तो कम हंसते

और ज़्यादा रोते; और बिस्तरों पर अपनी बीवियों से लुत्फ़ अन्दोज़ न होते और अल्लाह तआला से फ़रियाद करते हुए वीरानों में निकल जाते। काश मैं एक दरख़्त होता (जो जड़) से काट दिया जाता। (तिर्मिज़ी)

﴿ 82 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ لِلّٰهِ تِسْعَةً وَّتِسْعِيْنَ اِسْمًا مِائَةً غَيْرَ وَاحِدَةٍ مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ هُوَ اللهُ الَّذِيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ الْغَفَّارُ الْقَهَّارُ الْوَهَّابُ الرَّزَّاقُ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ الْقَابِضُ الْبَاسِطُ الْخَافِضُ الرَّافِعُ الْمُعِزُّ الْمُذِلُّ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ الْحَكَمُ الْعَدْلُ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ الْحَلِيْمُ الْعَظِيْمُ الْغَفُوْرُ الشَّكُوْرُ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ الْحَفِيْظُ الْمُقِيْتُ الْحَسِيْبُ الْجَلِيْلُ الْكَرِيْمُ الرَّقِيْبُ الْمُجِيْبُ الْوَاسِعُ الْحَكِيْمُ الْوَدُوْدُ الْمَجِيْدُ الْبَاعِثُ الشَّهِيْدُ الْحَقُّ الْوَكِيْلُ الْقَوِيُّ الْمَتِيْنُ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ الْمُحْصِي الْمُبْدِئُ الْمُعِيْدُ الْمُحْيِي الْمُمِيْتُ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ الْوَاجِدُ الْمَاجِدُ الْوَاحِدُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الْقَادِرُ الْمُقْتَدِرُ الْمُقَدِّمُ الْمُؤَخِّرُ الْاَوَّلُ الْاٰخِرُ الظَّاهِرُ الْبَاطِنُ الْوَالِي الْمُتَعَالِي الْبَرُّ التَّوَّابُ الْمُنْتَقِمُ الْعَفُوُّ الرَّؤُوْفُ مَالِكُ الْمُلْكِ ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ الْمُقْسِطُ الْجَامِعُ الْغَنِيُّ الْمُغْنِي الْمَانِعُ الضَّارُّ النَّافِعُ النُّوْرُ الْهَادِي الْبَدِيْعُ الْبَاقِي الْوَارِثُ الرَّشِيْدُ الصَّبُوْرُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب حديث في اسماء الله... رقم: ٣٥٠٧

82. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के निन्नान्वे नाम हैं, एक कम सौ। जिसने उनको ख़ूब अच्छी तरह याद किया वह जन्नत में दाख़िल होगा।

वह अल्लाह है जिसके सिवा कोई मालिक व माबूद नहीं (उसके निन्नान्वे सिफ़ाती नाम ये हैं) अर-रहमान 'बेहद रहम करने वाला', अर-रहीम 'निहायत मेहरबान', अल-मलिक 'हक़ीक़ी बादशाह', अल-क़ुद्दूस 'हर ऐब से पाक', अस्सलाम 'हर आफ़त से सलामत रखने वाला', अल-मुअ्मिन 'अम्न व ईमान अता फ़रमाने वाला', अल-मुहैमिन 'पूरी निगहबानी फ़रमाने वाला', अल-अज़ीज़ 'सब पर ग़ालिब', अल-जब्बार 'ख़राबी का दुरुस्त करने वाला', अल-मुतकब्बिर 'बहुत बड़ाई वाला', अल-ख़ालिक़ 'पैदा फ़रमाने वाला', अल-बारी 'ठीक-ठीक बनाने वाला', अल-मुसव्विर 'सूरत बनाने वाला', अल-ग़फ़्फ़ार 'गुनाहों का बहुत बख़्शने वाला', अल-क़ह्हार 'सबको

अपने क़ाबू में रखने वाला', अल-वह्हाब 'सब कुछ अ़ता करने वाला', अर-रज़्ज़ाक़ 'बहुत ज़्यादा रोज़ी देने वाला', अल-फ़त्ताह 'सबके लिए रहमत के दरवाज़े खोलने वाला', अल-अ़लीम 'सब कुछ जानने वाला', अल-क़ाबिज़ 'तंगी करने वाला', अल-बासित 'फ़राख़ी करने वाला', अल-ख़ाफ़िज़ 'पस्त करने वाला', अर-राफ़ेअ़ 'बुलन्द करने वाला', अल-मुइज़्ज़ 'इज़्ज़त देने वाला', अल-मुज़िल्ल 'ज़िल्लत देने वाला', अस्समीअ़ 'सब कुछ सुनने वाला', अल-बसीर 'सब कुछ देखने वाला', अल-हकम 'अटल फ़ैसले वाला', अल-अ़द्ल 'सरापा अ़द्ल व इंसाफ़', अल-लतीफ़ 'भेदों का जानने वाला', अल-ख़बीर 'हर बात से बाख़बर', अल-हलीम 'निहायत बुर्दबार', अल-अ़ज़ीम 'बड़ी अ़ज़मत वाला', अल-ग़फ़ूर 'बहुत बख़्शने वाला', अश-शकूर 'क़द्रदान' (थोड़े पर बहुत देने वाला) अल-अ़लीम 'बुलन्द मर्तबा वाला', अल-कबीर 'बहुत बड़ा', अल-हफ़ीज़ 'हिफ़ाज़त करने वाला', अल-मुक़ीत 'सबको ज़िन्दगी का सामान अ़ता करने वाला', अल-हसीब 'सबके लिए काफ़ी हो जाने वाला', अल-जलील 'बड़ी बुज़ुर्गी वाला', अल-करीम 'बे मांगे अ़ता फ़रमाने वाला', अर-रक़ीब 'निगरां', अल-मुजीब 'क़ुबूल फ़रमाने वाला', अल-वासेअ़ 'वुस्अ़त रखने वाला', अल-हकीम 'बड़ी हिकमतों वाला', अल-वदूद 'अपने बन्दों को चाहने वाला', अल-मजीद 'इज़्ज़त व शराफ़त वाला', अल-बाईस 'ज़िन्दा करके क़ब्रों से उठाने वाला', अश-शहीद 'ऐसा हाज़िर जो सब कुछ देखता है और जानता है', अल-हक़्क़ 'अपनी सारी सिफ़ात के साथ मौजूद', अल-वकील 'काम बनाने वाला', अल-क़वी 'बड़ी ताक़त व क़ुव्वत वाला', अल-मतीन 'बहुत मज़बूत', अल-वली 'सरपरस्त व मददगार', अल-हमीद 'तारीफ़ का मुस्तहिक़', अल-मुह्सी 'सब मख़्लूक़ात के बारे में पूरी मालूमात रखने वाला', अल-मुब्दी 'पहली बार पैदा करने वाला', अल-मुईद 'दोबारा पैदा करने वाला', अल-मुह्यी 'ज़िन्दगी बख़्शने वाला' अल-मुमीत 'मौत देने वाला', अल-हैय्य 'हमेशा-हमेशा ज़िन्दा रहने वाला', अल-क़ैय्यूम 'सबको क़ायम रखने और संभालने वाला', अल-वाजिद 'सब कुछ अपने पास रखने वाला यानी हर चीज़ उसके ख़ज़ाने में है', अल-माजिद 'बड़ाई वाला', अल-वाहिद 'एक', अल-अहद 'अकेला', अस्समद 'सबसे बेनियाज़ और सब उसके मुहताज', अल-क़ादिर 'बहुत ज़्यादा क़ुदरत वाला', अल-मुक़्तदिर 'सब पर कामिल इख़्तियार रखने वाला', अल-मुक़द्दम

'आगे कर देने वाला', **अल-मुअख़्ख़र** 'पीछे कर देने वाला', **अल-अव्वल** 'सबसे पहले', **अल-आख़िर** 'सबके बाद यानी जब कोई न था, कुछ न था, जब भी वह मौजूद था और जब कोई न रहेगा कुछ न रहेगा वह उस वक़्त और उसके बाद भी मौजूद रहेगा', **अज़-ज़ाहिर** 'बिल्कुल ज़ाहिर' यानी दलाइल के एतेबार से उसका वुजूद बिल्कुल ज़ाहिर है, **अल-बातिन** 'निगाहों से ओझल', **अल-वाली** 'हर चीज़ का ज़िम्मेदार', **अल-मु त आली** 'मख़्लूक़ की सिफ़ात से बरतर', **अल-बर्र** 'बड़ा मुहसिन', **अत्तव्वाब** 'तौबा की तौफ़ीक़ देने वाला और तौबा क़ुबूल करने वाला', **अल-मुंतक़िम** 'मुजरिमों से बदला लेने वाला', **अल-अफ़ुव्व** 'बहुत माफ़ी देने वाला', **अर-रऊफ़** 'बहुत शफ़क़त रखने वाला', **मालिकुल मुल्क** 'सारे जहान का मालिक', **ज़ुल-जलालि वल इकराम** 'अज़मत व जलाल और इनआम व इकराम वाला', **अल-मुक़्सित** 'हक़दार का हक़ अदा करने वाला', **अल-जामेअ्** 'सारी मख़्लूक़ को क़ियामत के दिन यक्जा करने वाला', **अल-ग़नी** 'ख़ुद बेनियाज़, जिसको किसी से कोई हाजत नहीं', **अल-मुग़्नी** 'अपनी अ़ता के ज़रिए बन्दों को बेनियाज़ कर देने वाला', **अल-मानेअ्** 'रोक देने वाला' **अज़्ज़ार्र** (अपनी हिकमत और मशीयत के तहत) 'ज़रर पहुंचाने वाला', **अन-नाफ़ेअ्** 'नफ़ा पहुंचाने वाला', **अन-नूर** 'सरापा नूर और नूर बख़्शने वाला', **अल-हादी** 'सीधा रास्ता दिखाने और उस पर चलाने वाला, **अल-बदीअ्** 'बिला नमूना बनाने वाला', **अल-बाक़ी** 'हमेशा रहने वाला' (जिसको कभी फ़ना नहीं) **अलवारिस** 'सबके फ़ना हो जाने के बाद बाक़ी रहने वाला', **अर-रशीद** 'साहिबे रुश्द व हिकमत (जिस का हर फ़ेल और फ़ैसला दुरुस्त है) **अस्सबूर** बहुत बरदाश्त करने वाला (कि बन्दों की बड़ी-से-बड़ी नाफ़रमानियां देखता है और फ़ौरन अज़ाब भेजकर उनको तहस नहस नहीं कर देता)। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला के बहुत से नाम हैं जो क़ुरआन करीम या दीगर रिवायात में मज़्कूर हैं, जिनमें से निन्नान्वे नाम इस हदीस में हैं। (मज़ाहिरे हक़)

﴿83﴾ عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ الْمُشْرِكِيْنَ قَالُوا لِلنَّبِيِّ ﷺ: يَا مُحَمَّدُ! اُنْسُبْ لَنَا رَبَّكَ، فَأَنْزَلَ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى ﴿قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ ۝ اَللهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ﴾. (رواه احمد ٥/١٣٤)

83. हज़रत उबई बिन काब ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मुश्रिकीन ने नबी करीम ﷺ से कहा : ऐ मुहम्मद! हमें अपने परवरदिगार का नसब तो बतलाइए, इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह सूरः (सूरा इख़्लास) नाज़िल फ़रमाई जिसका तर्जुमा यह है : *'आप कह दीजिए कि वह यानी अल्लाह तआ़ला एक है, अल्लाह तआ़ला बेनियाज़ है, उसकी औलाद नहीं और न वह किसी की औलाद है और न कोई उसके बराबर का है।* (मुस्नद अहमद)

﴿ 84 ﴾ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: (قَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ): كَذَّبَنِي ابْنُ آدَمَ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذٰلِكَ، وَشَتَمَنِي وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذٰلِكَ،اَمَّا تَكْذِيْبُهُ اِيَّايَ اَنْ يَقُوْلَ: اِنِّي لَنْ اُعِيْدَهُ كَمَا بَدَاْتُهُ، وَاَمَّا شَتْمُهُ اِيَّايَ اَنْ يَقُوْلَ: اتَّخَذَاللهُ وَلَدًا، وَاَنَا الصَّمَدُ الَّذِيْ لَمْ اَلِدْ وَلَمْ اُوْلَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لِيْ كُفُوًا اَحَدٌ. رواه البخاري، باب قوله الله الصمد، رقم: ٤٩٧٥

84. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ एक हदीसे क़ुदसी में अपने रब का यह इर्शाद मुबारक नक़ल फ़रमाते हैं : आदम के बेटे ने मुझे झुठलाया, हालांकि यह उसके लिए मुनासिब नहीं था और मुझे बुरा भला कहा, हालांकि उसे इसका हक़ नहीं था। उसका मुझे झुठलाना यह है कि वह कहता है मैं उसे दोबारा ज़िन्दा नहीं कर सकता जैसा कि मैंने पहली मर्तबा पैदा किया था। और उसका बुरा भला कहना यह है कि वह कहता है मैंने किसी को अपना बेटा बना लिया है, हालांकि मैं बेनियाज़ हूं, न मेरी कोई औलाद है, न मैं किसी की औलाद हूं और न कोई मेरे बराबर का है। (बुख़ारी)

﴿ 85 ﴾ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يَزَالُ النَّاسُ يَتَسَاءَلُوْنَ حَتّٰى يُقَالَ: هٰذَا خَلَقَ اللهُ الْخَلْقَ فَمَنْ خَلَقَ اللهَ؟ فَاِذَا قَالُوْا ذٰلِكَ فَقُوْلُوْا: اَللهُ اَحَدٌ اَللهُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا اَحَدٌ، ثُمَّ لْيَتْفُلْ عَنْ يَسَارِهٖ ثَلَاثًا وَلْيَسْتَعِذْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. رواه ابو داؤد، مشكوة المصابيح رقم: ٧٥

85. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : लोग हमेशा (अल्लाह तआ़ला की ज़ात के बारे में) एक दूसरे से पूछते रहेंगे, यहां तक कि यह कहा जाएगा कि अल्लाह तआ़ला ने सारी मख़्लूक़ को पैदा किया है, (लेकिन) अल्लाह तआ़ला को किसने पैदा किया? (नऊज़ुबिल्लाह) जब लोग यह बात करें तो तुम ये कलिमात कहो : *अल्लाहु अहद। अल्लाहुस्समद। लम यलिद। वलम यूलद। वलम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद०* तर्जुमा [illegible]

तआला एक हैं, अल्लाह तआला किसी के मुहताज नहीं, सब उनके मुहताज हैं, अल्लाह तआला की कोई औलाद है, न वह किसी की औलाद हैं और न कोई अल्लाह तआला का हमसर है। फिर अपने बाएं जानिब तीन मर्तबा थुत्कार दे और अल्लाह तआला से शैतान मरदूद की पनाह मांगे। (अबूदाऊद, मिशकातुल मसाबीह)

﴿ 86 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: قَالَ اللهُ تَعَالٰى: يُؤْذِيْنِي ابْنُ آدَمَ، يَسُبُّ الدَّهْرَ وَاَنَا الدَّهْرُ، بِيَدِى الْاَمْرُ، اُقَلِّبُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ۔

رواه البخاري، باب قول الله تعالى يريدون ان يبدلوا كلام الله، رقم: ٧٤٩١

86. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ एक हदीसे कुदसी अपने रब का यह मुबारक इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं : आदम का बेटा मुझे तकलीफ़ देना चाहता है ज़माने को बुरा-भला कहता है, हालांकि ज़माना (कुछ नहीं वह) तो ही हूं, मेरे ही हाथ में (ज़माने की) तमाम मामलात हैं, मैं जिस तरह चाहता हूं रात और दिन को गर्दिश देता हूं। (बुखारी)

﴿ 87 ﴾ عَنْ اَبِيْ مُوْسَى الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَا اَحَدٌ اَصْبَرَ عَلٰى اَذًى سَمِعَهُ مِنَ اللهِ، يَدَّعُوْنَ لَهُ الْوَلَدَ ثُمَّ يُعَافِيْهِمْ وَيَرْزُقُهُمْ.

رواه البخاري باب قول الله تعالى ان الله هو الرزاق ...، رقم: ٧٣٧٨

87. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तकलीफ़देह बात सुनकर अल्लाह तआला से ज़्यादा बरदाश्त करने वाला कोई नहीं है। मुश्रिकीन उसके लिए बेटा साबित करते हैं और फिर भी वह उन्हें आफ़ियत देता है और रोज़ी अता करता है। (बुखारी)

﴿ 88 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَمَّا خَلَقَ اللهُ الْخَلْقَ كَتَبَ فِيْ كِتَابِهِ فَهُوَ عِنْدَهُ فَوْقَ الْعَرْشِ: اِنَّ رَحْمَتِيْ تَغْلِبُ غَضَبِيْ.

رواه مسلم، باب في سعة رحمة الله تعالى ...، رقم: ٦٩٦٩

88. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ को पैदा किया तो लौहे महफ़ूज़ में यह लिख दिया *"मेरी रहमत मेरे गुस्सा से बढ़ी हुई है"*। यह तहरीर उनके सामने अर्श पर मौजूद है। (मुस्लिम)

﴿ 89 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَوْ يَعْلَمُ الْمُؤْمِنُ مَا عِنْدَ اللهِ مِنَ الْعُقُوْبَةِ، مَا طَمِعَ بِجَنَّتِهِ أَحَدٌ، وَلَوْ يَعْلَمُ الْكَافِرُ مَا عِنْدَ اللهِ مِنَ الرَّحْمَةِ، مَا قَنِطَ مِنْ جَنَّتِهِ أَحَدٌ.

رواه مسلم، باب في سعة رحمة الله تعالى ......، رقم: ٦٩٧٩

89. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ने इर्शाद फ़रमाया : अगर मोमिन को उस सज़ा का सही इल्म हो जाए, जो अल्लाह तआला के यहां नाफ़रमानों के लिए है तो उसकी जन्नत की कोई उम्मीद न रखे और अगर काफ़िर को अल्लाह तआला की रहमत का सही इल्म हो जाए, जो अल्लाह तआला के यहां है, तो उसकी जन्नत से कोई नाउम्मीद न हो। (मुस्लिम)

﴿ 90 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ لِلّٰهِ مِائَةَ رَحْمَةٍ، أَنْزَلَ مِنْهَا رَحْمَةً وَاحِدَةً بَيْنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ وَالْبَهَائِمِ وَالْهَوَامِّ، فَبِهَا يَتَعَاطَفُوْنَ، وَبِهَا يَتَرَاحَمُوْنَ، وَبِهَا تَعْطِفُ الْوَحْشُ عَلَى وَلَدِهَا، وَأَخَّرَ اللهُ تِسْعًا وَتِسْعِيْنَ رَحْمَةً، يَرْحَمُ بِهَا عِبَادَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه مسلم، باب في سعة رحمة الله تعالى ......، رقم: ٦٩٧٤

وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: فَإِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ أَكْمَلَهَا بِهٰذِهِ الرَّحْمَةِ. (رقم: ٦٩٧٧)

90. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के यहां सौ रहमतें हैं। उसने उनमें से एक रहमत जिन्न व इन्स, जानवर और कीड़े-मकोड़ों के दरम्यान उतारी है। उसी एक हिस्से की वजह से वह एक दूसरे पर नर्मी और रहम करते हैं, उसी की वजह से वहशी जानवर अपने बच्चे पर शफ़क़त करते हैं। और अल्लाह तआला ने निन्नान्वे रहमतों को क़ियामत के दिन के लिए रखा है कि उनके ज़रिए अपने बन्दों पर रहम फ़रमाएंगे। एक रिवायत में है कि जब क़ियामत का दिन होगा, तो अल्लाह तआला अपनी इन निन्नान्वे रहमतों को इस दुन्यवी रहमत के साथ मिलाकर मुकम्मल फ़रमाएंगे (फिर सौ की सौ रहमतों के ज़रिए अपने बन्दों पर रहम फ़रमाएंगे)। (मुस्लिम)

﴿ 91 ﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: قُدِمَ عَلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ بِسَبْيٍ، فَإِذَا امْرَأَةٌ مِنَ السَّبْيِ، تَبْتَغِيْ، إِذَا وَجَدَتْ صَبِيًّا فِي السَّبْيِ، أَخَذَتْهُ فَأَلْصَقَتْهُ بِبَطْنِهَا وَأَرْضَعَتْهُ، فَقَالَ لَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَتَرَوْنَ هٰذِهِ الْمَرْأَةَ طَارِحَةً وَلَدَهَا فِي النَّارِ؟ قُلْنَا: لَا وَاللهِ وَهِيَ تَقْدِرُ عَلَى أَنْ لَا تَطْرَحَهُ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَللهُ أَرْحَمُ بِعِبَادِهِ مِنْ هٰذِهِ بِوَلَدِهَا.

رواه مسلم، باب في سعة رحمة الله تعالى ......، رقم: ٦٩٧٨

91. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी करीम के पास कुछ क़ैदी लाए गए। उनमें एक औरत पर नज़र पड़ी जो अपना बच्चा तलाश करती फिर रही थी। जब उसे बच्चा मिला, उसने उसे उठाकर अपने पेट से लगाया और दूध पिलाया। नबी करीम ﷺ ने हमसे मुख़ातब होकर फ़रमाया : तुम्हारा क्या ख़्याल है, यह औरत अपने बच्चे को आग में डाल सकती है? हमने अ़र्ज़ किया : अल्लाह की क़सम, नहीं! ख़ुसूसन जबकि उसे बच्चे को आग में न डालने की क़ुदरत भी है (कोई मजबूरी नहीं)। इस पर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह औरत अपने बच्चे पर जितना रहम व प्यार करती है अल्लाह तआला अपने बन्दों पर इससे कहीं ज़्यादा रहम व प्यार करते हैं। (मुस्लिम)

﴿ 92 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَامَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فِیْ صَلٰوةٍ وَقُمْنَا مَعَهُ، فَقَالَ اَعْرَابِیٌّ وَهُوَ فِی الصَّلٰوةِ: اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِیْ وَمُحَمَّدًا وَلَا تَرْحَمْ مَعَنَا اَحَدًا، فَلَمَّا سَلَّمَ النَّبِیُّ ﷺ قَالَ لِلْاَعْرَابِیِّ: لَقَدْ حَجَّرْتَ وَاسِعًا یُرِیْدُ رَحْمَةَ اللهِ.

رواه البخاری، باب رحمة الناس والبهائم، رقم: ٦٠١٠

92. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि (एक मर्तबा) नबी करीम ﷺ नमाज़ के लिए खड़े हुए। हम भी आप के साथ खड़े हो गए। एक देहात के रहने वाले (नौ मुस्लिम) ने नमाज़ में ही कहा : ऐ अल्लाह! (सिर्फ़) मुझ पर और मुहम्मद ﷺ पर रहम कर, हमारे साथ किसी और पर रहम न कर। जब आपने सलाम फेरा तो उस देहात के रहने वाले से फ़रमाया : तुमने बड़ी वसीअ़ चीज़ को तंग कर दिया (घबराओ नहीं! रहमत तो इतनी है कि सब पर छा जाए, फिर भी तंग न हो, तो तुम ही उसे तंग समझ रहे हो)। (बुख़ारी)

﴿ 93 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: وَالَّذِیْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِیَدِهٖ لَا یَسْمَعُ بِیْ اَحَدٌ مِنْ هٰذِهِ الْاُمَّةِ یَهُوْدِیٌّ وَلَا نَصْرَانِیٌّ، ثُمَّ یَمُوْتُ وَلَمْ یُؤْمِنْ بِالَّذِیْ اُرْسِلْتُ بِهٖ، اِلَّا کَانَ مِنْ اَصْحَابِ النَّارِ. رواه مسلم، باب وجوب الایمان...، رقم: ٣٨٦

93. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद ﷺ की जान है, इस उम्मत में कोई शख़्स यहूदी या ईसाई ऐसा नहीं जो मेरी (नुबुव्वत की) ख़बर सुने, फिर इस दीन पर ईमान न लाए जिसको देकर मुझे भेजा गया है, और (इसी हाल पर) मर जाए तो यक़ीनन वह दोज़ख़ियों में होगा। (मुस्लिम)

﴿ 94 ﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَاقَالَ: جَاءَتْ مَلَائِكَةٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ نَائِمٌ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّهُ نَائِمٌ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ، فَقَالُوا: إِنَّ لِصَاحِبِكُمْ هٰذَا مَثَلًا، قَالَ: فَاضْرِبُوا لَهُ مَثَلًا، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّهُ نَائِمٌ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ،فَقَالُوا: مَثَلُهُ كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى دَارًا وَجَعَلَ فِيْهَا مَأْدُبَةً وَبَعَثَ دَاعِيًا،فَمَنْ أَجَابَ الدَّاعِيَ دَخَلَ الدَّارَ وَأَكَلَ مِنَ الْمَأْدُبَةِ، وَمَنْ لَمْ يُجِبِ الدَّاعِيَ لَمْ يَدْخُلِ الدَّارَ وَلَمْ يَأْكُلْ مِنَ الْمَأْدُبَةِ، فَقَالُوا: أَوِّلُوْهَا لَهُ يَفْقَهْهَا،فَقَالَ بَعْضُهُمْ:إِنَّهُ نَائِمٌ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ،فَقَالُوا: فَالدَّارُ: الْجَنَّةُ، وَالدَّاعِي: مُحَمَّدٌ ﷺ، فَمَنْ أَطَاعَ مُحَمَّدًا ﷺ فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ، وَمَنْ عَصَى مُحَمَّدًا ﷺ فَقَدْ عَصَى اللهَ، وَمُحَمَّدٌ ﷺ فَرْقٌ بَيْنَ النَّاسِ. رواه البخارى، باب الإقتداء بسنن رسول الله ﷺ رقم: ٧٢٨١

94. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि कुछ फ़रिश्ते नबी करीम ﷺ के पास उस वक़्त आए, जबकि आप सो रहे थे। फ़रिश्तों ने आपस में कहा : आप सोए हुए हैं। किसी फ़रिश्ते ने कहा : आंखें सो रही हैं लेकिन दिल तो जाग रहा है। फिर आपस में कहने लगे : तुम्हारे इन साथी (मुहम्मद ﷺ) के बारे में एक मिसाल है, उनको उनके सामने ब्यान करो। दूसरे फ़रिश्तों ने कहा : वह तो सो रहे हैं (लिहाज़ा ब्यान करने से क्या फ़ायदा?) उनमें से बाज़ ने कहा : बेशक आंखें सो रही हैं, लेकिन दिल तो जाग रहा है। फिर फ़रिश्ते एक दूसरे से कहने लगे : उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक शख़्स ने मकान बनाया और उसमें दावत का इंतज़ाम किया। फिर लोगों को बुलाने के लिए आदमी भेजा। जिसने इस बुलाने वाले की बात मान, ली वह मकान में दाख़िल होगा और खाना भी खाएगा और जिसने इस बुलाने वाले की बात न मानी वह न मकान में दाख़िल होगा और न ही खाना खाएगा। यह सुनकर फ़रिश्तों ने आपस में कहा : इस मिसाल की वज़ाहत करो, ताकि यह समझ लें। बाज़ ने कहा : यह तो सो रहे हैं (वज़ाहत करने से क्या फ़ायदा?) दूसरों ने कहा : आंखें सो रही हैं मगर दिल तो बेदार है। फिर कहने लगे : यह मकान जन्नत है (जिसे अल्लाह तआला ने बनाया और उसमें मुख़्तलिफ़ नेमतें रखकर दावत का इंतज़ाम किया) और (उस जन्नत की तरफ़) बुलाने वाले हज़रत मुहम्मद ﷺ हैं। जिसने मुहम्मद ﷺ की इताअ़त की, उसने अल्लाह तआला की इताअ़त की (लिहाज़ा वह जन्नत में दाख़िल होगा और वहां की नेमतें हासिल करेगा) और जिसने मुहम्मद ﷺ की नाफ़रमानी की, उसने अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की (लिहाज़ा वह जन्नत की नेमतों से महरूम रहेगा) मुहम्मद ﷺ ने लोगों की दो क़िस्में बना दीं (फ़रमांबरदार

और न मानने वाले)। (बुख़ारी)

फ़ायदा : हज़राते अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम की यह ख़ुसूसियत है कि उनकी नींद आम इंसानों की नींद से मुख़्तलिफ़ होती है। आम इंसान नींद की हालत में बिल्कुल बेख़बर होते हैं, जबकि अम्बिया नींद की हालत में भी बिल्कुल बेख़बर नहीं होते। उनकी नींद का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ आंखों से होता है, दिल नींद की हालत में भी अल्लाह तआ़ला की ज़ाते आ़ली से जुड़ा रहता है। (बज़लुल मजहूद)

﴿ 95 ﴾ عَنْ اَبِيْ مُوْسٰى رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : اِنَّمَا مَثَلِيْ وَمَثَلُ مَا بَعَثَنِيَ اللّٰهُ بِهٖ كَمَثَلِ رَجُلٍ اَتٰى قَوْمًا فَقَالَ: يَا قَوْمِيْ اِنِّيْ رَاَيْتُ الْجَيْشَ بِعَيْنَيَّ، وَاِنِّيْ اَنَا النَّذِيْرُ الْعُرْيَانُ، فَالنَّجَاءَ، فَاَطَاعَهُ طَائِفَةٌ مِنْ قَوْمِهٖ فَاَدْلَجُوْا فَانْطَلَقُوْا عَلٰى مَهَلِهِمْ فَنَجَوْا، وَكَذَّبَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ فَاَصْبَحُوْا مَكَانَهُمْ، فَصَبَّحَهُمُ الْجَيْشُ فَاَهْلَكَهُمْ وَاجْتَاحَهُمْ، فَذٰلِكَ مَثَلُ مَنْ اَطَاعَنِيْ فَاتَّبَعَ مَا جِئْتُ بِهٖ، وَمَثَلُ مَنْ عَصَانِيْ وَكَذَّبَ بِمَا جِئْتُ بِهٖ مِنَ الْحَقِّ.

رواه البخاري باب الاقتداء بسنن رسول الله ﷺ، رقم: ٧٢٨٣

95. हज़रत अबू मूसा ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी और इस दीन की मिसाल जो अल्लाह तआ़ला ने मुझे देकर भेजा है, उस शख़्स की-सी है जो अपनी क़ौम के पास आया और कहा मेरी क़ौम! मैंने अपनी आंखों से दुश्मन का लश्कर देखा है और मैं एक सच्चा डराने वाला हूं, लिहाज़ा नजात की फ़िक्र करो। इस पर उसकी क़ौम के कुछ लोगों ने तो उसका कहना माना और आहिस्ता-आहिस्ता रात में ही चल पड़े और दुश्मन से नजात पा ली। कुछ लोगों ने उसको झूठा समझा और सुबह तक अपने घरों में रहे। दुश्मन का लश्कर सुबह होते ही उन पर टूट पड़ा और उनको तबाह व बरबाद कर डाला। यही मिसाल उस शख़्स की है जिसने मेरी बात मान ली और मेरे लाए हुए दीन की पैरवी की (वह नजात पा गया) और यही मिसाल उस शख़्स की है जिसने मेरी बात न मानी और इस दीन को झुठला दिया, जिसको मैं लेकर आया हूं (वह हलाक हो गया)। (बुख़ारी)

फ़ायदा : चूंकि अरबों में सुबह सवेरे हमला करने का रिवाज था, इस वजह से दुश्मन के हमले से महफ़ूज़ रहने के लिए रातों रात सफ़र किया जाता था।

﴿ 96 ﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ عُمَرُبْنُ الْخَطَّابِ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ

فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ! إِنِّي مَرَرْتُ بِأَخٍ لِي مِنْ قُرَيْظَةَ فَكَتَبَ لِي جَوَامِعَ مِنَ التَّوْرَاةِ، أَلاَ أَعْرِضُهَا عَلَيْكَ؟ قَالَ: فَتَغَيَّرَ وَجْهُ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ عَبْدُ اللهِ يَعْنِي ابْنَ ثَابِتٍ، فَقُلْتُ لَهُ: أَلاَ تَرَى مَا بِوَجْهِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: رَضِينَا بِاللهِ تَعَالَى رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ رَسُولاً، قَالَ: فَسُرِّيَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَقَالَ: وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ، لَوْ أَصْبَحَ فِيكُمْ مُوسَى ثُمَّ اتَّبَعْتُمُوهُ وَتَرَكْتُمُونِي لَضَلَلْتُمْ، إِنَّكُمْ حَظِّي مِنَ الْأُمَمِ وَأَنَا حَظُّكُمْ مِنَ النَّبِيِّينَ. رواه احمد ٤/٢٦٥

96. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन साबित ﷺ रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरा अपने एक भाई के पास से गुज़र हुआ, जो कि क़बीला बनी क़ुरैज़ा में से है। उसने (मेरे फ़ायदे की गरज़ से) तौरात से कुछ जामेअ़ बातें लिख कर दी हैं, इजाज़त हो तो आप के सामने पेश कर दूं? हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ के चेहरा मुबारक का रंग बदल गया। मैंने कहा : उमर! क्या आप रसूलुल्लाह ﷺ के चेहरा मुबारक पर गुस्से के आसार नहीं देख रहे? हज़रत उमर ﷺ को फ़ौरन अपनी ग़लती का एहसास हुआ और अ़र्ज़ किया "رَضِينَا بِاللهِ تَعَالَى رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ رَسُولاً" (हम अल्लाह तआ़ला को रब, इस्लाम को दीन और मुहम्मद ﷺ को रसूल मानकर राज़ी हो चुके हैं।) ये कलिमे सुनकर आप ﷺ के चेहरे से गुस्से का असर ज़ाइल हुआ और इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मुहम्मद ﷺ की जान है, अगर मूसा (अ़लैहिस्सलाम) तुम में मौजूद होते और तुम मुझे छोड़कर उनकी इत्तबा करते, तो यक़ीनन गुमराह हो जाते। उम्मतों में से तुम मेरे हिस्से में आए हो और नबियों में से मैं तुम्हारे हिस्से में आया हूं (लिहाज़ा तुम्हारी कामयाबी मेरी ही इत्तबा में है)। (मुस्नद अहमद)

﴿ 97 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: كُلُّ أُمَّتِي يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ أَبَى، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ! وَمَنْ يَأْبَى؟ قَالَ: مَنْ أَطَاعَنِي دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ أَبَى. رواه البخاري، باب الاقتداء بسنن رسول الله ﷺ برقم: ٧٢٨٠

97. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी सारी उम्मत जन्नत में जाएगी सिवाए उन लोगों के जो इन्कार कर दें। सहाबा ﷺ ने दरयाफ़्त किया : या रसूलुल्लाह! (जन्नत में जाने से) कौन इन्कार कर सकता है? आप ﷺ ने जवाब में इर्शाद फ़रमाया : जिसने मेरी इताअ़त की वह जन्नत में

दाख़िल हुआ और जिसने मेरी नाफ़रमानी की, यक़ीनन उसने जन्नत में जाने से इन्कार कर दिया। (बुख़ारी)

﴿ 98 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتّٰى يَكُوْنَ هَوَاهُ تَبَعًا لِمَا جِئْتُ بِهٖ.

رواه البغوي في شرح السنة ١/٢١٣، وقال النووي: حديث صحيح رويناه في كتاب الحجة باسناد صحيح، جامع العلوم والحكم ص ٣٦٤

98. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्रू ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कोई शख़्स उस वक़्त तक (कामिल) ईमान वाला नहीं हो सकता, जब तक कि उसकी नफ़्सानी चाहतें इस दीन की ताबेअ् न हो जाएं, जिसको मैं लेकर आया हूं। (शरहुस्सुन्नः)

﴿ 99 ﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا بُنَيَّ إِنْ قَدَرْتَ أَنْ تُصْبِحَ وَتُمْسِيَ لَيْسَ فِيْ قَلْبِكَ غِشٌّ لِأَحَدٍ فَافْعَلْ، ثُمَّ قَالَ لِيْ: يَا بُنَيَّ وَذٰلِكَ مِنْ سُنَّتِيْ، وَمَنْ أَحْيَا سُنَّتِيْ فَقَدْ أَحَبَّنِيْ وَمَنْ أَحَبَّنِيْ كَانَ مَعِيَ فِي الْجَنَّةِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء في الأخذ بالسنة ...، رقم: ٢٦٧٨

99. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे इर्शाद फ़रमाया : मेरे बेटे! अगर तुम सुबह व शाम (हर वक़्त) अपने दिल की यह कैफ़ियत बना सकते हो कि तुम्हारे दिल में किसी के बारे में ज़रा-भी खोट न हो, तो ज़रूर ऐसा करो। फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे बेटे! यह बात मेरी सुन्नत में से है और जिसने मेरी सुन्नत को ज़िन्दा किया, उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की, वह मेरे साथ जन्नत में होगा। (तिर्मिज़ी)

﴿100﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: جَاءَ ثَلَاثَةُ رَهْطٍ إِلٰى بُيُوْتِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ يَسْأَلُوْنَ عَنْ عِبَادَةِ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمَّا أُخْبِرُوْا كَأَنَّهُمْ تَقَالُّوْهَا فَقَالُوْا: وَأَيْنَ نَحْنُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَدْ غَفَرَ اللهُ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ وَمَا تَأَخَّرَ، فَقَالَ أَحَدُهُمْ: أَمَّا أَنَا فَأَنَا أُصَلِّي اللَّيْلَ أَبَدًا، وَقَالَ آخَرُ: أَنَا أَصُوْمُ الدَّهْرَ وَلَا أُفْطِرُ، وَقَالَ آخَرُ: أَنَا أَعْتَزِلُ النِّسَاءَ فَلَا أَتَزَوَّجُ أَبَدًا، فَجَاءَ إِلَيْهِمْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: أَنْتُمُ الَّذِيْنَ قُلْتُمْ كَذَا وَكَذَا؟ أَمَا وَاللهِ إِنِّيْ لَأَخْشَاكُمْ لِلّٰهِ وَأَتْقَاكُمْ لَهٗ، لٰكِنِّيْ أَصُوْمُ وَأُفْطِرُ، وَأُصَلِّيْ وَأَرْقُدُ، وَأَتَزَوَّجُ النِّسَاءَ، فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِيْ فَلَيْسَ مِنِّيْ.

رواه البخاري، باب الترغيب في النكاح، رقم: ٥٠٦٣

100. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ की इबादत के बारे में पूछने के लिए तीन शख़्स अज़्वाजे मुतह्हरात के पास आए। जब उन लोगों को रसूलुल्लाह ﷺ की इबादत का हाल बताया गया तो उन्होंने अपनी इबादत को थोड़ा समझा और कहा : हमारा रसूलुल्लाह ﷺ से क्या मुक़ाबला? अल्लाह तआला ने आपकी अगली पिछली लग़ज़िशें (अगर हों भी, तो) माफ़ फ़रमा दी हैं। उनमें से एक ने कहा : मैं हमेशा रात भर नमाज़ पढ़ा करूंगा। दूसरे ने कहा, मैं हमेशा रोज़ा रखा करूंगा और कभी नाग़ा नहीं करूंगा। तीसरे ने कहा, मैं औरतों से दूर रहूंगा, कभी निकाह नहीं करूंगा (उनमें आपस में यह गुफ़्तगू हो रही थी कि) रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया : क्या तुम लोगों ने ये बातें कही हैं? ग़ौर से सुनो, अल्लाह तआला की क़सम! मैं तुम में सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला से डरने वाला हूं और तुम में सबसे ज़्यादा तक़्वा अख़्तियार करने वाला हूं, लेकिन मैं रोज़ा रखता हूं और नहीं भी रखता; नमाज़ पढ़ता हूं और सोता भी हूं और औरतों से निकाह भी करता हूं (यही मेरा तरीक़ा है, लिहाज़ा) जिसने मेरे तरीक़े से एराज़ किया वह मुझसे नहीं है। (बुख़ारी)

﴿101﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ تَمَسَّكَ بِسُنَّتِیْ عِنْدَ فَسَادِ اُمَّتِیْ فَلَهٗ اَجْرُ شَهِیْدٍ.

رواه الطبراني باسناد لا باس به الترغيب ١/٨٠

101. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि जिसने मेरे तरीक़े को मेरी उम्मत के बिगाड़ के वक़्त मज़बूती से थामे रखा उसे शहीद का सवाब मिलेगा। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿102﴾ عَنْ مَالِكِ بْنِ اَنَسٍ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّهٗ بَلَغَهٗ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: تَرَكْتُ فِیْكُمْ اَمْرَیْنِ لَنْ تَضِلُّوْا مَا تَمَسَّكْتُمْ بِهِمَا كِتَابَ اللهِ وَسُنَّةَ نَبِیِّهٖ.

رواه الإمام مالك في الموطا، النهي عن القول في القدر ص ٧٠٢

102. हज़रत मालिक बिन अनस रह० फ़रमाते हैं कि मुझे यह रिवायत पहुंची है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने तुम्हारे पास दो चीज़ें छोड़ी हैं, जब तक तुम उनको मज़बूती से पकड़े रहोगे, हरगिज़ गुमराह नहीं होगे। वह अल्लाह तआला की किताब और उसके रसूल की सुन्नत है। (मुअत्ता इमाम मालिक)

﴿103﴾ عَنِ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: وَعَظَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَوْمًا بَعْدَ

صَلٰوةِ الْغَدَاةِ مَوْعِظَةً ذَرَفَتْ مِنْهَا الْعُيُوْنُ وَوَجِلَتْ مِنْهَا الْقُلُوْبُ، فَقَالَ رَجُلٌ: إِنَّ هٰذِهٖ مَوْعِظَةُ مُوَدِّعٍ فَبِمَاذَا تَعْهَدُ إِلَيْنَا يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: أُوْصِيْكُمْ بِتَقْوَى اللهِ، وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ وَإِنْ عَبْدٌ حَبَشِيٌّ، فَإِنَّهٗ مَنْ يَعِشْ مِنْكُمْ يَرَ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا، وَإِيَّاكُمْ وَمُحْدَثَاتِ الْأُمُوْرِ، فَإِنَّهَا ضَلَالَةٌ فَمَنْ أَدْرَكَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَعَلَيْكُمْ بِسُنَّتِيْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ الْمَهْدِيِّيْنَ، عَضُّوْا عَلَيْهَا بِالنَّوَاجِذِ.

رواه الترمذي، وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في الاخذ بالسنة، الجامع الترمذي ٥٢/٢ طبع فاروقي كتب خانه، ملتان

103. हज़रत इरबाज़ बिन सारिया ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें एक दिन सुबह की नमाज़ के बाद ऐसे असर दर्द भरे अन्दाज़ में नसीहत फ़रमाई कि आंखों से आंसू जारी हो गए और दिलों में ख़ौफ़ पैदा हो गया। एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : यह तो रुख़सत होने वाले की नसीहत मालूम होती है, फिर आप हमें किस चीज़ की वसीयत फ़रमाते हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला से डरते रहने की और (अमीर की बात) सुनने और मानने की वसीयत करता हूं, अगरचे वह अमीर हब्शी गुलाम हो। तुम में जो मेरे बाद ज़िन्दा रहेगा वह बहुत इख़्तिलाफ़ात देखेगा। तुम दीन में नई-नई बातें पैदा करने से बचो, क्योंकि हर नई बात गुमराही है। लिहाज़ा तुम ऐसा ज़माना पाओ तो मेरी और हिदायतयाफ़्ता खुलफ़ा-ए-राशिदीन की सुन्नत को मज़बूती से थामे रखना। (तिर्मिज़ी)

﴿104﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ رَأَى خَاتَمًا مِنْ ذَهَبٍ فِيْ يَدِ رَجُلٍ، فَنَزَعَهٗ فَطَرَحَهٗ وَقَالَ: يَعْمِدُ أَحَدُكُمْ إِلَى جَمْرَةٍ مِنْ نَارٍ فَيَجْعَلُهَا فِيْ يَدِهٖ فَقِيْلَ لِلرَّجُلِ بَعْدَ مَا ذَهَبَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: خُذْ خَاتَمَكَ انْتَفِعْ بِهٖ، قَالَ: لَا، وَاللهِ! لَا آخُذُهٗ أَبَدًا، وَقَدْ طَرَحَهٗ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ.

رواه مسلم، باب تحريم خاتم الذهب ... رقم: ٥٤٧٢

104. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक शख़्स के हाथ में सोने की अंगूठी देखी तो आपने उसे उतार कर फेंक दिया और फ़रमाया : (कितनी ताज्जुब की बात है कि) तुममें से कोई शख़्स आग के अंगारे को अपने हाथ में रखना चाहता है, यानी जो शख़्स अपने हाथों में सोने की कोई चीज़ पहनेगा, उसका हाथ दोज़ख़ में चला जाएगा। रसूलुल्लाह ﷺ के तशरीफ़ ले जाने के बाद उस शख़्स से कहा गया : अपनी अंगूठी ले लो (और) इस (को बेचकर या हदिया

करके इस) से फ़ायदा उठा लो! उसने जवाब दिया : अल्लाह की क़सम! नहीं, जिस चीज़ को रसूलुल्लाह ﷺ ने फेंक दिया हो, मैं उसको कभी नहीं उठाऊंगा। (मुस्लिम)

﴿105﴾ قَالَتْ زَيْنَبُ: دَخَلْتُ عَلَى أُمِّ حَبِيبَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ حِينَ تُوُفِّيَ أَبُوهَا أَبُو سُفْيَانَ بْنُ حَرْبٍ فَدَعَتْ أُمُّ حَبِيبَةَ بِطِيبٍ فِيهِ صُفْرَةٌ خَلُوقٌ أَوْغَيْرُهُ فَدَهَنَتْ مِنْهُ جَارِيَةً ثُمَّ مَسَّتْ بِعَارِضَيْهَا ثُمَّ قَالَتْ: وَاللهِ مَالِيْ بِالطِّيبِ مِنْ حَاجَةٍ غَيْرَ أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: لَا يَحِلُّ لِامْرَأَةٍ تُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ تُحِدَّ عَلَى مَيِّتٍ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ إِلَّا عَلَى زَوْجٍ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا. رواه البخاري، باب تحد المتوفى عنها اربعة اشهر وعشرا، رقم: ٥٣٣٤

105. हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ब्यान फ़रमाती हैं कि मैं नबी करीम ﷺ की अहलिया मुहतरमा हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास उस वक़्त गई जब उनके वालिद हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब ؓ का इंतिक़ाल हुआ था। हज़रत उम्मे हबीबा ؓ ने ख़ुशबू मंगवाई, जिसमें ख़लूक़ या किसी और चीज़ की मिलावट की वजह से ज़र्दी थी, उसमें से कुछ ख़ुश्बू लौंडी को लगाई, फिर उसे अपने रुख़्सारों पर मल लिया, इसके बाद फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! मुझे ख़ुश्बू के इस्तेमाल करने की कोई ज़रूरत न थी। बात सिर्फ़ यह है कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है कि जो औरत अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो, उसके लिए जायज़ नहीं कि वह तीन दिन से ज़्यादा किसी का सोग मनाए, सिवाए शौहर के (कि उसका सोग) चार महीने दस दिन है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : ख़लूक़ एक क़िस्म की मुरक्कब ख़ुश्बू का नाम है, जिसके अज्ज़ा में अक्सर हिस्सा ज़ाफ़रान का होता है।

﴿106﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ: مَتَى السَّاعَةُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: مَا أَعْدَدْتَ لَهَا؟ قَالَ: مَا أَعْدَدْتُ لَهَا مِنْ كَثِيرِ صَلٰوةٍ وَلَا صَوْمٍ وَلَا صَدَقَةٍ، وَلٰكِنِّي أُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ، قَالَ: أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ.

رواه البخاري، باب علامة الحب في الله ...، رقم: ٦١٧١

106. हज़रत अनस बिन मालिक ؓ से रिवायत है कि एक शख़्स ने नबी करीम ﷺ से पूछा, क़ियामत कब आएगी? आपने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के लिए तुमने क्या तैयार कर रखा है? उसने अर्ज़ किया : मैंने क़ियामत के लिए न तो ज़्यादा (नफ़्ली) नमाज़ें, न ज़्यादा (नफ़्ली) रोज़े तैयार किए हैं और न ज़्यादा सदक़ा। हां, एक बात है कि अल्लाह तआला और उनके रसूल से मुहब्बत रखता हूं। आ

फ़रमाया : तो फिर (क़ियामत में) तुम उन्हीं के साथ होगे जिनसे तुमने (दुनिया में) मुहब्बत रखी। (बुख़ारी)

﴿107﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! إِنَّكَ لَأَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ نَفْسِيْ، وَإِنَّكَ لَأَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَهْلِيْ وَمَالِيْ، وَإِنَّكَ لَأَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ وَلَدِيْ، وَإِنِّيْ لَأَكُوْنُ فِي الْبَيْتِ فَأَذْكُرُكَ فَمَا أَصْبِرُ حَتّٰى آتِيَ فَأَنْظُرَ إِلَيْكَ، وَإِذَا ذَكَرْتُ مَوْتِيْ وَمَوْتَكَ، عَرَفْتُ أَنَّكَ إِذَا دَخَلْتَ الْجَنَّةَ رُفِعْتَ مَعَ النَّبِيِّيْنَ، وَإِنِّيْ إِذَا دَخَلْتُ الْجَنَّةَ خَشِيْتُ أَنْ لَا أَرَاكَ، فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ شَيْئًا حَتّٰى نَزَلَ جِبْرِيْلُ بِهٰذِهِ الْآيَةِ: ﴿وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَأُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ أُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا﴾ رواه الطبراني في الصغير والاوسط ورجاله رجال الصحيح غير عبدالله بن عمران العابدي وهو ثقة، مجمع الزوائد ٧/٣

107. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक सहाबी रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप मुझे अपनी जान से भी ज़्यादा महबूब हैं; अपनी बीवी से भी ज़्यादा महबूब हैं; और अपनी औलाद से भी ज़्यादा महबूब हैं। मैं अपने घर में होता हूं और आप का ख़्याल आ जाता है तो सब्र नहीं आता जब तक कि हाज़िर होकर ज़ियारत न कर लूं। मुझे यह ख़बर है कि इस दुनिया से तो आपको और मुझे रुख़्सत होना है। इसके बाद आप तो अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम) के दर्जे पर चले जाएंगे और (मुझे अव्वल तो यह मालूम नहीं कि मैं जन्नत में पहुंचूंगा भी या नहीं)। अगर मैं जन्नत में पहुंच भी गया तो (चूंकि मेरा दर्जा आपसे बहुत नीचे होगा, इसलिए) मुझे अन्देशा है कि मैं वहां आप की ज़ियारत न कर सकूंगा, तो मुझे कैसे सब्र आएगा? रसूलुल्लाह ﷺ ने उनकी बात सुनकर कुछ जवाब न दिया, यहां तक कि ये आयत नाज़िल हुई। तर्जुमा : और जो शख़्स अल्लाह व रसूल का कहना मान लेगा तो ऐसे अशख़ास भी उन हज़रात के साथ होंगे जिन पर अल्लाह तआला ने इनाम फ़रमाया है, यानी अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सुलहा। और ये हज़रात बहुत अच्छे रफ़ीक़ हैं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

﴿108﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: مِنْ أَشَدِّ أُمَّتِيْ لِيْ حُبًّا، نَاسٌ يَكُوْنُوْنَ بَعْدِيْ، يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ رَآنِيْ بِأَهْلِهِ وَمَالِهِ. رواه مسلم، باب فيمن يود رؤية النبي ﷺ ... رقم: ٧١٤٥

108. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: मेरी उम्मत में मुझसे ज़्यादा मुहब्बत रखने वाले लोगों में से वे (भी) हैं जो मेरे बाद

आएंगे, उनकी यह आरज़ू होगी कि काश! वह अपना घर बार और माल सब क़ुरबान करके किसी तरह मुझ को देख लेते। (मुस्लिम)

﴾109﴿ عَنْ اَبِی هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: فُضِّلْتُ عَلَی الْاَنْبِیَاءِ بِسِتٍّ: اُعْطِیْتُ جَوَامِعَ الْکَلِمِ، وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ، وَاُحِلَّتْ لِیَ الْمَغَانِمُ، وَجُعِلَتْ لِیَ الْاَرْضُ طَهُوْرًا وَمَسْجِدًا، وَاُرْسِلْتُ اِلَی الْخَلْقِ کَافَّةً، وَخُتِمَ بِیَ النَّبِیُّوْنَ.

رواه مسلم، باب المساجد و مواضع الصلوة،رقم:١١٦٧

109. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे छः चीज़ों के ज़रिए दीगर अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम पर फ़ज़ीलत दी गई है: 1. मुझे जामेअ़ कलिमात अ़ता किए गए, 2. रोअ़्ब के ज़रिए मेरी मदद की गई (अल्लाह तआ़ला दुश्मनों के दिल में मेरा रौब और ख़ौफ़ पैदा फ़रमा देते हैं) 3. माले ग़नीमत मेरे लिए हलाल बना दिया गया (पिछली उम्मतों में माले ग़नीमत को आग आकर जला देती थी) 4. सारी ज़मीन को मेरे लिए मस्जिद यानी नमाज़ पढ़ने की जगह बना दी गई (पिछली उम्मतों में इबादत सिर्फ़ मख़सूस जगहों में अदा हो सकती थी) और सारी ज़मीन की (मिट्टी को) मेरे लिए पाक बना दिया गया (तयम्मुम के ज़रिए भी पाकी हासिल की जा सकती है) 5. सारी मख़्लूक़ के लिए मुझे नबी बना कर भेजा गया (मुझ से पहले अम्बिया को ख़ास तौर पर उनकी अपनी ही क़ौम की तरफ़ भेजा जाता था) 6. नुबुव्वत और रिसालत का सिलसिला मुझ पर ख़त्म किया गया, यानी अब मेरे बाद कोई नबी और रसूल नहीं आएगा। (मुस्लिम)

फ़ायदा : अल्लाह के रसूल ﷺ का इर्शाद, *'मुझे जामेअ़ कलिमे अ़ता किए गए हैं'* इसका मतलब यह है कि थोड़े-से लफ़्ज़ों पर मुश्तमिल छोटे जुम्लों में बहुत से मानी मौजूद होते हैं।

﴾110﴿ عَنْ عِرْبَاضِ بْنِ سَارِیَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ صَاحِبِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ یَقُوْلُ: اِنِّیْ عَبْدُ اللّٰهِ وَخَاتَمُ النَّبِیِّیْنَ. (الحدیث) رواه الحاکم

وقال: هذا حدیث صحیح الاسناد ولم یخرجاه ووافقه الذهبی ٢/٤١٨

110. हज़रत इरबाज़ बिन सारिया ﷺ से रिवायत है : फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : बिलाशुब्हा मैं अल्लाह तआ़ला का बन्दा और आख़िरी नबी हूं। (मुस्तदरक अहमद)

﴾111﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ مَثَلِیْ وَمَثَلَ الْاَنْبِیَاءِ مِنْ قَبْلِیْ كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنٰی بَیْتًا فَاَحْسَنَهٗ وَاَجْمَلَهٗ اِلَّا مَوْضِعَ لَبِنَةٍ مِنْ زَاوِیَةٍ فَجَعَلَ النَّاسُ یَطُوْفُوْنَ بِهٖ وَیَعْجَبُوْنَ لَهٗ وَیَقُوْلُوْنَ: هَلَّا وُضِعَتْ هٰذِهِ اللَّبِنَةُ؟ قَالَ: فَاَنَا اللَّبِنَةُ، وَاَنَا خَاتَمُ النَّبِیِّیْنَ.

رواه البخاری، باب خاتم النبیین، رقم: ٣٥٣٥

111. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि मेरी और मुझसे पहले अम्बिया ﷺ की मिसाल ऐसी है जैसे एक शख़्स ने घर बनाया हो और उसमें हर तरह का हुस्न और ख़ूबसूरती पैदा की हो लेकिन घर के किसी कोने में एक ईंट की जगह छोड़ दी हो। अब लोग मकान के चारों तरफ़ घूमते हैं, मकान की ख़ुशनुमाई को पसन्द करते हैं, लेकिन यह भी कहते जाते हैं कि यहां पर एक ईंट क्यों न रखी गई, तो मैं ही वह ईंट हूं और मैं आख़िरी नबी हूं। (बुख़ारी)

﴾112﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنْتُ خَلْفَ النَّبِیِّ ﷺ یَوْمًا، فَقَالَ: یَا غُلَامُ! اِنِّیْ اُعَلِّمُكَ كَلِمَاتٍ: اِحْفَظِ اللهَ یَحْفَظْكَ، اِحْفَظِ اللهَ تَجِدْهُ تُجَاهَكَ، اِذَا سَاَلْتَ فَاسْاَلِ اللهَ، وَاِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللهِ، وَاعْلَمْ اَنَّ الْاُمَّةَ لَوِ اجْتَمَعَتْ عَلٰی اَنْ یَنْفَعُوْكَ بِشَیْءٍ لَمْ یَنْفَعُوْكَ اِلَّا بِشَیْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللهُ لَكَ، وَاِنِ اجْتَمَعُوْا عَلٰی اَنْ یَضُرُّوْكَ بِشَیْءٍ لَمْ یَضُرُّوْكَ اِلَّا بِشَیْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللهُ عَلَیْكَ، رُفِعَتِ الْاَقْلَامُ وَجَفَّتِ الصُّحُفُ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن صحیح باب حدیث حنظلة ... رقم: ٢٥١٦

112. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन (सवारी पर) नबी करीम ﷺ के पीछे बैठा हुआ था। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बच्चे! मैं तुम्हें चन्द (अहम) बातें सिखाता हूं। अल्लाह तआला (के अहकाम) की हिफ़ाज़त करो, अल्लाह तआला तुम्हारी हिफ़ाज़त फ़रमाएंगे। अल्लाह तआला के हुक़ूक़ का ख़्याल रखो, उनको अपने सामने पाओगे (उनकी मदद तुम्हारे साथ रहेगी); जब मांगो तो अल्लाह तआला से मांगो, जब मदद लो तो अल्लाह तआला से (ही) लो, और यह बात जान लो कि अगर सारी उम्मत जमा होकर तुम्हें कुछ नफ़ा पहुंचाना चाहे तो वह तुम्हें इतना ही नफ़ा पहुंचा सकती है जितना कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए (तक़दीर में) लिख दिया है, और अगर सब मिल कर नुक़सान पहुंचाना चाहे तो इतना ही नुक़सान पहुंचा सकते हैं जितना कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी (तक़दीर में) लिख दिया है। (तक़दीर के) क़लमों (से सब कुछ लिखवा कर उन) को उठा लिया गया है और (तक़दीर के)

कागज़ात की स्याही ख़ुश्क हो चुकी है। यानी तक़दीरी फ़ैसलों में ज़र्रा बराबर भी तब्दीली मुमकिन नहीं है। (तिर्मिज़ी)

﴿113﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لِكُلِّ شَيْءٍ حَقِيْقَةٌ وَمَا بَلَغَ عَبْدٌ حَقِيْقَةَ الْاِيْمَانِ حَتّٰى يَعْلَمَ اَنَّ مَا اَصَابَهُ لَمْ يَكُنْ لِيُخْطِئَهُ وَمَا اَخْطَاَهُ لَمْ يَكُنْ لِيُصِيْبَهُ.

رواه احمد والطبراني ورجاله ثقات، ورواه الطبراني في الاوسط، مجمع الزوائد ٧/٤٠٤

113. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर चीज़ की एक हक़ीक़त होती है। कोई बन्दा उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त को नहीं पहुंच सकता, जब तक कि उसका पुख़्ता यक़ीन यह न हो कि जो हालात उसको पेश आए हैं वह आने ही थे, और जो हालात उस पर नहीं आए वे आ ही नहीं सकते थे। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : इंसान जिन हालात से भी दो चार हो इस बात का यक़ीन होना चाहिए कि जो कुछ भी पेश आया वह अल्लाह तआला की तरफ़ से मुक़द्दर था और मालूम नहीं कि इसमें मेरे लिए क्या चीज़ छुपी हुई हो। तक़दीर पर यक़ीन इंसान के ईमान की हिफ़ाज़त और वस्वसों से इत्मीनान का ज़रिया है।

﴿114﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: كَتَبَ اللهُ مَقَادِيْرَ الْخَلَائِقِ قَبْلَ اَنْ يَخْلُقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِخَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ، قَالَ: وَعَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ. رواه مسلم، باب حجاج آدم وموسى صلى الله عليهما وسلم، رقم: ٦٧٤٨

114. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र बिन आस ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान बनाने से पच्चास हज़ार साल पहले तमाम मख़्लूक़ात की तक़दीरें लिख दीं, उस वक़्त अल्लाह तआला का अर्श पानी पर था। (मुस्लिम)

﴿115﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ فَرَغَ اِلٰى كُلِّ عَبْدٍ مِنْ خَلْقِهِ خَمْسٍ: مِنْ اَجَلِهِ وَعَمَلِهِ وَمَضْجَعِهِ وَاَثَرِهِ وَرِزْقِهِ. رواه احمد ٥/١٩٧

115. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला हर बन्दे की पांच बातें लिख कर फ़ारिग़ हो चुके हैं। उसकी मौत का वक़्त, उसका रिज़्क़, उसकी उम्र, बदबख़्त है या नेकबख़्त। (मुस्नद अहमद)

﴿116﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يُؤْمِنُ الْمَرْءُ حَتّٰى يُؤْمِنَ بِالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ. رواه احمد ١٨١/٢

116. हज़रत उम्रू बिन शुऐब अपने बाप दादा के हवाले से रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि हर अच्छी बुरी तक़दीर पर ईमान न रखे। (मुस्नद अहमद)

﴿117﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰى يُؤْمِنَ بِاَرْبَعٍ: يَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ بَعَثَنِيْ بِالْحَقِّ، وَيُؤْمِنُ بِالْمَوْتِ، وَيُؤْمِنُ بِالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ، وَيُؤْمِنُ بِالْقَدْرِ. رواه الترمذي، باب ماجاء ان الايمان بالقدر ......، رقم ٢١٤٥

117. हज़रत अ़ली ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कोई बन्दा मोमिन नहीं हो सकता, जब तक चार चीज़ों पर ईमान न ले आए। 1. इस बात की गवाही दे कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई ज़ात इबादत व बंदगी के लायक़ नहीं और मैं (मुहम्मद ﷺ) अल्लाह तआ़ला का रसूल हूं, उन्होंने मुझे हक़ देकर भेजा है, 2. मरने पर ईमान लाए, 3. मरने के बाद दोबारा उठाए जाने पर ईमान लाए, 4. तक़दीर पर ईमान लाए। (तिर्मिज़ी)

﴿118﴾ عَنْ اَبِيْ حَفْصَةَ رَحِمَهُ اللّٰهُ قَالَ: قَالَ عُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ لِابْنِهٖ: يَا بُنَيَّ! اِنَّكَ لَنْ تَجِدَ طَعْمَ حَقِيْقَةِ الْاِيْمَانِ حَتّٰى تَعْلَمَ اَنَّ مَا اَصَابَكَ لَمْ يَكُنْ لِيُخْطِئَكَ وَمَا اَخْطَاَكَ لَمْ يَكُنْ لِيُصِيْبَكَ، سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ اَوَّلَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ تَعَالٰى الْقَلَمَ فَقَالَ لَهٗ: اُكْتُبْ، فَقَالَ: رَبِّ وَمَاذَا اَكْتُبُ؟ قَالَ: اُكْتُبْ مَقَادِيْرَ كُلِّ شَيْءٍ حَتّٰى تَقُوْمَ السَّاعَةُ، يَا بُنَيَّ! اِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ مَاتَ عَلٰى غَيْرِ هٰذَا فَلَيْسَ مِنِّيْ.

رواه ابو داؤد، باب في القدر، رقم: ٤٧٠٠

118. हज़रत अबू हफ़्सा रहमतुल्लाह अ़लैह रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ ने अपने बेटे से कहा : मेरे बेटे! तुम को हक़ीक़ी ईमान की लज़्ज़त हरगिज़ हासिल नहीं हो सकती, जब तक कि तुम इसका यक़ीन न कर लो कि जो कुछ तुम्हें पेश आया है तुम इससे किसी तरह छूट नहीं सकते थे और जो तुम्हें पेश नहीं आया वह आ ही नहीं सकता था। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि जो चीज़ अल्लाह तआ़ला ने सबसे पहले बनाई वह क़लम है, फिर

उसको हुक्म दिया : लिख। उसने अ़र्ज़ किया : परवरदिगार! क्या लिखूं? इर्शाद हुआ : क़ियामत तक जिस चीज़ के लिए जो कुछ मुक़द्दर हो चुका है वह सब लिख। हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ ने कहा : मेरे बेटे! मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि जो शख़्स इस यक़ीन के अलावा किसी दूसरे यक़ीन पर मरेगा उसका मुझ से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं। (अबूदाऊद)

﴿119﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: وَكَّلَ اللهُ بِالرَّحِمِ مَلَكًا فَيَقُوْلُ: أَيْ رَبِّ نُطْفَةٌ، أَيْ رَبِّ عَلَقَةٌ، أَيْ رَبِّ مُضْغَةٌ، فَإِذَا أَرَادَ اللهُ أَنْ يَقْضِيَ خَلْقَهَا، قَالَ: أَيْ رَبِّ ذَكَرٌ أَمْ أُنْثَى؟ أَشَقِيٌّ أَمْ سَعِيْدٌ؟ فَمَا الرِّزْقُ؟ فَمَا الْأَجَلُ؟ فَيُكْتَبُ كَذٰلِكَ فِي بَطْنِ أُمِّهِ.

رواه البخاري، كتاب القدر، رقم: ٦٥٩٥

119. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने बच्चादानी पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमा रखा है। वह ह अ़र्ज़ करता रहता है, ऐ मेरे रब! अब यह नुत्फ़ा है। ऐ मेरे रब! अब यह जमा हुआ ख़ून है। ऐ मेरे रब! अब यह गोश्त का लोथड़ा है, (अल्लाह तआ़ला के सब कुछ ानने के बावजूद फ़रिश्ता अल्लाह तआ़ला को बच्चे की मुख़्तलिफ़ शक्लें बताता हता है), फिर जब अल्लाह तआ़ला उसको पैदा करना चाहते हैं, तो फ़रिश्ता पूछता है इसके मुतअ़ल्लिक़ क्या लिखूं? लड़का या लड़की? बदबख़्त या नेकबख़्त? रोज़ी या होगी? उम्र कितनी होगी? चुनांचे सारी तफ़सीलात उसी वक़्त लिख ली जाती हैं जब वह मां के पेट में होता है। (बुख़ारी)

﴿120﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ عِظَمَ الْجَزَاءِ مَعَ عِظَمِ الْبَلَاءِ، وَإِنَّ اللهَ إِذَا أَحَبَّ قَوْمًا ابْتَلَاهُمْ، فَمَنْ رَضِيَ فَلَهُ الرِّضَا وَمَنْ سَخِطَ فَلَهُ السَّخَطُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء في الصبر على البلاء، رقم: ٢٣٩٦

120. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: जितनी आज़माइश सख़्त होती है, उसका बदला भी उतना ही बड़ा मिलता है और अल्लाह तआ़ला जब किसी क़ौम से मुहब्बत करते हैं तो उसको आज़माइश में डालते हैं फिर जो उस आज़माइश पर राज़ी रहा अल्लाह तआ़ला भी उससे राज़ी हो जाते हैं और जो नाराज़ हुआ अल्लाह तआ़ला भी उससे नाराज़ हो जाते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿121﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ عَ

الطَّاعُوْنِ فَاَخْبَرَ نِيْ اَنَّهُ عَذَابٌ يَبْعَثُهُ اللهُ عَلٰى مَنْ يَّشَاءُ، وَاَنَّ اللهَ جَعَلَهُ رَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ، لَيْسَ مِنْ اَحَدٍ يَقَعُ الطَّاعُوْنُ فَيَمْكُثُ فِيْ بَلَدِهٖ صَابِرًا مُحْتَسِبًا يَعْلَمُ اَنَّهُ لَا يُصِيْبُهُ اِلَّا مَا كَتَبَ اللهُ اِلَّا كَانَ لَهُ مِثْلُ اَجْرِ شَهِيْدٍ. رواه البخاري، كتاب احاديث الانبياء،رقم: ٣٤٧٤

121. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा, जो कि रसूलुल्लाह ﷺ की अह्लिया मुहतरमा हैं, फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ताऊन के बारे में पूछा। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह अल्लाह तआला का एक अज़ाब है, जिस पर चाहें नाज़िल फ़रमाएं, (लेकिन) उसी को अल्लाह तआला ने मोमिनीन के लिए रहमत बना दिया है। अगर किसी शख़्स के इलाक़े में ताऊन की वबा फैल जाए और वह अपने इलाक़े में सब्र के साथ सवाब की उम्मीद पर ठहरा रहे और इसका यक़ीन रखे कि वही होगा जो अल्लाह तआला ने मुक़द्दर कर दिया है, (फिर तक़दीरी तौर पर वबा में मुब्तला हो जाए और उसकी मौत वाक़ेअ् हो जाए) तो उसे शहीद के बराबर सवाब मिलेगा।

फ़ायदा : हुक्म यह है कि ताऊन के इलाक़े से न भागा जाए इसी वजह से हदीस शरीफ़ में सवाब की उम्मीद पर ठहरने को कहा गया है। (बुख़ारी)

﴿122﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَدَمْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَاَنَا ابْنُ ثَمَانِ سِنِيْنَ خَدَمْتُهُ عَشْرَ سِنِيْنَ فَمَا لَامَنِيْ عَلٰى شَيْءٍ قَطُّ اُتِيَ فِيْهِ عَلٰى يَدَيَّ فَاِنْ لَامَنِيْ لَائِمٌ مِنْ اَهْلِهٖ قَالَ: دَعُوْهُ فَاِنَّهُ لَوْ قُضِيَ شَيْءٌ كَانَ. مصابيح السنة للبغوي وعده من الحسان ٤/٥٧

122. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने आठ साल की उम्र में नबी करीम ﷺ की ख़िदमत शुरू की और दस साल तक ख़िदमत की। (इस अ़र्सा में) जब कभी मेरे हाथ से कोई नुक़सान हुआ तो आप ने मुझे कभी इस बात पर मलामत नहीं फ़रमाई। अगर आप के घरवालों में से कभी किसी ने कुछ कहा भी तो आप ने फ़रमा दिया, रहने दो (कुछ न कहो) क्योंकि अगर किसी नुक़सान का होना मुक़द्दर होता है तो वह होकर रहता है। (मसाबीहुस्सुन्नः)

﴿123﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: كُلُّ شَيْءٍ بِقَدَرٍ، حَتّٰى الْعَجْزُ وَالْكَيْسُ. رواه مسلم،باب كل شيء بقدر،رقم: ٦٧٥١

123. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सब कुछ तक़दीर में लिखा जा चुका है, यहां तक कि (इंसान का) नासमझ और नाकारा होना, होशियार और क़ाबिल होना भी तक़दीर ही से है (मुस्लिम)

﴿124﴾ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُؤْمِنُ الْقَوِىُّ خَيْرٌ وَاَحَبُّ اِلَى اللهِ مِنَ الْمُؤْمِنِ الضَّعِيْفِ، وَفِىْ كُلٍّ خَيْرٌ، اِحْرِصْ عَلٰى مَا يَنْفَعُكَ وَاسْتَعِنْ بِاللهِ، وَلَا تَعْجِزْ، وَاِنْ اَصَابَكَ شَيْءٌ فَلَا تَقُلْ: لَوْ اَنِّىْ فَعَلْتُ كَانَ كَذَا وَكَذَا، وَلٰكِنْ قُلْ: قَدَرُ اللهِ، وَمَا شَاءَ فَعَلَ، فَاِنَّ لَوْ تَفْتَحُ عَمَلَ الشَّيْطَانِ. رواه مسلم، باب الإيمان بالقدر......، رقم: ٦٧٧٤

124. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ताक़तवर मोमिन कमज़ोर मोमिन से बेहतर और अल्लाह तआ़ला को ज़्यादा महबूब है और यूं हर मोमिन में भलाई है। (याद रखो) जो चीज़ तुम को नफ़ा दे उसकी हिर्स करो और उसमें अल्लाह तआ़ला की ज़ात से मदद तलब किया करो और हिम्मत न हारो और अगर तुम्हें कोई नुक़सान पहुंच जाए, तो यह न कहो, अगर मैं ऐसा कर लेता तो ऐसा और ऐसा हो जाता, अलबत्ता यह कहो कि अल्लाह तआ़ला की तक़दीर यूं ही थी और उन्होंने जो चाहा किया, क्योंकि ''अगर'' (का लफ़्ज़) शैतान के काम का दरवाज़ा खोल देता है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : इंसान का यूं कहना *''अगर मैं ऐसा कर लेता तो ऐसा और ऐसा हो जाता''* उस वक़्त मना है जब कि उसका इस्तेमाल किसी ऐसे जुम्ले में हो जिसका मक़सद तक़दीर के साथ मुक़ाबला हो और अपनी तदबीर पर ही एतमाद हो और यह अ़क़ीदा हो कि तक़दीर कोई चीज़ नहीं क्योंकि इस सूरत में शैतान को तक़दीर पर यक़ीन हटाने का मौक़ा मिल जाता है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿125﴾ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلَا وَاِنَّ الرُّوْحَ الْاَمِيْنَ نَفَثَ فِىْ رُوْعِى اَنَّهُ لَيْسَ مِنْ نَفْسٍ تَمُوْتُ حَتّٰى تَسْتَوْفِىَ رِزْقَهَا، فَاتَّقُوا اللهَ وَاَجْمِلُوْا فِي الطَّلَبِ وَلَا يَحْمِلَنَّكُمْ اِسْتِبْطَاءُ الرِّزْقِ اَنْ تَطْلُبُوْا بِمَعَاصِى اللهِ فَاِنَّهُ لَا يُدْرَكُ مَا عِنْدَ اللهِ اِلَّا بِطَاعَتِهٖ.

(وهو طرف من الحديث) شرح السنة للبغوي ١٤/٣٠٥، قال المحشي: رجاله ثقات وهو مرسل

125. हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिबरील ﷺ ने (अल्लाह तआ़ला के हुक्म से) मेरे दिल में यह बात डाली है कि जब तक कोई शख़्स अपना (मुक़द्दर का) रिज़्क़ पूरा नहीं कर लेता वह हरगिज़ मर नहीं सकता, लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला से डरते रहो और रिज़्क़ हासिल करने में साफ़ सुथरे तरीक़े अख़्तियार करो, ऐसा न हो कि रिज़्क़ की ताख़ीर तुमको रिज़्क़ की तलाश में

अल्लाह तआला की नाफ़रमानी पर आमादा कर दे, क्योंकि तुम्हारा रिज़्क़ अल्लाह तआला के क़ब्ज़े में है और जो चीज़ उनके क़ब्ज़े में हो, वह सिर्फ़ उनकी फ़रमांबरदारी ही से हासिल की जा सकती है। (शरहुस्सुन्नः)

﴿126﴾ عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَضَى بَيْنَ رَجُلَيْنِ فَقَالَ الْمَقْضِيُّ عَلَيْهِ لَمَّا أَدْبَرَ: حَسْبِيَ اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّ اللهَ تَعَالَى يَلُوْمُ عَلَى الْعَجْزِ وَلٰكِنْ عَلَيْكَ بِالْكَيْسِ فَإِذَا غَلَبَكَ أَمْرٌ فَقُلْ حَسْبِيَ اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ.

رواه ابو داؤد، باب الرجل يحلف على حقه،رقم: ٣٦٢٧

126. हज़रत औफ़ बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने दो शख़्सों के दर्मियान फ़ैसला किया। जिसके ख़िलाफ़ फ़ैसला हुआ था जब वह वापस जाने लगा तो उसने (अफ़सोस के साथ) حَسْبِيَ اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ(अल्लाह तआला ही मेरे लिए काफ़ी हैं और वह बेहतरीन काम बनाने वाले हैं) कहा। यह सुनकर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला मुनासिब तदबीर न करने पर मलामत करते हैं, इसलिए हमेशा पहले अपने मामलात में समझदारी से काम लिया करो फिर उसके बाद भी अगर हालात नामुवाफ़िक़ हो जाएं तो حَسْبِيَ اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ पढ़ो (और इससे अपनी दिली तसल्ली कर लिया करो कि अल्लाह तआला की ज़ात ही मेरे लिए काफ़ी है और वही इन हालात में भी मेरे काम बनाएंगे)। (अबूदाऊद)

بسم الله الرحمن الرحيم

मौत के बाद पेश आने वाले हालात पर ईमान

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿يَآ أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللهِ شَدِيْدٌ﴾ [الحج: ١-٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : लोगो! अपने रब से डरो, यक़ीनन क़ियामत का ज़लज़ला बड़ा हौलनाक होगा। जिस दिन तुम इस ज़लज़ला को देखोगे तो यह हाल होगा कि तमाम दूध पिलाने वाली औरतें अपने दूध पीते बच्चे को दहशत की वजह से भूल जाएंगी और तमाम हामिला औरतें अपना हमल गिरा देंगी और लोग नशे की-सी हालत में दिखाई देंगे, हालांकि वे नशे में नहीं होंगे, बल्कि अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब है ही बहुत सख़्त (जिसकी वजह से वह मदहोश नज़र आएंगे)। (हज : 1-2)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿وَلَا يَسْئَلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۝ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ۭ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ ۢ بِبَنِيْهِ ۝ وَصَاحِبَتِهٖ وَأَخِيْهِ ۝ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ۝ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۝ كَلَّا﴾ [المعارج: ١٠-١٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : उस दिन यानी क़ियामत के दिन कोई दोस्त

किसी दोस्त को नहीं पूछेगा बावजूद इसके कि एक दूसरे को दिखा दिए जाएंगे, यानी एक दूसरे को देख रहे होंगे। उस रोज़ मुज्रिम इस बात की तमन्ना करेगा कि अ़ज़ाब से छूटने के लिए अपने बेटों को, बीवी को, भाई को और ख़ानदान को जिन में वह रहता था और तमाम अह्ले ज़मीन को अपने फ़िद्या में दे दे और यह फ़िद्या देकर अपने आपको छुड़ा ले। यह हरगिज़ नहीं होगा। (मआरिज : 10-15)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ط اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ○ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ج وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ﴾ (ابراهيم: ٤٢، ٤٣)

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जो कुछ ये ज़ालिम लोग कर रहे हैं उनसे अल्लाह तआ़ला को (फ़ौरी पकड़ न करने की वजह से) बे-ख़बर हरगिज़ न समझो, क्योंकि उनको अल्लाह तआ़ला ने सिर्फ़ उस दिन तक के लिए मोहलत दे रखी है जिस दिन हैबत से उनकी आँखें फटी की फटी रह जाएंगी और ये हिसाब की जगह की तरफ़ सर उठाए हुए दौड़े जा रहे होंगे और आंखों की ऐसी टकटकी बंधेगी कि आंख झपकेगी नहीं और उनके दिल बिल्कुल बदहवास होंगे। (इब्राहीम : 42-43)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ نِ الْحَقُّ ج فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ○ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهُ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ﴾ [الاعراف: ٨، ٩]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और उस दिन आ़माल का वज़न एक हक़ीक़त है। फिर जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा, तो वही कामयाब होगा और जिनका ईमान व आ़माल का पल्ला हल्का होगा तो यही लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान किया, इसलिए कि वे हमारी आयतों का इंकार करते थे। (आराफ़ : 8-9)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ج

وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۭ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ
شَكُوْرُ ۝ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا
فِيْهَا لُغُوْبٌ﴾ [فاطر:٣٣-٣٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (अच्छे अमल करने वालों के लिए) जन्नत में हमेशा रहने के बाग़ होंगे, जिसमें वे लोग दाख़िल होंगे और उनको सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और उनका लिबास रेशम का होगा और वे उन बाग़ों में दाख़िल होकर कहेंगे कि अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र है जिसने हमेशा-हमेशा के लिए हर क़िस्म का रंज व ग़म दूर किया। बेशक हमारे रब बड़े बख़्शने वाले और बड़े क़द्रदां हैं जिन्होंने हमें हमेशा रहने के मक़ाम में दाख़िल किया जहां न हमको कोई तकलीफ़ पहुंचती है, न ही किसी क़िस्म की थकावट पहुंचती है। (फ़ातिर : 33-35)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ۝ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ يَلْبَسُوْنَ مِنْ
سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ ۣ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ۝ يَدْعُوْنَ فِيْهَا
بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ۝ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰىهُمْ عَذَابَ
الْجَحِيْمِ ۝ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ﴾ [الدخان:٥١-٥٧]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : बेशक अल्लाह तआला से डरने वाले पुर अम्न मक़ाम में होंगे, यानी बाग़ों और नहरों में। वे लोग बारीक और मोटा रेशम पहने हुए एक दूसरे के आमने-सामने बैठे होंगे। ये सब बातें इसी तरह होंगी। और हम उनका निकाह, गोरी और बड़ी आंखों वाली हूरों से कर देंगे। वहां इत्मीनान से हर क़िस्म के मेवे मंगवा रहे होंगे। वहां सिवाए उस मौत के जो दुनिया में आ चुकी थी, दोबारा मौत का ज़ाइक़ा भी न चखेंगे और अल्लाह तआला उन डरने वालों को दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखेंगे। ये सब कुछ उनको आप के रब के फ़ज़्ल से मिला। बड़ी कामयाबी यही है।

(दुख़ान : 51-57)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ
بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝ يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ

مُسْتَطِيرًا ○ وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ○ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ
لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ○ إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا
قَمْطَرِيرًا ○ فَوَقَاهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً وَسُرُورًا ○ وَجَزَاهُم بِمَا
صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ○ مُّتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۖ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا
زَمْهَرِيرًا ○ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ○ وَيُطَافُ عَلَيْهِم بِآنِيَةٍ
مِّن فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرَا ○ قَوَارِيرَ مِن فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ○ وَيُسْقَوْنَ
فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنجَبِيلًا ○ عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلْسَبِيلًا ○ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ
وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۚ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ○ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ
نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ○ عَالِيَهُمْ ثِيَابُ سُندُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ ۖ وَحُلُّوا أَسَاوِرَ مِن
فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ○ إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُم
مَّشْكُورًا ﴾ [الدهر: ٥-٢٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : बेशक नेक लोग ऐसे प्यालों में शराब पीएंगे जिस में काफ़ूर मिला हुआ होगा। वे एक चश्मा है जिससे अल्लाह तआ़ला के ख़ास बन्दे पिएंगे और इस चश्मे को, वह ख़ास बन्दे जहां चाहेंगे बहा कर ले जाएंगे। ये वह लोग हैं जो ज़रूरी आमाल को ख़ुलूस से पूरा करते हैं और वे ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी सख़्ती का असर कम व बेश हर किसी पर होगा और वह अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में, ग़रीब, यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं और वे यूं कहते हैं कि हम तो तुम को महज़ अल्लाह तआ़ला की रज़ामंदी के लिए खाना खिलाते हैं। हम तुम से न किसी बदले के ख़्वाहिशमंद हैं और न 'शुक्रिया' के, और हम अपने रब से उस दिन का ख़ौफ़ करते हैं जो दिन निहायत तल्ख़ और निहायत सख़्त होगा। तो अल्लाह तआ़ला उनको इस इताअ़त और इख़्लास की बरकत से उस दिन की सख़्ती से बचा लेंगे और उनको ताज़गी और ख़ुशी अ़ता फ़रमाएंगे और उन लोगों को उनकी दीन में पुख़्तगी के बदले में जन्नत और रेशमी लिबास अ़ता फ़रमाएंगे। वे वहां इस हालत में होंगे कि जन्नत में तख़्त पर तकिये लगाए बैठे होंगे और जन्नत में न धूप की तपिश पाएंगे और न सख़्त सर्दी (बल्कि फ़रहतबख़्श मोतदिल मौसम होगा) और जन्नत के दरख़्तों के साए उन लोगों पर झुके हुए होंगे और उनके फल उनके अख़्तियार में कर दिए जाएंगे यानी

हर वक़्त बिला मशक़्क़त फल ले सकेंगे और उन पर चांदी के बरतन और शीशे के प्यालों का दौर चल रहा होगा और शीशे भी चांदी के होंगे यानी साफ़ शफ़्फ़ाफ़ होंगे, जिनको भरनेवालों ने मुनासिब अन्दाज़ से भरा होगा और उनको वहां ऐसी शराब भी पिलाई जाएगी, जिसमें ख़ुश्क अदरक की मिलावट होगी, जिसके चश्मे का नाम जन्नत में *सलसबील* मशहूर होगा और उनके पास ये चीज़ें लेकर ऐसे लड़के आना जाना करेंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे और वह लड़के इस क़द्र हसीन होंगे कि तुम उनको बिखरे हुए मोती समझोगे और जब तुम वहां देखोगे तो बकसरत नेमतें और बड़ी-बड़ी सल्तनत देखोगे। और उन अहले जन्नत पर सब्ज़ रंग के बारीक और मोटे रेशम के लिबास होंगे और उनको चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे। उन्हें उनके रब ख़ुद निहायत पाकीज़ा शराब पिलाएंगे। अह्ले जन्नत से कहा जाएगा कि ये सब नेमतें तुम्हारे नेक आमाल का सिला हैं और तुम्हारी मेहनत व कोशिश मक़बूल हुई। (दह्र : 5-22)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ لا مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۝ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۝
وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۝ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۝ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۝ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۝ لَّا مَقْطُوْعَةٍ
وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۝ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ۝ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ۝ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۝ عُرُبًا
اَتْرَابًا ۝ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ﴾

[الواقعة:٢٧-٤٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और दाहिने हाथ वाले, क्या ही अच्छे हैं दाहिने वाले (मुराद वे लोग हैं जिनको आमालनामा दाएं हाथ में दिया जाएगा और उनके लिए जन्नत का फ़ैसला होगा)। वे लोग ऐसे बाग़ात में होंगे जिनमें बग़ैर कांटे की बैरियां होंगी और उस बाग़ के दरख़्तों में तह-ब-तह केले लगे होंगे, और उन बाग़ों में साए फैले होंगे और बहता हुआ पानी होगा और कसरत से मेवे होंगे, जिनकी न कभी फ़सल ख़त्म होगी और न उनके खाने में कोई रोक-टोक होगी और उन बाग़ों में ऊंचे-ऊंचे बिछौने होंगे। हमने वहां की औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है कि वे हमेशा कुंवारी रहेंगी, ख़ाविन्दों की महबूबा और अह्ले जन्नत की हम उम्र होंगी। ये सब नेमतें दाहिने वालों के लिए हैं और उनकी एक बड़ी जमाअत तो पहले लोगों में से होगी और एक बड़ी जमाअत पिछले लोगों में से होगी। (वाक़िआ: 27-40)

फ़ायदा : पहले लोगों से मुराद पिछली उम्मतों के लोग और पिछले लोगों से मुराद इस उम्मत के लोग हैं। (ब्यानुल क़ुरआन)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِيٓ أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ۝ نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ﴾ [حم السجدة: ٣١، ٣٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और जन्नत में तुम्हारे लिए हर वह चीज़ मौजूद होगी जिसका तुम्हारा दिल चाहेगा और जो तुम वहां मांगोगे, मिलेगा। यह सब कुछ उस ज़ात की तरफ़ से मेहमानी के तौर पर होगा, जो बहुत बख़्शने वाले, निहायत मेहरबान हैं। (हामीम सज्दा : 31-32)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَإِنَّ لِلطَّٰغِينَ لَشَرَّ مَـَٔابٍ ۝ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ هَٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ۝ وَءَاخَرُ مِن شَكْلِهِۦٓ أَزْوَٰجٌ﴾ [ص: ٥٥-٥٨]

अल्लाह ताआला का इर्शाद है : और बेशक सरकशों के लिए बहुत ही बुरा ठिकाना है, यानी दोज़ख़ जिसमें वे गिरेंगे। वह कैसी बुरी जगह है। यह खौलता हुआ पानी और पीप (मौजूद) है, ये लोग उसको चखें और इसके अलावा और भी इस क़िस्म की मुख़्तलिफ़ नागवार चीजें हैं (उसको भी चखें)। (साद : 55-58)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿انطَلِقُوٓا۟ إِلَىٰ مَا كُنتُم بِهِۦ تُكَذِّبُونَ ۝ انطَلِقُوٓا۟ إِلَىٰ ظِلٍّ ذِى ثَلَٰثِ شُعَبٍ ۝ لَّا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِى مِنَ اللَّهَبِ ۝ إِنَّهَا تَرْمِى بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۝ كَأَنَّهُۥ جِمَٰلَتٌ صُفْرٌ﴾ [المرسلات: ٢٩-٣٣]

अल्लाह तआला दोज़ख़ियों से फ़रमाएंगे, चलो उस अज़ाब की तरफ़, जिसको तुम झुठलाते थे। तुम धुएं के ऐसे साए की तरफ़ चलो, जो बुलन्द हो कर फट कर तीन हिस्सों में हो जाएगा, जिसमें न साया है, न वह आग की तपिश से बचाता है। वह आग ऐसे अंगारे बरसाएगी जैसे बड़े महल, गोया वह काले ऊंट हों, यानी जब वे अंगारे ऊपर को उठेंगे तो महलनुमा मालूम होंगे और जब नीचे आ गिरेंगे, तो ऊंट के मिस्ल मालूम होंगे। (मुरसलात : 29-33)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿لَهُم مِّن فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۚ ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهُ بِهِۦ عِبَادَهُۥ ۚ يَٰعِبَادِ فَاتَّقُونِ﴾ [الزمر: ١٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : उन दोज़ख़ियों को आग ऊपर से भी घेरे में लिए हुए होगी और नीचे से भी घेरे हुए होगी। यही वह अ़ज़ाब है जिससे अल्लाह तआला अपने बन्दों को डराते हैं। ऐ मेरे बन्दो! मुझ से डरते रहो। (ज़ुमर : 16)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ○ طَعَامُ الْاَثِيْمِ○ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ○ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ○ خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيْمِ○ ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ○ ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ○ اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ﴾

[الدخان: ٤٣-٥٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : बेशक दोज़ख़ में बड़े गुनाहगारों के लिए ज़क़्क़ूम का दरख़्त ख़ुराक है और वह सूरत में काले तेल की तलछट की तरह होगा जो पेट में ऐसा जोश मारेगा जैसे खौलता हुआ गरम पानी और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि इस मुज्रिम को पकड़ो और घसीटते हुए दोज़ख़ के बीचों बीच धकेल दो और उसके सर पर तकलीफ़ देने वाला गरम पानी छोड़ दो (और तमस्सख़ुर करते हुए कहा जाएगा) ले चख ले। तू बड़ा बाइज़्ज़त व मुकर्रम है, यानी तू दुनिया में बड़ा इज़्ज़त वाला समझा जाता था, इसलिए मेरे हुक्मों पर चलने में शरम महसूस करता था, अब यह तेरी ताज़ीम हो रही है) और ये तमाम वही चीज़ हैं जिसमें तुम शक करके इन्कार कर देते थे। (दुख़ान : 43-50)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿مِنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ○ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ﴾

[ابراهيم: ١٦-١٧]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (और सरकश शख़्स) अब उसके आगे दोज़ख़ है और उसको पीप का पानी पिलाया जाएगा जिसको (सख़्त प्यास की वजह से) घूंट-घूंट कर पिएगा (लेकिन सख़्त गर्म होने की वजह से) आसानी के साथ हलक़ से नीचे न उतार सकेगा और उसको हर तरफ़ से मौत आती मालूम होगी और वह किसी तरह मरेगा नहीं (बल्कि इसी तरह सिसकता रहेगा) और इस अ़ज़ाब के अलावा और भी सख़्त अ़ज़ाब होता रहेगा। (इब्राहीम : 16-17)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿127﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ اَبُوْبَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَدْ شِبْتَ قَالَ: شَيَّبَتْنِيْ هُوْدٌ وَالْوَاقِعَةُ وَالْمُرْسَلاَتُ وَعَمَّ يَتَسَاءَ لُوْنَ وَاِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ومن سورة الواقعة، رقم: ٣٢٩٧

127. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ रिवायत करते हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ؓ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप पर बुढ़ापा आ गया? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे सूरः हूद, सूरः वाक़िआः, सूरः मुरसलात, सूरः अ़म-म य-त-साअलून और सूरः इज़श्शम्सु कुव्विरत ने बूढ़ा कर दिया। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : बूढ़ा इसलिए कर दिया कि इन सूरतों में क़ियामत और आख़िरत और मुजि़रमों पर अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब का बड़ा हौलनाक ब्यान है।

﴿128﴾ عَنْ خَالِدِ بْنِ عُمَيْرٍ الْعَدَوِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَنَا عُتْبَةُ بْنُ غَزْوَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، فَحَمِدَ اللهَ وَاَثْنٰى عَلَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: اَمَّا بَعْدُ، فَاِنَّ الدُّنْيَا قَدْ آذَنَتْ بِصُرْمٍ، وَوَلَّتْ حَذَّاءَ، وَلَمْ يَبْقَ مِنْهَا اِلَّا صُبَابَةٌ كَصُبَابَةِ الْاِنَاءِ يَتَصَابُّهَا صَاحِبُهَا، وَاِنَّكُمْ مُنْتَقِلُوْنَ مِنْهَا اِلٰى دَارٍ لَا زَوَالَ لَهَا، فَانْتَقِلُوْا بِخَيْرِ مَا بِحَضْرَتِكُمْ، فَاِنَّهُ قَدْ ذُكِرَ لَنَا اَنَّ الْحَجَرَ يُلْقٰى مِنْ شَفَةِ جَهَنَّمَ فَيَهْوِيْ فِيْهَا سَبْعِيْنَ عَامًا، لَا يُدْرِكُ لَهَا قَعْرًا، وَوَاللهِ لَتُمْلَأَنَّ، اَفَعَجِبْتُمْ؟ وَلَقَدْ ذُكِرَ لَنَا اَنَّ مَا بَيْنَ مِصْرَاعَيْنِ مِنْ مَصَارِيْعِ الْجَنَّةِ مَسِيْرَةُ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً، وَلَيَأْتِيَنَّ عَلَيْهَا يَوْمٌ وَهُوَ كَظِيْظٌ مِنَ الزِّحَامِ، وَلَقَدْ رَاَيْتُنِيْ سَابِعَ سَبْعَةٍ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، مَا لَنَا طَعَامٌ اِلَّا وَرَقُ الشَّجَرِ، حَتّٰى قَرِحَتْ اَشْدَاقُنَا، فَالْتَقَطْتُ بُرْدَةً فَشَقَقْتُهَا بَيْنِيْ وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ مَالِكٍ، فَاتَّزَرْتُ بِنِصْفِهَا، وَاتَّزَرَ سَعْدٌ بِنِصْفِهَا، فَمَا اَصْبَحَ الْيَوْمَ مِنَّا اَحَدٌ اِلَّا اَصْبَحَ اَمِيْرًا عَلٰى مِصْرٍ مِنَ الْاَمْصَارِ، وَاِنِّيْ اَعُوْذُ بِاللهِ اَنْ اَكُوْنَ فِيْ نَفْسِيْ عَظِيْمًا وَعِنْدَ اللهِ صَغِيْرًا، وَاِنَّهَا لَمْ تَكُنْ نُبُوَّةٌ قَطُّ اِلَّا تَنَاسَخَتْ، حَتّٰى تَكُوْنَ آخِرُ عَاقِبَتِهَا مُلْكًا، فَسَتَخْبُرُوْنَ وَتُجَرِّبُوْنَ الْاُمَرَاءَ بَعْدَنَا.

رواه مسلم، باب الدنيا سجن للمؤمن وجنة للكافر، رقم: ٧٤٣٥

128. हज़रत ख़ालिद बिन उमैर अ़दवी ؓ रिवायत करते हैं कि हज़रत उत्बा बिन ग़ज़्वान ؓ ने हम लोगों से ब्यान किया। पहले उन्होंने अल्लाह तआ़ला की हम्द व

सना ब्यान की, फिर फ़रमाया : बिला शुब्हा दुनिया ने अपने ख़त्म होने का एलान कर दिया और पीठ फेरकर तेज़ी से जा रही हैं और दुनिया में से थोड़ा-सा हिस्सा बाक़ी रह गया है, जैसा कि बर्तन में पीने की चीज़ थोड़ी-सी रह जाती है और आदमी उसे चूस लेता है। तुम दुनिया से मुंतक़िल होकर ऐसे घर की तरफ़ जाओगे जो कभी ख़त्म नहीं होगा, इसलिए जो सबसे अच्छी चीज़ (नेक आमाल) तुम्हारे पास हैं उसे लेकर तुम इस घर की तरफ़ जाओ। हमें यह बताया गया है कि जहन्नम के किनारे से एक पत्थर फेंका जाएगा जो सत्तर साल तक जहन्नम में गिरता रहेगा, लेकिन फिर भी गहराई तक नहीं पहुंच सकेगा। अल्लाह तआला की क़सम! यह जहन्नम भी एक दिन इंसानों से भर जाएगी, क्या तुम्हें इस बात पर हैरत है? और हमें यह भी बताया गया है कि जन्नत के दरवाज़े दो पाटों के दर्मियान चालीस साल का फ़ासला है, लेकिन एक दिन ऐसा आएगा कि जन्नतियों के हुजूम की वजह से इतना चौड़ा दरवाज़ा भी भरा हुआ होगा। मैंने वह ज़माना भी देखा है कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सात आदमी थे, मैं भी उनमें शामिल था। हमें खाने को सिर्फ़ दरख़्त के पत्ते मिलते थे जिन्हें मुसलसल खाने की वजह से हमारे जबड़े भी ज़ख़्मी हो गए थे। मुझे एक चादर मिल गई तो मैंने उसके दो टुकड़े किए, आधे की मैंने लुंगी बना ली और आधे की साद बिन मालिक ने लुंगी बना ली। आज हम में से हर एक किसी न किसी शहर का गवर्नर बना हुआ है। मैं इस बात से अल्लाह तआला की पनाह चाहता हूं कि मैं अपनी निगाह में तो बड़ा बनूं और अल्लाह तआला की निगाह में छोटा रहूं। नुबुव्वत का तरीक़ा ख़त्म होता जा रहा है और इसकी जगह बादशाहत ने ले ली है। हमारे बाद तुम दूसरे गवर्नरों का तजुर्बा कर लोगे। (मुस्लिम)

﴿129﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ كُلَّمَا كَانَ لَيْلَتُهَا مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ يَخْرُجُ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ إِلَى الْبَقِيْعِ فَيَقُوْلُ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِيْنَ، وَأَتَاكُمْ مَاتُوْعَدُوْنَ غَدًا مُؤَجَّلُوْنَ، وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ، اَللّٰهُمَّ! اغْفِرْ لِأَهْلِ بَقِيْعِ الْغَرْقَدِ.

رواه مسلم، باب ما يقال عند دخول القبور.....رقم: ٢٢٥٥

129. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि जब भी रसूलुल्लाह ﷺ की मेरे हां बारी होती और रात को तशरीफ़ लाते तो आप ﷺ रात के आख़िरी हिस्से में बक़ीअ़ (क़ब्रिस्तान) तशरीफ़ ले जाते और इर्शाद फ़रमाते :

तर्जुमा : ऐ मुसलमान बस्ती वालो! अस्सलामु अ़लैकुम, तुम पर वह कल आ गई

जिसमें तुम्हें मरने की ख़बर दी गई थी और इंशाअल्लाह हम भी तुम से मिलने वाले हैं। ऐ अल्लाह! बक़ीअ् वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए। (मुस्लिम)

﴿130﴾ عَنْ مُسْتَوْرِدِ بْنِ شَدَّادٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَ اللهِ مَا الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مِثْلُ مَا يَجْعَلُ أَحَدُكُمْ إِصْبَعَهُ هٰذِهِ فِي الْيَمِّ، فَلْيَنْظُرْ أَحَدُكُمْ بِمَ تَرْجِعُ؟

رواه مسلم، باب فناء الدنيا.....، رقم: ٧١٩٧

130. हज़रत मुसतौरिद बिन शद्दाद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला की क़सम! दुनिया की मिसाल आख़िरत के मुक़ाबले में ऐसी है, जैसे तुम में से कोई शख़्स अपनी उंगली दरिया में डालकर निकाले, फिर देखे कि पानी की कितनी मिक़्दार उंगली पर लगी हुई है, यानी जिस तरह उंगली पर लगा हुआ पानी दरिया के मुक़ाबले में बहुत थोड़ा है, ऐसे ही दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत थोड़ी है। (मुस्लिम)

﴿131﴾ عَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ، وَالْعَاجِزُ مَنْ أَتْبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهَا وَتَمَنَّى عَلَى اللهِ.

رواه الترمذي وقال هذا حديث حسن، باب حديث الكيس من دان نفسه ...، رقم: ٢٤٥٩

131. हज़रत शद्दाद बिन औस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : समझदार आदमी वह है जो अपने नफ़्स का मुहासबा करता रहे और मौत के बाद के लिए अमल करे और नासमझ आदमी वह है जो नफ़्स की ख़्वाहिशों पर चले और अल्लाह तआला से उम्मीदें रखे (कि अल्लाह तआला बड़े माफ़ फ़रमाने वाले हैं)। (तिर्मिज़ी)

﴿132﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَاشِرَ عَشَرَةٍ فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللهِ! مَنْ أَكْيَسُ النَّاسِ، وَأَحْزَمُ النَّاسِ؟ قَالَ: أَكْثَرُهُمْ ذِكْرًا لِلْمَوْتِ، وَأَكْثَرُهُمْ اِسْتِعْدَادًا لِلْمَوْتِ قَبْلَ نُزُوْلِ الْمَوْتِ، أُولٰئِكَ هُمُ الْأَكْيَاسُ، ذَهَبُوْا بِشَرَفِ الدُّنْيَا وَكَرَامَةِ الْآخِرَةِ.

رواه ابن ماجه باختصار، رواه الطبراني في الصغير وإسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/٥٥٦

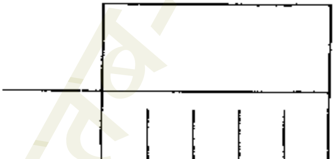
132. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि मैं दस आदमियों की एक जमाअत के साथ हाज़िर हुआ। अंसार में से एक साहिब ने खड़े होकर अर्ज़

किया : अल्लाह के नबी ﷺ! लोगों में सबसे ज़्यादा समझदार और मुहतात आदमी कौन है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सबसे ज़्यादा मौत को याद करने वाला हो और मौत के आने से पहले सबसे ज़्यादा मौत की तैयारी करने वाला हो (जो लोग ऐसा करें वही समझदार हैं)। यही लोग हैं जिन्होंने दुनिया की शराफ़त और आख़िरत की इज़्ज़त हासिल कर ली। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿133﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَّ النَّبِيُّ ﷺ خَطًّا مُرَبَّعًا، وَخَطَّ خَطًّا فِي الْوَسَطِ خَارِجًا مِنْهُ، وَخَطَّ خُطَطًا صِغَارًا إِلَى هٰذَا الَّذِي فِي الْوَسَطِ مِنْ جَانِبِهِ الَّذِي فِي الْوَسَطِ، فَقَالَ: هٰذَا الْإِنْسَانُ، وَهٰذَا أَجَلُهُ مُحِيطٌ بِهِ- أَوْ قَدْ أَحَاطَ بِهِ- وَهٰذَا الَّذِي هُوَ خَارِجٌ أَمَلُهُ، وَهٰذِهِ الْخُطَطُ الصِّغَارُ الْأَعْرَاضُ، فَإِنْ أَخْطَأَهُ هٰذَا نَهَشَهُ هٰذَا، وَإِنْ أَخْطَأَهُ هٰذَا نَهَشَهُ هٰذَا.

رواه البخاري، باب في الامل وطوله، رقم: ٦٤١٧

133. हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने मुरब्बअ् (चार लकीरों वाली) शक्ल बनाई। फिर इस मुरब्बअ् शक्ल में एक दूसरी लकीर खींची, जो इस मुरब्बअ् से बाहर निकल गई। फिर उस मुरब्बअ् शक्ल के अन्दर छोटी-छोटी लकीरें बनाई जिसकी सूरत उलमा ने मुख़्तलिफ़ लिखी हैं जिनमें से एक यह है।



इसके बाद नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह दर्मियानी लकीर तो आदमी है और जो (मुरब्बअ् यानी चतुर्भुज वाली लकीर है) उसको चारों तरफ़ से घेर रही है वह उसकी मौत है कि आदमी उससे निकल ही नहीं सकता, जो लकीर बाहर निकल रही है वे उसकी उम्मीदें हैं कि वे उसकी ज़िन्दगी से भी आगे हैं और ये छोटी-छोटी लकीरें उसकी बीमारियां और हादसे हैं। हर छोटी लकीर एक आफ़त है अगर एक से बच जाए तो दूसरी पकड़ लेती है और अगर उससे जान छूट जाए तो कोई दूसरी आफ़त आ पकड़ती है।

(बुख़ारी)

﴿134﴾ عَنْ مَحْمُوْدِ بْنِ لَبِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اِثْنَتَانِ يَكْرَهُهُمَا ابْنُ آدَمَ الْمَوْتُ، وَالْمَوْتُ خَيْرٌ مِنَ الْفِتْنَةِ وَيَكْرَهُ قِلَّةَ الْمَالِ، وَقِلَّةُ الْمَالِ أَقَلُّ لِلْحِسَابِ.

رواه احمد باسنادين ورجال احدهما رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٢٥٤

134. हज़रत महमूद बिन लबीद ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि दो चीज़ें ऐसी हैं जिनको आदमी पसन्द नहीं करता। (पहली चीज़) मौत है, हालांकि मौत उसके लिए फ़ित्ना से बेहतर है यानी मरने की वजह से आदमी दीन को नुक़सान पहुंचाने वाले फ़ित्नों से महफ़ूज़ हो जाता है और (दूसरी चीज़) माल का कम होना है, जिसको आदमी पसन्द नहीं करता, हालांकि माल की कमी आख़िरत के हिसाब को बहुत कम करने वाली है। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿135﴾ عَنْ أَبِيْ سَلْمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ لَقِيَ اللهَ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ وَآمَنَ بِالْبَعْثِ وَالْحِسَابِ دَخَلَ الْجَنَّةَ.

ذكر الحافظ ابن كثير هذا الحديث بطوله في البداية والنهاية ٥/٢٠٤

135. हज़रत अबू सलमा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिले कि वह इस बात की गवाही देता हो कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और हज़रत मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं, (और इस हाल में मिले कि) मरने के बाद दोबारा उठाए जाने और हिसाब व किताब के होने पर ईमान लाया हो वह जन्नत में दाख़िल होगा। (अलबिदाया वन्निहाया)

﴿136﴾ عَنْ أُمِّ الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ لِأَبِي الدَّرْدَاءِ: أَلَا تَبْتَغِيْ لِأَضْيَافِكَ مَا يَبْتَغِي الرِّجَالُ لِأَضْيَافِهِمْ فَقَالَ: إِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ أَمَامَكُمْ عَقَبَةً كَؤُوْدًا لَا يُجَاوِزُهَا الْمُثْقِلُوْنَ فَأُحِبُّ أَنْ أَتَخَفَّفَ لِتِلْكَ الْعَقَبَةِ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٧/٣٠٩

136. हज़रत उम्मे दरदा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं ने अबुद्दर्दा से अर्ज़ किया कि आप और लोगों की तरह अपने मेहमानों की मेहमाननवाज़ी करने के लिए माल क्यों नहीं कमाते? उन्होंने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि तुम्हारे सामने एक मुश्किल घाटी है उसपर ज़्यादा बोझ वाले आसानी से न गुज़र सकेंगे, इसलिए मैं चाहता हूं कि उस घाटी से गुज़रने के लिए हल्का-फुल्का रहूं। (बैहक़ी)

﴿137﴾ عَنْ هَانِئٍ مَوْلَى عُثْمَانَ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّهُ قَالَ: كَانَ عُثْمَانُ اِذَا وَقَفَ عَلَى قَبْرٍ بَكَى حَتَّى يَبُلَّ لِحْيَتَهُ، فَقِيْلَ لَهُ تُذْكَرُ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ فَلَا تَبْكِيْ وَتَبْكِيْ مِنْ هٰذَا؟ فَقَالَ: اِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الْقَبْرَ اَوَّلُ مَنْزِلٍ مِنْ مَنَازِلِ الْآخِرَةِ فَاِنْ نَجَا مِنْهُ فَمَا بَعْدَهُ اَيْسَرُ مِنْهُ، وَاِنْ لَمْ يَنْجُ مِنْهُ فَمَا بَعْدَهُ اَشَدُّ مِنْهُ قَالَ: وَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَارَاَيْتُ مَنْظَرًا قَطُّ اِلَّا وَالْقَبْرُ اَفْظَعُ مِنْهُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء في فظاعة القبر...، رقم: ٢٣٠٨

37. हज़रत उस्मान ﷺ के आज़ाद करदा गुलाम हज़रत हानी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान ﷺ जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो बहुत रोते, हां तक कि आंसुओं से अपनी दाढ़ी को तर कर देते। उनसे अ़र्ज़ किया गया (यह .या बात है) कि आप जन्नत व दोज़ख़ के तज़्किरे पर नहीं रोते और क़ब्र को देखकर इस क़दर रोते हैं? आप ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद है : क़ब्र आख़िरत ो मंज़िलों में से पहली मंज़िल है, अगर बन्दा इससे नजात पा गया तो आगे की मंज़िलें इससे ज़्यादा आसान हैं, और अगर इस मंज़िल से नजात न पा सका तो बाद ी मंज़िलें उससे ज़्यादा सख़्त हैं, (नीज़) रसूलुल्लाह ﷺ ने यह इर्शाद फ़रमाया : मैंने ..ई मंज़र क़ब्र के मंज़र से ज़्यादा ख़ौफ़नाक नहीं देखा। (तिर्मिज़ी)

﴿138﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ اِذَا فَرَغَ مِنْ دَفْنِ الْمَيِّتِ وَقَفَ عَلَيْهِ فَقَالَ: اِسْتَغْفِرُوْا لِاَخِيْكُمْ وَاسْاَلُوْا لَهُ بِالتَّثْبِيْتِ فَاِنَّهُ الْآنَ يُسْاَلُ.

رواه ابوداؤد، باب الاستغفار عند القبر...، رقم: ٣٢٢١

138. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब मैयित ो दफ़न से फ़ारिग़ हो जाते, तो क़ब्र के पास खड़े होते और इर्शाद फ़रमाते कि अपने ..ई के लिए अल्लाह तआ़ला से मग़्फ़िरत की दुआ़ करो, और यह मांगो कि अल्लाह तआ़ला उसको (सवालों के जवाब देने में) साबित क़दम रखें, क्योंकि इस वक़्त उससे पू..गछ हो रही है। (अबूदाऊद)

﴿139﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مُصَلَّاهُ فَرَاٰى نَاسًا كَاَنَّهُمْ يَكْتَشِرُوْنَ قَالَ: اَمَا اِنَّكُمْ لَوْ اَكْثَرْتُمْ ذِكْرَ هَادِمِ اللَّذَّاتِ لَشَغَلَكُمْ عَمَّا اَرَى الْمَوْتِ فَاَكْثِرُوْا مِنْ ذِكْرِ هَادِمِ اللَّذَّاتِ الْمَوْتِ، فَاِنَّهُ لَمْ يَاْتِ عَلَى الْقَبْرِ يَوْمٌ اِلَّا تَكَلَّمَ فَيَقُوْلُ: اَنَا بَيْتُ الْغُرْبَةِ، وَاَنَا بَيْتُ الْوَحْدَةِ وَاَنَا بَيْتُ التُّرَابِ وَاَنَا بَيْتُ الدُّوْدِ، فَاِذَا دُفِنَ الْعَبْدُ الْمُؤْمِنُ

قَالَ لَهُ الْقَبْرُ: مَرْحَبًا وَأَهْلاً، أَمَّا أَنْ كُنْتَ لَأَحَبَّ مَنْ يَمْشِيْ عَلٰى ظَهْرِيْ إِلَيَّ فَإِذْ وُلِّيْتُكَ الْيَوْمَ وَصِرْتَ إِلَيَّ فَسَتَرٰى صَنِيْعِيْ بِكَ، قَالَ: فَيَتَّسِعُ لَهُ مَدَّ بَصَرِهٖ وَيُفْتَحُ لَهُ بَابٌ إِلَى الْجَنَّةِ، وَإِذَا دُفِنَ الْعَبْدُ الْفَاجِرُ أَوِ الْكَافِرُ قَالَ لَهُ الْقَبْرُ لَا مَرْحَبًا وَلَا أَهْلاً أَمَّا أَنْ كُنْتَ لَأَبْغَضَ مَنْ يَمْشِيْ عَلٰى ظَهْرِيْ إِلَيَّ فَإِذْ وُلِّيْتُكَ الْيَوْمَ وَصِرْتَ إِلَيَّ فَسَتَرٰى صَنِيْعِيْ بِكَ، قَالَ: فَيَلْتَئِمُ عَلَيْهِ حَتّٰى يَلْتَقِيَ عَلَيْهِ وَتَخْتَلِفَ أَضْلَاعُهُ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ بِأَصَابِعِهٖ فَأَدْخَلَ بَعْضَهَا فِيْ جَوْفِ بَعْضٍ قَالَ: وَيُقَيِّضُ اللّٰهُ لَهُ سَبْعِيْنَ تِنِّيْنًا لَوْ أَنَّ وَاحِدًا مِنْهَا نَفَخَ فِي الْأَرْضِ مَا أَنْبَتَتْ شَيْئًا مَا بَقِيَتِ الدُّنْيَا، فَيَنْهَشْنَهُ وَيَخْدِشْنَهُ حَتّٰى يُفْضٰى بِهٖ إِلَى الْحِسَابِ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: إِنَّمَا الْقَبْرُ رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ، أَوْ حُفْرَةٌ مِنْ حُفَرِ النَّارِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب حديث أكثروا ذكر هاذم اللذات، رقم: ٢٤٦٠

139. हज़रत अबू सईद ؓ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ के लिए मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने देखा कि बाज़ लोगों के दांत हंसी की वजह से खिल रहे थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ मौत को कसरत से याद किया करो, तो तुम्हारी यह हालत न हो जो मैं देख रहा हूं, लिहाज़ा लज़्ज़तें ख़त्म करने वाली चीज़ मौत को कसरत से याद किया करो, क्योंकि क़ब्र पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता जिसमें वह यह आवाज़ न देती हो कि मैं परदेस का घर हूं, मैं तन्हाई का घर हूं, मैं मिट्टी का घर हूं, मैं कीड़ों का घर हूं। जब मोमिन बन्दा दफ़न किया जाता है तो क़ब्र उससे कहती है, तुम्हारा आना मुबारक है, बहुत अच्छा किया जो तुम आ गए। जितने लोग मेरी पीठ पर चलते थे मुझे तुम उन सब में ज़्यादा पसन्द थे। आज जब तुम मेरे सुपुर्द किए ग हो और मेरे पास आए हो तो मेरे बेहतरीन सुलूक को भी देखोगे। इसके बाद क़ब्र जहां तक मुर्दे की नज़र पहुंच सके वहां तक कुशादा हो जाती है और इसके लिए एक दरवाज़ा जन्नत की तरफ़ खोल दिया जाता है और जब कोई गुनहगार या काफ़िर क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र कहती है तेरा आना नामुबारक है, बहुत बुरा किया जो तू आया। जितने लोग मेरी पीठ पर चलते थे उन सब में तुझ ही से मुझे ज़्यादा नफ़रत थी। आज जब तू मेरे हवाले हुआ और मेरे पास आया है तो मेरे बुरे सुलूक को भी देख लेगा। इसके बाद क़ब्र उसे इस तरह दबाती है कि पसलियां आपस में एक दूसरे में घुस जाती हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने एक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ में डालकर बताया कि इस तरह एक जानिब की पसलियां दूसरी जानिब में घुस जाती हैं और अल्लाह तआला उस पर सत्तर अज़दहे ऐसे मुसल्लत कर देते हैं कि अगर